दृष्टाः (१) भवन्ति स्वप्नाः। (ष) सर्व्वथा नचिरेणैव (२) मान्धातारमिव धौरेयं राजर्षीणां (३) भुवनानन्दहेतुमात्मजं जनयिष्यति देवी। (स) शरत्कालकमलिनीव (४) अभिनवकमलोद्गमेन गन्धगजमाह्लादयिष्यति देवम्। (ह) येनेयं दिग्गजमदलेखेवाविच्छिन्नसन्ताना क्षितिभारधारणो-चिता भविष्यति कुलसन्ततिः स्वामिनः" इत्येवमभिदधानमेव तं करेण गृहीत्वा नरेन्द्रः प्रविश्याभ्यन्तरमुभाभ्यामपि ताभ्यां स्वप्नाभ्यां विलासवतीमानन्दयाञ्च-कार (५)। (ह)

कतिपयदिवसापगमे च देवताप्रसादात् सरसीमिव प्रतिमाशशी विवेश

(ष) अतएवाह सर्व्वथेति। देवी विलासवती, मान्धातारं युवनाश्वपुत्रं सूर्य्यवंशीयराजविशेषमिव, राजर्षीणां धौरेयं धुरन्धरं श्रेष्ठं। अत्रोपमालङ्कारः। नचिरेणेति "गमिकर्म्मीकृतनैकनीरता" इत्यादिवत् "नभ्राणादिषु नञ् प्रकृत्ये"ति नलोपाभावः। स्वप्नवृत्तान्तास्तु ब्रह्मवैवर्त्तमत्स्यपुराणादावनुसन्धेयाः।

(स) शरदिति। शरत्कालस्य कमलिनी पद्मिनी, अभिनवानां कमलानां पद्मानां उद्गमेन उत्-पादनेन गन्धगजं पूर्व्वोक्तलक्षणकं हस्तिश्रेष्ठमिव, देवी अभिनवायाः कमलाया लक्ष्म्याः पुत्रसम्पद इत्यर्थः, उद्गमेन उत्पादनेन देवं भवन्तं। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। उद्गमेनेति हेत्विन्नन्तादुद्गमधातोरल्।

(ह) येनेति। येन हेतुना, इयं उत्पत्स्यमाना, स्वामिनो भवतः कुलस्य वंशस्य सन्ततिः पुत्ररूपमपत्यं, दिग्गजस्य मदलेखा दानजलरेखेव अविच्छिन्नः विच्छेदमप्राप्तः सन्तानो वंशः प्रवाहश्च यस्याः सा तादृशी सती, क्षितिभारस्य धारणे उचिता योग्या समर्था। अत्रोपमालङ्कारः। तं शुकनासं। नरेन्द्रो राजा। अभ्यन्तरमन्तःपुरम्। स्वप्नाभ्यां स्वप्नद्वयवृत्तान्तकथनेनेत्यर्थः।

(क्ष) कतीति। प्रतिमाशशी प्रतिविम्बभूतश्चन्द्रः सरसीं सरोवरमिव, गर्भो विलासवतीं विलासवत्या

যে সকল স্বপ্ন দেখা যায়, তাহার ফল প্রায়ই সত্য হইয়া থাকে। (ষ) অতএব মহিষী বিলাসবতী, অচিরকালমধ্যেই নিশ্চয় মান্ধাতার ন্যায় রাজর্ষিদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ জগতের আনন্দের কারণ পুত্র জন্মাইবেন। (স) শরৎকালের পদ্মিনী যেমন নূতন, পদ্ম জন্মাইয়া গন্ধহস্তীকে আহ্লাদিত করে, সেইরূপ বিলাসবতীও নূতন পুত্রসম্পদ জন্মাইয়া আপনাকে আহ্লাদিত করিবেন। (হ) যেহেতু, দিক্‌হস্তীর মদজলরেখা যেমন অবিচ্ছিন্ন ধারায় বহিত হইতে থাকে, সেইরূপ আপনার এই পুত্রসন্তান অবিচ্ছিন্নভাবে বংশরক্ষা করিয়া পৃথিবীর ভার বহন করিতে সমর্থ হইবে," শুকনাস এইরূপ বলিতে লাগিলে, রাজা হস্তদ্বারা তাঁহার হস্ত ধারণ করিয়া অন্তঃপুরে প্রবেশ করিয়া সেই দুই স্বপ্নের বৃত্তান্ত বলিয়া বিলাসবতীকে আনন্দিত করিলেন।

(ক্ষ) তাহার পর কিছু দিন অতীত হইলে দেবতাদের অনুগ্রহে সরোবরমধ্যে চন্দ্রের

(१) समये दृष्टाः। (२) नचिरेण, अचिरेण। (३) सर्व्वराजर्षीणां। (४) शरत्कमलिनीव।
(५) विनोदयाञ्चकार।

गर्भो विलासवतीम्। (क) येन च नन्दनवनराजिरिव (१) पारिजातेन, मधुसूदनवक्षःस्थलीव कौस्तुभमणिना सा सुतरामराजत, (२) दर्पणश्रीरिव च (३) गर्भच्छलेन संक्रान्तमवनिपालप्रतिबिम्बमुवाह, शनैः शनैश्च (४) प्रतिदिन (५) उपचीयमानगर्भा (६) निर्भर-परिपीत-सागर-सलिल-भर-मन्थरेव मेघमाला मन्दं मन्दं सञ्चचार। (ख) मुहुर्मुहुरनुबद्धजृम्भिकं (७) आजिह्मित लोचनम् (८) सालसं निशश्वास (९)। (ग) तथावस्थाञ्च तामभिनन्दितपान

उदरमित्यर्थः। अत्रोपमालङ्कारः। प्रतिमाशशी विशति गर्भस्तु विवेश इति कालभेदादुपमागतो भग्नप्रक्रमता दोषः, स तु यथा प्रतिमाशशी सरसीं विशति तथा विवेश गर्भो विलासवतीमिति पाठेन समाधेयः। एव-मुत्तरत्रापि बोध्यम्।

(क) येनेति। येन च गर्भेण। सा विलासवती, सुतरां नितान्तं, अराजत अशोभत। अत्रोपमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। दर्पणश्रीर्मुकुरलक्ष्मीरिव। संक्रान्तं आत्मनि पतितं, अवनिपालस्य राज्ञः तारापीडस्य प्रतिबिम्बं प्रतिरूपं उवाह धारयामास "आत्मा वै जायते पुत्र" इति श्रुतेरिति भावः। अत्रो-पमापह्नुत्योरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। उपचीयमानो वर्द्धमानो गर्भो यस्याः सा। निर्भरमतिमात्रं परिपीतानां सागरसलिलानां भरेण भारेण, मन्थरा अलसा मेघमाला मेघश्रेणीव। अत्रोपमालङ्कारः।

(ख) मुहुरिति। अनुबद्धा कृता जृम्भिका जृम्भा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, आजिह्मिते ईषत् कुटिलीकृते निद्रावेशात् सङ्कुचिते लोचने नयनद्वयं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, अलसेन आलस्येन सहेति सालसं भावप्रधानोऽयं निर्देशः। निशश्वास निश्वासं त्यक्तवती। गर्भस्वभावोऽयम्।

(ग) तथेति। इङ्गितेषु आन्तरिकभावबोधकचेष्टितेषु कुशलोऽभिज्ञः परिजनः सेवकवर्गः, अनभि-नन्दितं अनादृतं पानं भोजनञ्च यया तां, गर्भावस्थायां योषितामाहारेष्वरुचिसम्भवादिति भावः। प्राप्तं

প্রতিবিম্বের ন্যায় গর্ভ, বিলাসবতীর উদরে প্রবেশ করিল। (ক) পারিজাতবৃক্ষদ্বারা নন্দন-বনশ্রেণীর ন্যায় এবং কৌস্তুভমণিদ্বারা নারায়ণের বক্ষঃস্থলের ন্যায়, যে গর্ভদ্বারা বিলাসবতী অত্যন্ত শোভা পাইতেছিলেন। দর্পণ যেমন প্রতিবিম্ব ধারণ করে, সেইরূপ বিলাসবতীও, গর্ভচ্ছলে অন্তরে প্রবিষ্ট রাজার প্রতিবিম্ব ধারণ করিতে লাগিলেন; এবং ধীরে ধীরে প্রতিদিন তাঁহার গর্ভ বৃদ্ধি পাইতে লাগিল, তখন, সমুদ্রের জল অধিক পান করায় তাহার ভারে অলস মেঘশ্রেণীর ন্যায় বিলাসবতী ধীরে ধীরে গমন করিতেন। (খ) বারংবার হাই তুলিয়া, নয়নযুগল সঙ্কুচিত করিয়া আলস্যের সহিত নিশ্বাস ত্যাগ করিতেন। (গ) পান ও ভোজনে তাঁহার অভিরুচি ছিল না, স্তনযুগলের অগ্রভাগ বর্ষাকালের ন্যায় শ্যামবর্ণ হইয়াছিল এবং

---

(१) येन नन्दनराजिरिव। (२) सुतरामराजत सा, सुतरामराजत देवी।
(३) क्वचित् चकारो नास्ति। (४) सा शनैः शनैश्च। (५) प्रतिदिवसं।
(६) प्रतिदिनमुग्धा विप्रमाणगर्भा। (७) मुहुरनुबद्धजृम्भिकं। (८)...लोचना। (९) निःशश्वास।

भोजनां (१) प्रावृषमिव श्यामायमान-पयोधरमुखीं केतकीमिव गर्भपाण्डुरां (२) पार्श्वालोक्येङ्गित-कुशलः परिजनः (३) विज्ञातवान्। (ग)

अथ तस्याः सर्वपरिजन-(४) प्रधानभूता सदा राजकुल-संवासचतुरा सर्वदा च (५) राजसन्निकर्ष-प्रगल्भा सर्वमङ्गलकुशला कुलवर्द्धना नाम महत्तरिका (६) प्रशस्ते दिवसे प्रदोषवेलायामभ्यन्तरास्थान-मण्डपगतं गन्धतैलावसेक-(७) ज्वलित-दीपिकासहस्रपरिवृतं (८) उडुनिकर-मध्यवर्त्तिनमिव पौर्णमासी-शशिनम्, उरगराज-फणा-(९) मणि-सहस्रान्तरालस्थितमिव नारायणम्, मूर्द्धाव-सिक्तैः प्रधान-नरेन्द्रैः (१०) परिमितैः परिवृतम्, अनतिदूरावस्थितपरिजनम्, अनन्तरसुतुङ्गवेत्रासनोपविष्टेन धौतधवलाम्बरपरिधानेन नात्युल्बण-वेषेण (११)

वर्षाकालमिव, श्यामायमाने श्यामलीभवन्ती पयोधरयोः स्तनयोः मुखे उपरिभागद्वयं यस्यास्ताम्, अन्यत्र तु श्यामायमानं पयोधरमुखं मेघयुक्तप्रथमभागो यस्यास्ताम्। केतकीं तदाख्यं कुसुममिव, गर्भेण गर्भधारणेन पाण्डुरा श्वेताङ्गी तां, अन्यत्र तु गर्भे मध्यदेशे पाण्डुरा स्वभावतः श्वेता ताम्, आलोक्य विज्ञातवान् गर्भ-वत्तया विदितवान्, तादृशलक्षणवत्त्वादिङ्गितकुशलत्वाच्चात्मन इति भावः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं पूर्णोपमा-द्वयञ्चैतेषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। गर्भलक्षणमाह स्म वाभटः...

"क्षामता गरिमा कुक्षेर्मूर्च्छा छर्दिररोचकम्। जृम्भाप्रसेकः सदनं रोमराज्याः प्रकाशनम्।"

भावप्रकाशश्च—"स्तनयोर्मुखकार्ष्ण्यं स्याद्रोमराज्युद्गमस्तथा।" इत्यादि।

(घ) अथेति। अथ कुलवर्द्धना रहो भूमिपालमुपसृत्य विलासवतीगर्भवृत्तान्तं विदितमकार्षीदित्यन्वयः। राजकुले राजगृहे संवासेन अवस्थानेन चतुरा सर्वकार्य्याणामवसराभिज्ञा, राज्ञः सन्निकर्षेऽपि सन्निधावपि प्रगल्भा धृष्टा, तथा सर्वमङ्गलेषु सर्वविधशुभकार्य्येषु कुशला निपुणा। महत्तरिका शूद्रजातीया दासी। "शूद्रः स्यात् पादजो दासो ग्रामकूटो महत्तरः।" इति त्रिकाण्डशेषः। अभ्यन्तरास्थानमण्डपगतं मध्यवर्त्ति सभा-

গর্ভধারণ করায় কেতকীকুসুমের ন্যায় শরীর শ্বেতবর্ণ হইয়াছিল—এই অবস্থায় তাঁহাকে দেখিয়া তিনি যে গর্ভবতী হইয়াছেন—ইহা ইঙ্গিতজ্ঞ পরিজনবর্গ সকলেই বুঝিতে পারিয়াছিল।

(ঘ) তদনন্তর তাঁহার পরিজনবর্গের মধ্যে প্রধানা, সর্ব্বদা রাজগৃহে বাস করায় সুচতুরা এবং রাজার নিকটেও প্রগল্ভস্বভাবা ও সকল প্রকার মঙ্গলকার্য্যে নিপুণা কুলবর্দ্ধনা নামে শূদ্র-জাতীয়া কোন দাসী, কোন প্রশস্ত দিনে প্রদোষকালে মধ্যবর্ত্তী সভামণ্ডপে উপবিষ্ট রাজার নিকটে উপস্থিত হইয়া তাঁহার কাণে আস্তে আস্তে রাণী বিলাসবতীর গর্ভবৃত্তান্ত নিবেদন করিল। তখন রাজার সকল দিকে সুগন্ধি তৈলসংসিক্ত বহুতর প্রদীপ জ্বলিতেছিল, সুতরাং নক্ষত্রসমূহের

(१) अहरहः स्वयमनेकरसवाञ्छितपानभोजना। (२) गर्भच्छविपाण्डुरां। (३) अन्तःपुरिकाजनः। (४) सर्वसेवकवर्ग...। (५) सदा च। (६) महान्तःपुरिका सा। (७)...अभिषेक...। (८) परिवारं। (९)...फण...। (१०) नरेन्द्रैः परिवृतं। (११) अनुल्बणवेषेण।

जलनिधिनेवागाधगाम्भीर्य्येण समुपारूढ़-विस्रम्भनिर्भरास्तास्ताः कथाः शुकनासेन सह (१) कुर्वाणं, भूमिपालमुपसृत्य रहः कर्णमूले विदितं (२) विलासवती-गर्भवृत्तान्तमकार्षीत्। (घ)

तेन तु तस्या वचनेनाश्रुतपूर्वेणासम्भाव्येनामृतरसेनेव सिक्तसर्वाङ्गस्य सद्यः-प्ररूढ़-(३) रोमाञ्च-निकर-कण्टकिततनोरानन्दरसेन विह्वलीक्रियमाणस्य स्मित-विकसित-कपोलस्थलस्य (४) परिपूरितहृदयातिरिक्तं हर्षमिव (५) दशनांशु-

मध्यस्थितं। गन्धतैलानां अवसेकेन प्रक्षेपेण ज्वलितानां दीपिकानां प्रदीपानां सहस्रेण समूहेन परिवृतं परिवेष्टितं। अतएव उडुनिकरस्य नक्षत्रसमूहस्य मध्यवर्त्तिनं पौर्णमासीशशिनमिव स्थितम्। उरगराजस्य सहस्रमस्तकस्य अनन्तनागस्य यत् फणामणीनां सहस्रं तस्य अन्तराले मध्ये स्थितं नारायणमिव। अनयो-पमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। परिमितैरल्पसंख्यकैः, मूर्द्धावसिक्तैः कृताभिषेकैः, प्रधाननरेन्द्रैः श्रेष्ठैर्भूपतिभिः। अनतिदूरे अवस्थिताः परिजनाः परिचारका यस्य तम्। अनन्तरं अदूरं स्थानं प्राप्य उत्तुङ्गे अत्युच्चे वेत्रासने उपविष्टेन, धौतं प्रक्षालितं धवलं अम्बरं वस्त्रं परिधानं अधोंशुकं यस्य तेन, नात्युल्वणो नात्युज्ज्वलो वेषो यस्य तेन, जलनिधिना समुद्रेणेव, अगाधं अन्यैरज्ञेयं अतल-स्पर्शञ्च गाम्भीर्य्यं धैर्य्यं गभीरता च यस्य तेन। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। समुपारूढ़ः समुत्पन्नः विस्रम्भ-निर्भरो विश्वासातिशयो यासु ताः, तास्ता विविधा इत्यर्थः कथा आलापान्। भूमिपालं राजानं तारापीडं। रहो गुह्यं अन्यैरश्राव्यं यथा स्यात्तथा।

(ङ) तेनेति। तस्याः कुलवर्द्धनायाः। असम्भाव्येन अचिन्तनीयेन। अमृतरसेन पीयूषद्रवेण सिक्तानि सर्वाणि अङ्गानि यस्य तादृशस्येव सतः। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः। सद्यः प्ररूढ़ेन तत्क्षणादुत्पन्नेन रोमाञ्चनिकरेण कण्टकिता सञ्जातकण्टका तनुः शरीरं यस्य तस्य। स्मितेन ईषद्धास्येन विकसिते स्फीते कपोलस्थली गण्डद्वयं यस्य तस्य। दशनांशूनां दन्तकिरणानां वितानच्छलेन विस्तारव्याजेन परिपूरितहृदयात्

মধ্যবর্ত্তী চন্দ্রের ন্যায় এবং সহস্রশিরা অনন্তনাগের সহস্রসংখ্যক ফণামণির অন্তর্গত নারায়ণের ন্যায় রাজাকে দেখা যাইতেছিল; অভিষিক্ত কয়েক জন প্রধান রাজা তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া অবস্থান করিতেছিলেন, পরিজনবর্গও অনতিদূরে অবস্থান করিতেছিল, আর নিকটে উচ্চ বেত্রাসনে উপবিষ্ট, ধৌত শ্বেতবস্ত্র-পরিধায়ী, কিঞ্চিৎ উজ্জ্বলবেষ এবং সমুদ্রের ন্যায় অগাধ-গাম্ভীর্য্যশালী মন্ত্রিপ্রবর শুকনাসের সহিত রাজা নানাবিধ বিশ্রম্ভালাপ করিতেছিলেন।

(ঙ) অশ্রুতপূর্ব্ব ও অভাবনীয় কুলবর্দ্ধনার সেই বাক্য শুনিয়া রাজার সকল অঙ্গ যেন অমৃতরসে সিক্ত হইয়া গেল, তৎক্ষণাৎ রোমাঞ্চসমূহ উৎপন্ন হইয়া তাঁহার সকল শরীর কণ্টকিত করিল, আনন্দে তাঁহাকে বিহ্বল করিয়া ফেলিল, ঈষৎ হাস্য করায় গণ্ডযুগল বিস্ফারিত

(१) क्वचित् सहशब्दो न दृश्यते। (२) विदितविलासवती…। (३)…प्रकट…।
(४)…स्थलस्य। (५)…अतिरिक्तहर्षमिव।

वितानच्छलेन विकिरतो राज्ञः शुकनासमुखे लोलतारकमानन्दजलविन्दुक्लिन्न-पक्ष्ममालं तत्क्षणं पपात चक्षुः। (ङ)

अनालोकितपूर्वं तु (१) हर्षप्रकर्षमभिसमीक्ष्य (२) भूपतेः, कुलवर्द्धनाञ्च स्मितविकसितमुखीमागतां दृष्ट्वा तस्य चार्थस्य सततं मनसि वर्त्तमानत्वात् (३) अविदितवृत्तान्तोऽपि तत्कालोचितमपरमतिमहतो हर्षस्य कारणमपश्यन् शुकनासः स्वयमुत्प्रेक्ष्य समुत्सर्पितासनः समीपतरमुपसृत्य नातिप्रकट-(४) मावभाषे—(च) "देव! किमस्ति (५) किञ्चित्तस्मिन् (६) स्वप्नदर्शने सत्यम्? अत्यन्तमुत्फुल्ललोचना (७) हि कुलवर्द्धना दृश्यते, देवस्यापीदं प्रियवचनश्रवण-

---

अतिरिक्तं उद्वृत्तं हर्षं आनन्दं, विकिरत इव निक्षिपत इव सतः। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः। लोले चपले तारके कनीनिकाद्वयं यस्य तत्, आनन्दजलविन्दुभिः आनन्दाश्रुकणैः क्लिन्ना आर्द्रीकृता पक्ष्ममाला लोमश्रेणिर्यस्य तत् तथोक्तं चक्षुर्नयनद्वयं शुकनासमुखे पपात।

(च) अनेति। भूपतेस्तारापीडस्य, हर्षप्रकर्षमानन्दाधिक्यं अभिसमीक्ष्य दृष्ट्वा। तस्य विलासवत्या गर्भधारणरूपस्य, अर्थस्य विषयस्य, सततं मनसि वर्त्तमानत्वात् राज्ञः स्वप्नवृत्तान्तश्रवणेनेति भावः। उत्प्रेक्ष्य 'कुलवर्द्धना विलासवत्या गर्भधारणवृत्तान्तमेवाह' इति सम्भाव्य, समुत्सर्पितं त्यक्तं आसनं येन सः, समीपतरमतिनिकटं। नातिप्रकटं अनतिस्पष्टं सन्दिग्धतया सर्वेषां श्रवणानौचित्यादिति भावः।

(छ) देवेति। ननु विषयान्तरमपहाय कथं तत्स्वप्नविषय एव पृच्छ्यते इत्याह अत्यन्तमिति। हि यस्मात्। उत्फुल्ललोचना आनन्देन विस्फारितनेत्रा। तत्स्वप्नविषयभूतराज्ञीगर्भधारणवृत्तान्तमन्तरेण कुलवर्द्धनाया ईदृगानन्दासम्भवादिति भावः। तत्सम्भावनाया एव हेत्वन्तरमाह देवस्यापीति। प्रियवचनश्रवणकुतूहलादिवेति हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

হইল, দন্তের প্রভা-প্রকাশ-চ্ছলে তিনি যেন পরিপূর্ণ চিত্ত হইতে উদ্বৃত্ত আনন্দ ছড়াইতে লাগিলেন, নয়নের তারা দুইটি চঞ্চল হইল এবং আনন্দাশ্রুজলে নয়নের লোমগুলি ভিজিয়া গেল, এইরূপ তাঁহার নয়নযুগল তৎক্ষণাৎ শুকনাসের মুখে পতিত হইল।

(চ) পূর্ব্বে যাহা কখনও দেখা যায় নাই—এ হেন রাজার আনন্দাতিশয় দর্শন করিয়া কুলবর্দ্ধনাকেও হাস্য-প্রফুল্লমুখে উপস্থিত দেখিয়া এবং সেই স্বপ্নবৃত্তান্ত শুনিয়া অবধি রাণীর গর্ভধারণের কথা সর্ব্বদা মনে পড়ায় শুকনাস, প্রকৃত বৃত্তান্ত জানিতে না পারিয়াও, সেই সময়ে অত্যন্ত আনন্দের অন্য উপযুক্ত কারণ দেখিতে না পাইয়া, নিজেই মনে মনে ধারণা করিয়া, আসন পরিত্যাগপূর্ব্বক রাজার অতিনিকটে যাইয়া অনতিস্পষ্টভাবে জিজ্ঞাসা করিলেন—(ছ) "মহারাজ! সেই স্বপ্ন দেখার বিষয় কিছু সত্য হইয়াছে কি? কারণ—কুলবর্দ্ধনাকে

---

(१) अनालोचितपूर्वं तु तं। (२) अभिसंवीक्ष्य।

(३) परिवर्त्तमानत्वात्, विपरिवर्त्तमानत्वात्। (४) नातिप्रकाशं...। (५) अस्ति।

(६) क्वचित् 'तस्मिन्' इति नास्ति। (७) अत्यन्तोत्फुल्ललोचना, उत्फुल्ललोचना।

कुतूहलादिव श्रवणमूलमुपसर्पदुपरचयदिव नीलकुवलय-कर्णपूर-शोभां, आनन्द-जल-परिप्लुतं तरलतारकं (१) विकसदावेदयति महत् प्रहर्ष-(२) कारणमीक्षण-युगलम्, उपारूढमहोत्सव-श्रवण-कुतूहलमुत्सुकोत्सुकं (३) क्लाम्यति मे मनः। तदावेदयतु देवः किमिदम्"। (छ)

इत्युक्तवति तस्मिन् राजा विहस्याब्रवीत्—"यदि सत्यमनया यथा कथितं, तदा (४) सर्वमवितथं स्वप्नदर्शनम्। अहन्तु न श्रद्दधे. कुतोऽस्माकमियती भाग्यसम्पत्, अभाजनं हि वयमीदृशानां प्रियवचनश्रवणानाम्। अवितथवादिनी-मप्यहं कुलवर्द्धनामेवंविधानां कल्याणानामसम्भावितमात्मानं मन्यमानो विप-

---

श्रवणयोः कर्णयोः मूलं समीपं उपसर्पत् गच्छत्। कुलवर्द्धनातः श्रुतवृत्तान्ताभ्यां कर्णाभ्यामिव तद्वृत्तान्त-श्रवणसम्भवादिति भावः। अतएव नीलकुवलयस्य नीलोत्पलरूपस्य कर्णपूरस्य कर्णाभरणस्य शोभां उपरचय-दिव जनयदिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आनन्दजलेन आनन्दाश्रुणा परिप्लुतं क्लिन्नं, तरले चञ्चले तारके कनीनिकाद्वयं यस्य तत्, विकसत् विस्फारं प्राप्नुवत् इदं देवस्य भवतोऽपि ईक्षणयुगलं नयनद्वयं कर्त्तृ, महद्विशालं प्रहर्षस्य विशेषानन्दस्य कारणं आवेदयति सूचयति। ननु तथापि किन्ते, इत्याह उपा-रूढेति। उपारूढमुत्पन्नं महोत्सवश्रवणाय विशालानन्दवृत्तान्ताकर्णनाय कुतूहलं कौतुकं यत्र तत्, उत्-सुकोत्सुकं नितान्तोत्कण्ठितं मे मम मनः क्लाम्यति क्लिश्यति।

(ज) इतीति। तस्मिन् शुकनासे। अनया कुलवर्द्धनया यथा कथितं तद्यदि सत्यमित्यर्थः। अवितथं अमिथ्याभूतं सत्यम्। श्रद्दधे विश्वसिमि। हि यस्मात्। अभाजनं अपात्रं अयोग्या इत्यर्थः।

আনন্দে অত্যন্ত উৎফুল্লনেত্রা দেখিতেছি, আপনারও এই নয়নযুগল প্রিয়বাক্য শুনিবার জন্য কৌতুকবশতই যেন কর্ণের নিকটে উপস্থিত হইতেছে, তাহাতে যেন নীলোৎপলময় কর্ণাভরণের শোভা জন্মাইতেছে, আনন্দাশ্রুজলে সিক্ত ও বিস্ফারিত হইতেছে, তারা দুইটিও চঞ্চল হইয়াছে, সুতরাং (এই নয়নযুগলই) গুরুতর আনন্দের কারণ প্রকাশ করিতেছে। গুরুতর আনন্দের সংবাদ শুনিবার জন্য আমারও কৌতূহল জন্মিয়াছে এবং মন অত্যন্ত উৎকণ্ঠিত হইয়া ক্লেশ ভোগ করিতেছে; অতএব আপনি বলুন—এ ব্যাপারটা কি ?

(জ) শুকনাস এইরূপ বলিলে রাজা হাস্য করিয়া বলিলেন—"কুলবর্দ্ধনা যাহা বলিয়াছে, তাহা যদি সত্য হয়, তবে সেই স্বপ্নবৃত্তান্ত সমস্তই সত্য; কিন্তু আমি বিশ্বাস করিতেছি না; কারণ—আমাদের এত ভাগ্যসম্পদ হইবে কোথা হইতে; যেহেতু—আমরা এই জাতীয় প্রিয়বাক্য শুনিবার পাত্র নহি। কুলবর্দ্ধনাকে পূর্ব্ব হইতেই সত্যবাদিনী বলিয়া জানি; কিন্তু আমি যে এই জাতীয় মঙ্গল-সম্পদের পাত্র হইব, ইহা অসম্ভব মনে করিয়া আজ উহাকে

---

(१)...प्लुततरलतारकं। (२) प्रकर्ष...।
(३) उत्सुकं। (४) तथा।

रीतामिवाद्य पश्यामि। तदुत्तिष्ठ, स्वयमेव गत्वा किमत्र सत्यमिति देवीं पृष्ट्वा ज्ञास्यामि।" (ज)

इत्यभिधाय विसृज्य (१) सकलनरेन्द्रलोकं, उन्मुच्य स्वाङ्गेभ्यो भूषणानि कुलवर्द्धनायै दत्त्वा, तया च दत्तप्रसादानन्तरमवनितलाश्लिष्टललाटरेखया शिरः-प्रणामेनाभ्यर्चितः, सह शुकनासेनोत्थाय हर्षविशेषनिर्भरेण त्वर्यमाणः (२) मनसा, पवन-चलित-नील-कुवलय-दल-लीला-विडम्बकेन दक्षिणेनाक्ष्णा परिस्फुरताऽभिनन्द्यमानः (३) तत्काल-सेवा-समुचितेन विरलविरलेन परिजनेनानुगम्यमानः पुरःसंसर्पिणीनामनिललोलशिखानां (४) प्रदीपिकानामालोकेन समुत्सार्यमाणकक्षान्तरतिमिरं (५) अन्तःपुरमयासीत्। (झ)

अवितथवादिनीमपि पूर्वस्मादेव सत्यवादिनीमपि। असम्भावितं आस्पदत्वेन अनिर्द्धारितं। विपरीतां अवितथवादिनीभिन्नरूपां मिथ्यावादिनीमित्यर्थः। अत्र अस्या उक्तिविषये।

(झ) इतीति। विसृज्य विहाय। उन्मुच्य अवतार्य्य। दत्तो यः प्रसीदत्यनेनेति प्रसादोऽनुग्रहदानं तस्मादनन्तरं, अवनितलेन भूतलेन आश्लिष्टा प्रणामकाले स्पृष्टा ललाटरेखा भालदेशो यस्यास्तया, तया कुलवर्द्धनया शिरःप्रणामेन मस्तकावनमनेन अभ्यर्चितो वन्दितः। हर्षविशेषेण आनन्दबाहुल्येन निर्भरं परिपूर्णं तेन, मनसा त्वर्यमाणः अन्तःपुरगमने सत्वरीक्रियमाणः। पवनेन वायुना चलितं कम्पितं यत् नीलकुवलयं नीलोत्पलं तस्य लीलां शोभां विडम्बयति अनुकरोतीति तत्तथोक्तं तेन। अत्रार्थोपमालङ्कारः। परिस्फुरता अतीवस्पन्दमानेन, दक्षिणेन अक्ष्णा चक्षुषा अभिनन्द्यमानः अभीष्टलाभसूचनेन सन्तोष्यमाणः। तथाचोक्तं "अङ्गविस्फुरणं नृणां दक्षिणं सर्वकामदं। तदेव शस्यते सद्भिर्नारीणामप्रदक्षिणम्।" तत्कालसेवायां अन्तःपुरगमनकालीनपरिचर्य्यायां समुचितेन योग्येन, विरलविरलेन अल्पाल्पेन। पुरःसंसर्पिणीनां अग्रगामिनीनां, अनिलेन वायुना लोलाश्चञ्चलाः शिखा यासां तासां प्रदीपिकानां दीपानां

পূর্ব্বের বিপরীত (মিথ্যাবাদিনী) বলিয়া বোধ করিতেছি। অতএব উঠ, নিজেরাই যাইয়া, 'এ বিষয়ে যথার্থ ঘটনা কি' ইহা মহিষীকে জিজ্ঞাসা করিয়া জানি।"

(ঝ) এই কথা বলিয়া উপস্থিত রাজগণকে বিদায় দিয়া, নিজের অঙ্গ হইতে আভরণ উন্মুক্ত করিয়া কুলবর্দ্ধনাকে দিলেন, সেও সেই অনুগ্রহদানের পর মস্তক অবনমনপূর্ব্বক ললাটদ্বারা ভূতল স্পর্শ করিয়া রাজাকে নমস্কার করিল; রাজা শুকনাসের সহিত উঠিলেন, অত্যন্ত আনন্দ-পরিপূর্ণ চিত্ত, তাঁহাকে অন্তঃপুরে যাইবার নিমিত্ত দ্রুত পরিচালিত করিতে লাগিল, বায়ুকম্পিত নীলোৎপলের অনুকরণকারী দক্ষিণ-চক্ষু স্পন্দিত হইয়া তাঁহাকে সন্তুষ্ট করিতে লাগিল, সেই সময়ে পরিচর্য্যা করিবার উপযোগী অল্প অল্প পরিজন তাঁহার পশ্চাৎ

---

(१) विसर्ज्य। (२) पूर्यमाणः। (३) अभिनन्द्यमानः।
(४) अनिललोलोच्छलच्छिखानां। (५) प्रदीपकानां,...कक्षान्तरतिमिरसंहतिः।

तत्र च सुकृत-(१) रक्षासंविधाने, नवसुधानुलेपन-(२) धवलिते, प्रज्वलित-मङ्गलप्रदीपे, (३) पूर्णकलसाधिष्ठितपक्षके, (४) प्रत्यग्रलिखित-मङ्गल्यालेख्योज्ज्वल-भित्ति-भाग-(५) मनोहारिणि, समुपरचित-सित-वितान-पर्य्यन्तावबद्ध मुक्तागुणे,(६) मणिप्रदीप-प्रहत-(७) तिमिरे वासभवने, (८) (ञ) भूमि-(९) लिखित-

आलोकेन प्रभया, समुत्सार्य्यमाणानि दूरीक्रियमाणानि कक्षान्तराणां अयायवर्त्तिनामन्येषां प्रकोष्ठानां तिमिराण्यन्धकारा यस्मिन् तत्।

(ञ) तत्रेति। तत्र अन्तःपुरे वासभवने शयनतल्पमधिशयानां विलासवतीं राजा ददर्शेत्यन्वयः। तत्रादौ सप्तम्यन्तानि पदानि वासभवन इत्यस्य विशेषणानि। सुष्ठु सम्यक् कृतं मणिमन्त्रौषधादिना विहितं रक्षासंविधानं डाकिन्यादिभ्यो गर्भरक्षणविधिर्यस्मिन् तस्मिन्। नवेन नूतनेन सुधानुलेपनेन चूर्णादिद्रव्य-लेपनेन धवलिते शुभ्रीकृते। "सुधा प्रासादभागद्रव्यं सुधा विद्युत् सुधाऽमृतम्।" इत्याद्यनेकार्थध्वनिमञ्जरी। प्रज्वलितो मङ्गलप्रदीपो यस्मिन् तस्मिन्। मङ्गलार्थः प्रदीप इति मङ्गलप्रदीपः "शाकपार्थिवादयश्चे"ति मध्यपदलोपी समासः। पूर्णकलसेन जलपूर्णकुम्भेन अधिष्ठित आश्रितः पक्षको द्वारपार्श्वो यस्य तस्मिन्। "पक्षकस्तु पुमान् पार्श्वद्वारे च पार्श्वमात्रके।" इति मेदिनी। प्रत्यग्रं नूतनं यथा स्यात्तथा लिखितानि चित्रितानि यानि मङ्गल्यानि देवतारूपत्वान्मङ्गलजनकानि आलेख्यानि चित्राणि तैरुज्ज्वलो यो भित्तिभाग-स्तेन मनोहारिणि। समुपरचितस्य उपरि योजितस्य सितवितानस्य शुभ्रचन्द्रातपस्य पर्य्यन्तेषु प्रान्तदेशेषु अवबद्धौ ग्रथितौ मुक्तागुणौ मुक्तामाला यस्मिन् तस्मिन्। तथा मणय एव प्रदीपास्तैः प्रहतानि नाशितानि तिमिराणि अन्धकारा यस्मिन् तस्मिन्। वासभवने निवासगृहे।

পশ্চাৎ যাইতে লাগিল, বায়ু-কম্পিত-শিখা-সমন্বিত অগ্রগামী প্রদীপসমূহের আলোকে অন্যান্য প্রকোষ্ঠের অন্ধকার দূর করিতে লাগিল, এই অবস্থায় রাজা অন্তঃপুরে গমন করিলেন।

(ঞ). রাজা অন্তঃপুরে যাইয়া দেখিলেন—রাণী বিলাসবতী বাসগৃহে, শয্যার উপরে শয়ন করিয়া রহিয়াছেন। মণি, মন্ত্র ও ঔষধাদিদ্বারা সেই বাসগৃহের সম্পূর্ণ রক্ষাবিধান করা হইয়াছিল, এবং নূতন চূর্ণলেপন করিয়া সেই বাসগৃহকে শুভ্রবর্ণও করা হইয়াছিল, তাহার মধ্যে মঙ্গলপ্রদীপ জ্বলিতেছিল, দ্বারের পার্শ্বে পূর্ণকুম্ভ স্থাপিত ছিল, দেওয়ালে নূতন চিত্রিত মঙ্গলকর চিত্রসমূহে সে ঘরখানি সুন্দর দেখাইতেছিল, উপরে একখানি শ্বেতবর্ণ চন্দ্রাতপ খাটাইয়া তাহার চারিদিকে মুক্তার ঝালর ঝুলান হইয়াছিল, আর মণিময় প্রদীপের আলোকে

(१) तत्र वसुकृत…, तत्र बहुकृत…। (२) नवसुधालेप…। (३)…दीपे।
(४)…अधिष्ठिते…द्वारपक्षके। (५)…मङ्गल्यलेख्य,…उज्ज्वलित…भागे। (६)…सितविताने वितान,… पर्य्यन्तस्थितमुक्तागणे। (७)…प्रतिहत…। (८) वासभुवने। (९) भूति…।

पत्रलता-कृत-रक्षा-परिक्षेपम्, शयन-शिरोभाग-विन्यस्त-धवल-(१) निद्रा-कलसम्, आबद्ध-विविधौषधि-मूल-मन्त्र-(२) पवित्रम्, अवस्थापित-रक्षा-मणिवलयम्, इतस्ततो विकीर्ण-(३) गौरसर्षपम्, अवलम्बित-(४) बाल-योक्त्र-ग्रथित-लोह-पिप्पलपत्रम्, (५) आसक्त-हरितारिष्टपल्लवम्, उत्तुङ्ग-पादपीठ-(६) प्रतिष्ठितम्, इन्दु-दीधिति-धवल-प्रच्छद-पटम्, अचलराज-शिलातल-विशालम्, गर्भोचितं

(ट) भूमाविति। इतःप्रभृति क्लीवलिङ्गद्वितीयान्तपदानि शयनतलमित्यस्य विशेषणानि। भूमौ लिखितया अभ्यायाः एव समन्ताल्लिखितया पत्रलतया पत्रान्वितकल्पलतया आलिपनेनेत्यर्थः कृतो रक्षापरिक्षेपो गर्भरक्षार्थ-परिवेष्टनं यस्य तत्। शयने शयनकाले यः शिरोभागस्तस्मिन् विन्यस्तः स्थापितः धवलो रौप्यमयत्वात् श्वेतो निद्राकलसो निद्राकुम्भो यस्मिन् तत्। आबद्धानि स्थापितानि विविधानि नानाप्रकाराणि ओषधयो लताविशेषाः मूलानि तद्लतामूलानि मन्त्राणि लाङ्गलचक्रादीनि पवित्राणि गोरचनादिपवित्रद्रव्याणि यस्मिन् तत्। अवस्थापितानि रक्षार्थं शक्तीनां ब्राह्मीवैष्णवीप्रभृतीनां वलयानि मन्त्रपूतकटकानि यस्मिन् तत्। इतस्ततो विकीर्णा विक्षिप्ता गौरसर्षपाः श्वेतसर्षपा यस्मिन् तत्। अवलम्बितानि स्थापितानि बालयोक्त्रेण क्षुद्ररज्जुविशेषेण ग्रथितानि गुम्फितानि लोहानि लौहखण्डानि पिप्पलपत्राणि अश्वत्थदलानि च यस्मिन् तत्। "आबन्धो योक्त्रं योत्रम्।" "बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः। अश्वत्थे" इति चामरः। आसक्ताः परस्परलग्नाः हरिताः नूतनत्वात् पालाशवर्णाः अरिष्टपल्लवा निम्बकिसलयानि यस्मिन् तत्। "अरिष्टः फेनिले निम्बे लशुने काककङ्कयोः।" इति विश्वः। गर्भिणीशय्यायामीदृशानां द्रव्यविशेषाणां संस्थापनं खलु गर्भरक्षार्थं तदानीन्तनदेशाचारादिति बोध्यम्। उत्तुङ्गेषु अत्युच्चेषु पादपीठेषु पर्य्यङ्कपादाधार-काष्ठविशेषेषु प्रतिष्ठितं अवस्थितं। तेषु पर्य्यङ्कस्य प्रतिष्ठितत्वात् पर्य्यङ्कोपरिपातितशय्याया अपि तत्प्रति-ष्ठितत्वमुपचारात्। इन्दुदीधितिवत् चन्द्रकिरणवत् धवलः प्रच्छदपट आस्तरणवस्त्रं यस्मिन् तत्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। तथा अचलराजस्य हिमालयस्य शिलातलवत् विशालप्रस्तरखण्डवत् विशालं विस्तृतं।

সে ঘরের অন্ধকার দূর করিয়াছিল; (ট) আবার রাণী যে শয্যায় শয়ন করিয়াছিলেন, তাহার চারিদিকে মাটীতে আলিপনা দিয়া রক্ষামণ্ডল করা হইয়াছিল, শিয়রে একটি শ্বেতবর্ণ নিদ্রাকুম্ভ স্থাপিত ছিল, নানাপ্রকার ওষধি, মূল (কুমু'রের লতা ও তাহার মূল প্রভৃতি), লাঙ্গলপ্রভৃতি যন্ত্র ও গোরোচনাপ্রভৃতি পবিত্র দ্রব্য সেই শয্যার সংস্পর্শে রাখা হইয়াছিল, গর্ভরক্ষার জন্য ব্রাহ্মী ও বৈষ্ণবীপ্রভৃতি মাতৃগণের মন্ত্রে অভিমন্ত্রিত করিয়া কতকগুলি বালা সেই শয্যার উপরে রাখা হইয়াছিল, চারিদিকে শ্বেত সরিষে ছড়ান ছিল, ছোট দড়ি দিয়া গাঁথা কতকগুলি লোহার খণ্ড ও অশ্বত্থের পাতা এবং পরস্পর সংলগ্ন হরিতবর্ণ কতক-গুলি নিমের পল্লব সেই শয্যার উপরে সংস্থাপিত ছিল, উচ্চ উচ্চ কাষ্ঠখণ্ডের উপরে সেই পর্য্যঙ্কের পায়াগুলি স্থাপিত ছিল, চন্দ্রকিরণের ন্যায় শুভ্রবর্ণ একখানি আস্তরণ বস্ত্র (চাদর) তাহার উপরে পতিত ছিল আর সেই শয্যাখানি হিমালয়ের বিশাল প্রস্তরখণ্ডের ন্যায় বিস্তৃত এবং

(१)...रजतधवल...। (२)...मन्त्र...। (३) विप्रकीर्ण...। (४) अवलम्बि...।
(५) बालयोक्त्रग्रथित..., लोल, लोहित,...दल। (६) पादपीठी...।

शयनतलमधिशयानाम्, (ट) कनकपात्र-परिगृहीतैः अविच्छिन्न-(१) विरला-वस्थित-दधिलवैः जल-तरङ्ग-तरल-श्वेत-(२) शालि-सिक्थ-निकरैः अग्रथित-कुसुम-(३) सनाथैः पूर्णभाजनैः, (ठ) अखण्डिताननमत्स्य-पटलैश्च प्रत्यग्र-पिशितपिण्ड-मिश्रैः, (ड) अविच्छिन्न-सलिलधारानुगम्यमान-(४) मार्गैः, पटलकप्रज्वलितैश्च शीतलप्रदीपैः, (ढ) गोरोचनामिश्रगौरसर्षपैश्च सलिलाञ्च

अत्रापि लुप्तोपमालङ्कारः। गर्भोचितं गर्भवतीशयनयोग्यं शयनतलं शय्योपरिभागं अधिशयानां आश्रित्य शयितां। विलासवत्या विशेषणमेतत्।

(ठ) कनकेति। अत्र पूर्णभाजनैरित्यन्तानि सिक्थनिकरैरित्यस्य विशेषणानि। आचारेषु तद्देशिक-कौलिकव्यवहारेषु कुशलाऽभिज्ञस्तेन, अन्तःपुरजरतीजनेन अन्तःपुरस्थवृद्धस्त्रीलोकवर्गेण। आदौ तदन्तर्गतेन केनचित् वृद्धस्त्रीजनेन कर्त्रेत्यर्थः। कनकपात्रे स्वर्णभाजने परिगृहीतैः स्थापितैः। अविच्छिन्नाः परस्पर-संलग्नाः, विरला अल्पाः, अवस्थिता दधिलवा दधिविन्दवो येषु तैः। अग्रथितानि सूत्रेणागुम्फितानि विकी-र्णानि यानि कुसुमानि तैः सनाथाः संयुक्तास्तैः। तथा पूर्णं व्याप्तं भाजनं पात्रं यैस्तैः। जलतरङ्गवत् तरलाश्चञ्चलाः, तदीयवाष्पाणां तरलतया तेषामपि तरलवद्दृश्यमानत्वादिति भावः, श्वेताः शुभ्राः, शालिसिक्थ-निकराः सद्यःपक्वशालितण्डुलान्नसमूहास्तैः करणैः। तरङ्गशब्दस्य नानार्थतया वस्त्रादीनामप्यभिधानात्तद्व्या-वृत्त्यै जलपदमिति नाधिकपदत्वदोषः। शालिर्हैमन्तिकं धान्यम्।

(ड) अखण्डितेति। अपरेण केनचिज्जरतीजनेनेति कर्त्तृपदमादावूहनीयम्। प्रत्यग्राणि नूतनानि यानि पिशितपिण्डानि मांसखण्डानि तन्मिश्रैस्तत्संयुक्तैः अखण्डितानि अच्छिन्नानि आननानि मुखानि येषां तादृशानां मत्स्यानां पटलैः समूहैश्च। क्रियमाणावतारणकमङ्गलामित्यग्रिमेणान्वयः।

(ढ) अविच्छिन्नेति। अविच्छिन्नया सलिलधारया अनुगम्यमानो मार्गः पन्था येषां तैः, केनचिज्जरती-जनेन पश्चात् पश्चात् क्रियमाणाविच्छिन्नजलधारैरित्यर्थः। पटलकेषु क्षुद्रपिटकेषु तन्मध्येष्वित्यर्थः प्रज्वलितैः। "पटलं तिलके नेत्ररोगे छदिषि सञ्चये। पिटके परिवारे च"ति हेमः। शीतलप्रदीपैश्च अनेकजरती-जनैरानीयमानैः कर्पूरदीपैश्च करणैः। क्रियमाणावतारणकमङ्गलामित्यनेनान्वयः। "शीतलः (पुं)... कर्पूरभेदः" इति शब्दकल्पद्रुमः।

গর্ভবতীর শয়নের উপযুক্ত ছিল। (ঠ) কোন বৃদ্ধ স্ত্রীলোক রাণীর জন্য স্বর্ণপাত্রে পরিপূর্ণ করিয়া শুভ্রবর্ণ শালিতণ্ডুলের অন্ন লইয়া আসিতেছিল, সেই অন্নের উপরে পরস্পর সংলগ্ন অথচ অল্প অল্প দধিবিন্দু এবং অসংলগ্নভাবে কতকগুলি পুষ্প প্রক্ষিপ্ত ছিল আর সেই অন্ন হইতে জলতরঙ্গের ন্যায় বাষ্প উঠিতেছিল, (ড) কোন বৃদ্ধ স্ত্রীলোক, কতকগুলি অচ্ছিন্ন-মুখ মৎস্য নিয়া আসিতেছিল, তাহাতে নূতন মাংসখণ্ডও মিশ্রিত ছিল; (ঢ) কতকগুলি বৃদ্ধ স্ত্রীলোক, পেটড়ার (লণ্ঠনের) মধ্যে প্রজ্বলিত কতকগুলি কর্পূরের প্রদীপ লইয়া আসিতে-

(१) अविच्छन्न...। (२)...सित...। (३)...कुसुमाञ्जलि...। (४)...गम्यमान...।

ल्लिभिश्च, (ण) आचार-(१) कुशलेनान्तःपुर-जरतीजनेन क्रियमाणावतारणक-(२) मङ्गलाम्, (त) धवलाम्बर-विविक्त-वेषेण प्रमुदितेन प्रस्तुतमङ्गल-(३) प्रायालापेन परिजनेनोपास्यमानाम्, (थ) उपारूढगर्भतयाऽन्तर्गतकुलशैलामिव क्षितिम्, सलिल-निमग्नैरावतामिव मन्दाकिनीम्, गुहागतसिंहामिव गिरिराजमेखलाम्, जलधर-पटलान्तरित-दिनकरामिव दिवसश्रियम्, (४) उदय-गिरि-तिरोहित-शशिमण्डलामिव विभावरीम्, अभ्यर्ण-ब्रह्म-कमल-विनिर्गमामिव नारायणनाभिम्, आसन्नागस्त्योदयामिव दक्षिणाशाम्, फेनावृतामृतकलसामिव

(ण) गोरोचनेति। गोरोचनया मिश्राः संयुक्ताः गौराः श्वेता ये सर्षपास्तैश्च कैश्चिज्जरतीजनेन पश्चात् पश्चाद्गमनपथविक्षेपैश्च करणैरित्यर्थः। सलिलाञ्जलिभिश्च कैश्चिज्जरतीजनेनाञ्जलिपूर्णसलिलैश्च क्रियमाणावतारणकमङ्गलामित्यर्थः।

(त) आचारेति। क्रियमाणं उत्क्षेपणं विधीयमानं अवतारणकं अवतारणे भूतविषये भोजनीयानयनवेलायां भूतापसारणविषय इत्यर्थः मङ्गलं यस्यास्ताम्। "अवतारणं भूतादिग्रहे वस्त्राञ्चलेऽर्चने।" इति मेदिनी। तदानीन्तनतद्देशाचारादिदमङ्गतवर्णनम्।

(थ) धवलेति। धवलाम्बरं श्वेतवस्त्रं तद्रूपो विविक्तः पवित्रो वेषो यस्य तेन, प्रमुदितेन हृष्टेन, प्रस्तुत आरब्धो मङ्गलप्राय आलापो येन तादृशेन परिजनेन उपास्यमानां पादसंवाहनादिभिः सेव्यमानाम्।

(द) उपेति। उपारूढगर्भतया उत्पन्नगर्भतया हेतुना। अयमर्थ इतः सर्वत्रान्वीयते। अन्तर्गताः कुलशैला यस्यास्तां क्षितिमिव, सलिले निमग्न ऐरावतो हस्ती यस्यास्ताम्, मन्दाकिनीं वियद्गङ्गामिव, गुहायां गतः स्थितः सिंहो यस्यास्तां गिरिराजस्य हिमालयस्य मेखलां मध्यभागमिव, जलधरपटलेन मेघ-वृन्देन अन्तरितो व्यवहितो दिनकरः सूर्यो यस्यां तां दिवसश्रियमिव, उदयगिरिणा तिरोहितं शशिमण्डलं यस्यां तां विभावरीं रात्रिमिव, अभ्यर्ण आसन्नः ब्रह्मकमलस्य चतुर्मुखजन्मस्थानीभूतपद्मस्य विनिर्गमो यस्यास्तां नारायणस्य नाभिमिव, आसन्नः अगस्त्यस्योदयो यस्यां तां दक्षिणाशां दक्षिणदिशमिव, तथा फेनैरावृत

ছিল, কেহ তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ পথে অবিচ্ছিন্ন জলধারা দিতেছিল, কেহ গোরোচনা-মিশ্রিত শ্বেত-সর্ষপ পথে নিক্ষেপ করিতেছিল আর অপর কেহ অঞ্জলিপূর্ণ জল লইয়া আসিতেছিল, (ত) এই ভাবে সেই দেশের ও সেই বংশের আচারে অভিজ্ঞ এইরূপ অন্তঃপুরস্থ বৃদ্ধ স্ত্রীলোকগণ রাণীর জন্য খাদ্যদ্রব্য আনিবার সময়ে ভৌতিক অনিষ্টের নিবারণ করিবার জন্য মঙ্গলাচরণ করিতেছিল। (থ) এবং শ্বেতবর্ণ বস্ত্রের নির্ম্মল পরিচ্ছদ-সমন্বিত হৃষ্টচিত্ত পরিজনবর্গ, পরস্পর মঙ্গলময় আলাপ করিতে করিতে রাণীর পরিচর্য্যা করিতেছিল। (দ) গর্ভ উৎপন্ন হওয়ায়, অন্তর্গত কুলপর্ব্বত-সমন্বিত পৃথিবীর ন্যায়, ঐরাবত হস্তী জলমধ্যে নিমগ্ন হইলে স্বর্গগঙ্গার ন্যায়, গুহামধ্যে সিংহ অবস্থান করিতে লাগিলে হিমালয়ের মেখলার (মধ্যদেশের) ন্যায়, সূর্য্য মেঘসমূহে আবৃত হইলে দিনশ্রীর ন্যায়, চন্দ্রমণ্ডল উদয়াচলদ্বারা

(१) अभिचार...। (२)...अवतरणक...। (३)...मङ्गल...। (४) दिनश्रियम्।

क्षीरोदवेलाम्, गोरोचना-चित्रित-(१) दशमनुपहतमतिधवलं (२) दुकूलयुगलं वसानां विलासवतीं ददर्श। (द)

ससम्भ्रम-परिजन-प्रसारित-करतलावलम्बनावष्टम्भेन (३) वामजानु-विन्यस्त-हस्तपल्लवां प्रचलित-(४) भूषणमणि-रव-मुखरमुत्तिष्ठन्तीं विलासवतीम् "अलमलमत्यादरेण, देवि ! नोत्थातव्यम्" इत्यभिधाय सह तया तस्मिन्नेव शयनीये पार्थिवः समुपाविशत्। (ध) प्रमृष्ट-चामीकर-चारुपादे (५) धवलोपच्छदे चासन्ने शयनान्तरे शुकनासोऽपि न्यषीदत्। (न)

आच्छादितः अमृतकलसो यस्यां तां क्षीरोदस्य सागरस्य वेलां जलविकृतिमिव स्थिताम्, तथा गोरोचनया चित्रिता दशाः प्रान्तदेशा यस्य तत्, अनुपहतं प्रागपरिधानेनापर्यु षितं नूतनमित्यर्थः अतिधवलं दुकूलयुगलं सूक्ष्मवस्त्रद्वयं वसानां परिदधानाम्। अत्र मालोपमालङ्कारः। "दुकूलं तु क्षौमे सूक्ष्मांशुकेऽपि च।" इति विश्वः।

(ध) ससम्भ्रमेति। ससम्भ्रमेण राजानमवलोक्य सत्वरेण परिजनेन कयाचित् परिचारिकया प्रसारितं विस्तारितं यत् करतलं तदेवावलम्बनं तस्य अवष्टम्भेन आश्रयेण, वामजानुनि विन्यस्तः स्थापितो हस्तपल्लवो यया ताम्, अन्यया गर्भभारेणोत्थानासम्भवादित्युभयथापि भावः। प्रचलितानां शरीरसञ्चलनेन चलितानां भूषणमणीनां रवेण शब्देन मुखरं सशब्दं यथा स्यात्तथा। तया विलासवत्या। पार्थिवो राजा।

(न) प्रमृष्टेति। प्रमृष्टाः परिष्कृताः, चामीकरस्य सुवर्णस्य सुवर्णमया इत्यर्थः चारुपादा यस्य

অন্তরিত থাকিলে রাত্রির ন্যায়, ব্রহ্মার জন্মস্থানরূপ পদ্মের প্রকাশ হইতে লাগিলে নারায়ণের নাভির ন্যায়, অগস্ত্যের উদয় নিকটবর্ত্তী হইলে দক্ষিণদিকের ন্যায়, এবং ফেনদ্বারা আবৃত অবস্থায় অভ্যন্তরে অমৃতকুম্ভ থাকার সময়ে ক্ষীরোদসাগরের জলবৃদ্ধির ন্যায় বিলাসবতীকে রাজা দর্শন করিলেন; তখন রাণী অত্যন্ত শুভ্রবর্ণ নূতন দু'খানি সূক্ষ্মবস্ত্র পরিধান করিয়াছিলেন, তাহার প্রান্তভাগ গোরোচনাদ্বারা চিত্রিত ছিল।

(ধ) তখন রাজাকে দেখিয়া কোন পরিচারিকা, স্বকীয় হস্ত প্রসারিত করিল, রাণী দক্ষিণহস্তদ্বারা সেই হস্ত ধারণপূর্ব্বক, বামজানুর উপরে বাম-হস্ত বিন্যস্ত করিয়া গাত্রোত্থান করিতে লাগিলেন, সেই অঙ্গসঞ্চালনে চঞ্চলীভূত অলঙ্কারগুলির শব্দ হইতে লাগিল, ইহা দেখিয়া রাজা বলিলেন—"থা'ক্ থা'ক্, এ অবস্থায় অত্যন্ত গৌরব দেখাইবার প্রয়োজন নাই, তুমি উঠিও না।" তাহার পর রাজা রাণীর সহিত সেই শয্যার উপরেই উপবেশন করিলেন। (ন) শুকনাসও নিকটবর্ত্তী অপর কোন শয্যার উপরে বসিলেন, সেই শয্যার উপরেও শুভ্রবর্ণ আস্তরণ-বস্ত্র ছিল এবং তাহার খাটের সোনার পায়াগুলি পরিষ্কার করা ছিল।

(१)…तिलकचित्रित…। (२) मतिधवलं। (३)…आलम्बनावष्टम्भेन। (४) प्रचल…। (५)…चारुपदे।

अथ तामुपारूढगर्भामालोक्य हर्षभरमन्थरेण मनसा प्रस्तुत-परिहासो राजा—"देवि! शुकनासः पृच्छति 'यदाह कुलवर्द्धना किमपि, तत् किं तथैव'?" इत्युवाच। (प) अथाव्यक्त-स्मितच्छुरित-(१) कपोलाधरलोचना लज्जया दशनांशु-जालक-(२) व्याजेनांशुकेनेव मुखमाच्छादयन्ती विलासवती तत्क्षणमधोमुखी तस्थौ। (फ) पुनः पुनश्चानुरुध्यमाना (३) "किं मामतिमात्रं त्रपापरवशां करोषि, नाहं किञ्चिदपि वेद्मि" इत्यभिदधाना तिर्य्यग्-वलित-तारकेण चक्षुषा अवनतमुखी राजानं साभ्यसूयमिवापश्यत्। (ब) अपरिस्फुट-हास-ज्योत्स्ना-विशदेन मुखशशिना भूभुजां पतिरेनां (४) भूयो

तस्मिन्, धवल उपच्छद आस्तरणवस्त्रं यस्मिन् तादृशे, आसन्ने निकटवर्त्तिनि, शयनान्तरे अन्यस्यां शय्यायां। अषीदत् उपाविशत्।

(प) अथेति। उपारूढगर्भामुत्पन्नगर्भाम्। हर्षभरेण आनन्दातिशयेन मन्थरं जड़ं तेन। प्रस्तुत आरब्धः परिहासो येन सः। अत्र प्रश्ने शुकनास इत्यपरकर्तृनिर्देशात् परिहासावगमः।

(फ) अथेति। अव्यक्तं अस्पष्टं यत् स्मितं मन्दहास्यं तेन छुरितानि रञ्जितानि, कपोलौ गण्डौ अधरौ ओष्ठौ लोचने चक्षुषी च तानि यस्याः, दशनांशुजालकस्य दन्तकिरणसमूहस्य व्याजेन छलेन, अंशुकेनेव श्वेतवसनेनेव। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) पुनरिति। त्रपापरवशां लज्जाधीनां। तिर्य्यग्वलिता वक्रभावेन चलिता तारका यस्य तेन।

(भ) अपरेति। अपरिस्फुटः अस्पष्टो यो हासः स ज्योत्स्ना इव तया विशदेन निर्म्मलेन, मुखं शशीव तेन, उपलक्षणे तृतीया, भूभुजां पतिः राज्ञामधीश्वरस्तारापीड़ः, एनां विलासवतीम्; अत्र चन्द्रेण राज्ञो वैशिष्ट्यासम्भवात् मुखशशिनेत्यत्र उपमितसमास एवाश्रयणीयः तदनुसारात् हासज्योत्स्नेत्यत्राप्युपमित-समास एवेति लुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(প) তদনন্তর রাজা বিলাসবতীকে গর্ভবতী দেখিয়া অত্যন্ত আনন্দে বিহ্বলচিত্ত হইয়া পরিহাস করিয়া বলিলেন—"দেবি! শুকনাস জিজ্ঞাসা করিতেছে;—'কুলবৰ্দ্ধনা যে কিছু বলিয়াছে, তাহা কি সেইরূপই'?" (ফ) তাহার পর অস্পষ্ট মন্দ হাস্য করায় বিলাসবতীর গণ্ডযুগল, ওষ্ঠযুগল ও নয়নযুগল প্রফুল্ল হইল, তখন তিনি লজ্জাবশতঃ দন্তকিরণচ্ছলে বস্ত্রদ্বারাই যেন মুখ আচ্ছাদন করিয়া অধোমুখ হইয়া রহিলেন। (ব) রাজা বারংবার অনুরোধ করিতে লাগিলে বলিলেন—"আমাকে অত্যন্ত লজ্জিত করিতেছ কেন, আমি কিছুই জানি না" এই কথা বলিয়া অবনতমুখে বক্র-নয়নে রাজার প্রতি অত্যন্ত অসূয়ার সহিতই যেন একবার দৃষ্টিপাত করিলেন। (ভ) তখন জ্যোৎস্নার ন্যায় অস্পষ্ট

(१) अव्यक्तच्छुरित…। (२) दशनांशुकजाल…। (३) अनुबध्यमाना।
(४) क्वचित् 'एनां' इति नास्ति।

बभाषे—(भ) "सुतनु! यदि मदीयेन वचसा (१) तव त्रपा वितन्यते, तदय-महं स्थितो निभृतम्। (म) अस्य तु किं प्रतिविधास्यसि विघटमान-दल-कोश विशद-चम्पक-द्युतेः सवर्णतया परिमलानुमीयमान-कुङ्कुमाङ्गरागस्य (२) पाण्डुरतामापद्यमानस्य वर्णस्य, (३) (य) अनयोश्च गर्भसम्भवामृतावसेक-(४) निर्वाप्यमान-शोकानलप्रभवं धूममिव वमतोः (५) आननगृहीत-(६) नीलोत्-

---

(भ) सुतन्विति। हे सुतनु! सुन्दरशरीरि! त्रपा लज्जा। निभृतं तूष्णीम्।

(म) अस्येति। विघटमानानि प्रकाशमानानि दलानि यस्य स तादृशः कोशो मुकुलं यस्य तस्य तथोक्तस्य विशदस्य निर्मलस्य चम्पकस्य चम्पककुसुमस्य द्युतेः कान्तेः सवर्णतया तुल्यवर्णतया हेतुना, परिमलेन केवलसौरभेण अनुमीयमानः कुङ्कुमाङ्गरागः वाह्लीकदेशजात-पाण्डुरकुङ्कुमानुलेपनं यस्मिन् तस्य, "वाह्लीकदेशसञ्जातं कुङ्कुमं पाण्डुरं भवेत्" इति भावप्रकाशवचनात्. कुङ्कुमाङ्गरागः शरीरवर्णश्चेत्युभयमपि चम्पकवत् समानपाण्डुरमिति पृथक्तया प्रत्यक्षासम्भवात् कुङ्कुमाङ्गरागः परिमलेनानुमीयत इति भावः, पाण्डुरतां गर्भस्वभावात् पाण्डुत्वं आपद्यमानस्य प्राप्नुवतः, अस्य दृश्यमानस्य, वर्णस्य तव शरीरकान्तेः किं प्रतिविधास्यसि कं प्रतीकारं करिष्यसि। तव लज्जामाशङ्क्य मयि तूष्णीम्भूतेऽपि गर्भस्वभावेन स्वयं प्रकाशमानायाः शरीरपाण्डुरतायाः सर्वथैव गोपनासम्भव इति भावः। अत्र परिमलेत्यादिना सामान्यं नामालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनाऽलङ्कारध्वनिः।

(य) अनयोरिति। गर्भस्य सम्भव उत्पत्तिरेव अमृतं तस्य अवसेकेन निर्वाप्यमानो निर्वाणं नीयमानः शोकः पुत्रानुत्पत्तिजनितो विषाद एवानलस्तस्मात् प्रभवति उत्पद्यत इति तं, धूमं वमतोरुद्गिरतोरिव, श्याममुखत्वादिति भावः। अत्र परम्परितरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। आननयोर्गृहीते नीलोत्पले याभ्यां तयोश्चक्रवाकयोः पक्षिणोरिव स्थितयोरित्युपमा। तमालपल्लवाभ्यां लाञ्छिते चिह्निते मुखे उपरिभागद्वयं ययोस्तयोः कनककलसयोरिव स्थितयोरित्यप्युपमा। सकृदेकवारमात्रं न तु पूर्ववत् प्रतिदिनमिति भावः, आलिखिते चित्रिते कृष्णागुरुपङ्केन गाढ़कृष्णागुरुद्रवेण पत्रलते पत्रवल्लीद्वयं

হাস্তে রাজরাজেশ্বরের মুখ-চন্দ্র প্রফুল্ল হইল, তিনি পুনরায় বলিলেন—(ম) "সুন্দরি! আমার বাক্যেই যদি তোমার লজ্জা জন্মাইয়া থাকে, তবে এই আমি চুপ করিয়া থাকিলাম। (ষ) কিন্তু তোমার শরীরের এই বর্ণটি, প্রকাশমান নির্ম্মল চম্পক-কুসুম-কান্তির সমান বলিয়া ইহার কুঙ্কুমাঙ্গলেপন সৌরভদ্বারাই অনুমিত হইতেছে, এবং ইহা ক্রমে পাণ্ডুতা প্রাপ্ত হইতেছে; সুতরাং তুমি ইহার কি প্রতিবিধান করিবে? (র) আর এই স্তনযুগলের অগ্রভাগ শ্যামবর্ণ হইয়া গিয়াছে, তাহাতে বোধ হইতেছে যে, 'গর্ভোৎপত্তিরূপ অমৃতসেকে শোকানল নির্ব্বাপিত হইয়াছে, তাহার ধূম যেন উদ্গিরণ করিতেছে' এবং মুখে নীলোৎপলধারী চক্রবাক-পক্ষিযুগলের ন্যায় এবং তমালপল্লবদ্বারা আবৃতমুখ

---

(१) मदीयवचसा। (२)…मानस्य कुङ्कुमाङ्गरागस्य। (३) क्वचित् वर्णस्य इति नास्ति।
(४) गर्भसम्भवावसेक। (५) वहतोः। (६) अनामृष्ट-हीत, गृहीत…।

पल्लयोरिव चक्रवाकयोः तमालपल्लवलाञ्छितमुखयोरिव कनककलसयोः सकृद्दिवा-लिखित-(१) कृष्णागुरुपङ्कपत्रलतयोः श्यामायमानचुचुकयोः पयोधरयोः, (र) अस्य च प्रतिदिनमतिगाढ़तामापद्यमानेन (२) काञ्चीकलापेन दूयमानस्य नश्यत्त्रिवलिलेखावलयस्य कृशिमानमुज्झतो मध्यभागस्य," (ल) इत्येवं ब्रुवाणमवनिपालमन्तर्मुख-विनिगूढ़हासः (३) शुकनासः—"देव! किमायासयसि देवीम्, इयमनया कथयापि लज्जते, त्यज कुलवर्द्धना-कथित-वार्त्ता-सम्बद्धमालापम् (४)" इत्यब्रवीत्। एवंविधाभिश्च नर्म्मप्रायाभिः कथाभिः सुचिरं स्थित्वा शुकनासः स्वभवनमयासीत्। नरेन्द्रोऽपि तस्मिन्नेव वासगृहे तया सह तां निशामत्यवाहयत्। (व)

यमस्तयोरिव स्थितयोरिति क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तया श्यामायमाने चुचुके अग्रभागद्वयं ययोस्तयोः "चुचुकन्तु कुचाग्रं स्या"दित्यमरः। अनयोश्च पयोधरयोः स्तनयोः किं प्रतिविधास्यसीत्यन्वयः। अनयोरपि गर्भलक्षण-प्रकाशकत्वं दुर्निवारमेवेति भावः।

(ल) अस्येति। अतिगाढ़तां मध्यभागस्य क्रमेण स्थूलतया दृढ़संलग्नत्वम्। काञ्चीकलापेन रशना-दाम्ना, दूयमानस्य अतिदृढ़संलग्नतया पीड्यमानस्य, नश्यत् उदरपीवरत्वेन क्रमेण विलोपं प्राप्नुवत्, त्रिवलि-लेखानां वलित्रयरूपरेखाणां वलयं मण्डलं यस्मिन् तस्य, कृशस्य भावः कृशिमा तं पूर्व्वकृशत्वं, उज्झतः क्रमेण त्यजतः, अस्य च मध्यभागस्य उदरस्य किं प्रतिविधास्यसीत्यन्वयः। अस्यापि सर्व्वजनैर्गर्भलक्षणतयाऽव-गम्यमानत्वाद्गोपनासम्भव इति भावः।

(व) इत्येवमिति। अन्तर्मुखं मुखमध्ये विनिगूढ़ो गाम्भीर्य्यभङ्गभयेन संवृतो हासो येन सः। नर्म्मप्रायाभिः परिहासबहुलाभिः।

স্বর্ণকুম্ভদ্বয়ের ন্যায় দেখা যাইতেছে; আর কৃষ্ণাগুরুদ্বারা ইহাদের উপরে একবারমাত্র যেন পত্রলতা চিত্র করিয়া রাখা হইয়াছে বলিয়া প্রতীতি হইতেছে; ইহারই বা কি প্রতি-বিধান করিবে? (ল) আর তোমার উদরটি দিন দিন পূর্ব্বের কৃশতা পরিত্যাগ করিতেছে (ক্রমে মোটা হইতেছে); তাহাতে উহার থরগুলি ক্রমে বিলুপ্ত হইয়া যাইতেছে এবং চন্দ্রহার অত্যন্ত লাগিয়া পড়ায় ব্যথা পাইতেছ, ইহারই বা তুমি কি প্রতীকার করিবে?"—(ব) রাজা এইরূপ বলিতেছিলেন, তখন শুকনাস মুখমধ্যেই হাস্য সংবরণ করিয়া বলিলেন—'মহারাজ! কেন মহিষীকে কষ্ট দিতেছেন, ইনি এই কথাতেও লজ্জিত হইতেছেন; সুতরাং কুল-বর্দ্ধনা যে সংবাদ বলিয়াছে, সে বিষয়ের আলাপ পরিত্যাগ করুন।' এই জাতীয় পরিহাস-ময় কথোপকথনে সেই স্থানে বহু সময় অবস্থান করিয়া শুকনাস নিজ গৃহে চলিয়া গেলেন; রাজাও সেই বাসগৃহেই রাণীর সহিত সেই রাত্রি অতিবাহিত করিলেন।

(१) लिखित...। (२) अतिगाढ़तरतां, आपाद्यमानेन।
(३) अन्तर्मुखहासः, सुखनिगूढ़हासः। (४) आलापकं, आलापमपि।

ततः क्रमेण यथासमीहित-(१) गर्भदोहद-सम्पादन-प्रमुदिता पूर्णे प्रसव-समये पुण्येऽहनि अनवरत-गलन्नाड़िका-कलित-काल-कलैः (२) वहिरागृहीत-च्छायैर्गणकैर्गृहीते लग्ने प्रशस्तायां वेलायामिरम्मदमिदमिव मेघमाला (३) सकल-लोकहृदयानन्दकारिणं विलासवती सुतमसूत। (श) तस्मिन् जाते सरभसमितस्ततः प्रधावितस्य परिजनस्य चरणशत-संक्षोभ-चलित-क्षितितलो

(श) तत इति। यथासमीहितेन यथाचेष्टितेन शक्त्यनुरूपेणेत्यर्थः गर्भदोहदस्य गर्भकालीनेच्छायाः सम्पादनेन पूरणेन प्रमुदिता विशेषहृष्टा विलासवती। गर्भसमये हि योषितस्तत्तदिच्छायाः पूरणं यथा-सामर्थ्यमवश्यकर्त्तव्यम्। तथाचोक्तमभियुक्तैः—

"गर्भिण्यास्तत्तदिच्छायां विशेषेण प्रयुज्यते। दोहदस्याप्रदानेन गर्भो दोषमवाप्नुयात्।"

पूर्णे उपस्थित इत्यर्थः। पुण्येऽहनि शुभदिने। अनवरतं गलन्तीभिः जलस्राविणीभिः नाड़िकाभिर्घटिकाभिः समयनिरूपकयन्त्रविशेषैः कलिता अवगताः कालकलाः सूक्ष्मकालांशा यैस्तैः। "नाड़िका (स्त्री) षट्क्षणः। घड़ि इति भाषा" इति शब्दकल्पद्रुमः। सा तु सार्द्धद्वादशपलपरिमिततास्रनिर्म्मितः सार्द्धद्वादशपलपरिमित-जलपूरणीयः पञ्चरत्तिकापरिमितस्वर्णनिर्म्मितशलाकया अधश्छिद्रसंयुक्तो यन्त्रविशेषः। तया च शलाकया जलविन्दुपतनात्तज्जले च चिह्नविशेषोपगते पूर्वं समयनिरूपणरीतिरासीत्। एतद्विस्तरप्रकारान्तराणि विष्णुपुराणे समनुसन्धेयानि। तथा वहिः प्राङ्गणादौ आगृहीता निरूपिता छाया पादच्छाया शङ्कुच्छाया वा यैस्तैः। पादच्छायाग्रहणप्रणाल्यापि पूर्वं समयनिरूपणरीतिरासीत्। तथा च ज्योतिषे—"पच्छायां द्विगुणीकृत्य चतुर्दश-समन्वितम्। पञ्चग्रहकराद्भागलब्धं दण्डादिकं भवेत्।" गृहीते निरूपिते। प्रशस्तायां उच्चस्थैर्ग्रहैर्जात-कस्य सुखसौभाग्यसूचिकायां, वेलायां समये, मेघमाला, इरया जलेन माद्यतीति इरम्मदो मेघोत्पन्नवह्नि-स्तमिव, "वहंलिहाभ्रंलिहपरन्तपेरम्मदाश्च" इति खश्-प्रत्ययान्तो निपातः "मेघज्योतिरिरम्मदः" इत्यमरः। अत्रो-पमालङ्कारः।

(ष) तस्मिन्निति। तस्मिन् राजपुत्रे जाते राजकुले अतिमहान् दिष्टिवृद्धिसम्भ्रमः राज्ञः सौभाग्यवृद्धिजन्या लोकानां त्वरा अभूदित्यन्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि सम्भ्रम इत्यस्य विशेषणानि। सरभसं सहर्षम्।

(শ) তাহার পর রাণী গর্ভকালীন যে যে ইচ্ছা প্রকাশ করিতেন, রাজা শক্তি অনুসারে সে সমস্তই পরিপূরণ করিতেন বলিয়া রাণী অত্যন্ত আনন্দিত ছিলেন; ক্রমে প্রসবের কাল উপস্থিত হইলে কোন শুভদিনে ঘটিকাযন্ত্র হইতে অবিশ্রান্ত জলবিন্দু পতিত হইতেছিল, তাহাদ্বারা কোন কোন দৈবজ্ঞ সূক্ষ্ম সময় নিরূপণ করিতেছিলেন; আবার কোন কোন দৈবজ্ঞ বাহিরে যাইয়া পায়ের ছায়া মাপিয়া লগ্ন নিরূপণ করিতেছিলেন—এই অবস্থায় মেঘশ্রেণী যেমন অগ্নি প্রসব করে, সেইরূপ বিলাসবতী প্রশস্ত সময়ে সকল লোকের হৃদয়া-নন্দকারী একটি পুত্র প্রসব করিলেন। (ষ) সেই রাজপুত্র জন্মিলে রাজার সৌভাগ্য-বৃদ্ধিনিবন্ধন রাজবাটীতে লোকের খুব হুড়াহুড়ী হইতে লাগিল; পরিজনবর্গ আনন্দের

---

(१) समीहित..., समुचित...। (२)...कलि:...कलै। (३) जलधरमाला।

भूपालाभिमुख-प्रसृत-स्खलद्गति-विकल-(१) कञ्चुकिसहस्रो जन-सम्मर्द-निष्पिष्यमाण-पतित-कुब्ज-वामन-किरातगणो विस्फार्यमाणान्तःपुर-(२) जनाभरण-झङ्कार-मनोहरः पूर्णपात्राहरण-(३) विलुण्ठ्यमान-(४) वसनभूषणः संक्षोभित-नगरो राजकुले दिष्टिवृद्धिसम्भ्रमोऽतिमहानभूत्। (स) अनन्तरञ्च मन्दर-मथ्यमान-(५) जलनिधि-(६) घोष-गम्भीर-दुन्दुभि-ध्वान-पुरःसरेण प्रहत-मृदु-मृदङ्ग-शङ्ख-काहलानक-निवह-निनाद-निर्भरेण (७) मङ्गल-पटह-पटु-रव-

---

चरणानां शतस्य समूहस्य संक्षोभेण आघातेन चलितं कम्पितं क्षितितलं यस्मिन् सः। भूपालाभिमुखं सत् प्रसृतं वार्त्तामभिधातुं प्रस्थितं स्खलद्गति भ्रष्टगमनं विकलं आनन्दसमाकुलञ्च कञ्चुकिसहस्रं अन्तःपुरचररक्षकब्राह्मणसमूहो यस्मिन् सः। जनानां सम्मर्द्देन संघर्षेण निष्पिष्यमाणः अतएव पतितः, कुब्जानां वामनानां खर्वाकृतीनां किरातानां क्षुद्रदेहानाञ्च गणो यस्मिन् सः। "किरातः स्यादल्पतनौ" इत्यादि हेमः। विस्फार्यमाणो वृद्धिं नीयमानो यः अन्तःपुरजनानामाभरणझङ्कारः तेन मनोहरः। उत्सवे सुहृद्भिर्यानि बलादाकृष्य नीयन्ते तानि पूर्णपात्राणि तेषामाहरणेन ग्रहणेन विलुण्ठ्यमानानि हस्ताहस्तिकरणसम्भ्रमेण पतितानि वसनानि भूषणानि च यस्मिन् सः। "वर्द्धापकं यदानन्दादलङ्कारादिकं पुनः। आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकञ्च तत्।" इति हारावली। संक्षोभितमुद्वेलितं नगरं राजधानी येन सः। राजकुले राजवाटे।

(स) अनन्तरमिति। मन्दरेण पर्वतेन मथ्यमानस्य जलनिधेः समुद्रस्य घोषवत् शब्दवत् गम्भीरो दुन्दुभिध्वानः भेरीशब्दः पुरःसरो यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। प्रहता वादिता ये मृदवः कोमलध्वनिकारिणः मृदङ्गाः, शङ्खाः काहला वाद्यविशेषाः आनकाः पटहाश्च तेषां निवहस्य समूहस्य निनादेन निर्भरः अतिमात्रो वर्द्धित इत्यर्थः तेन। मङ्गलपटहानां माङ्गलिकढक्कानां पटुरवैर्विशालध्वनिभिः संवर्द्धितेन। अनेकेषां जनसहस्राणां कलकलैः कोलाहलैर्बहुलो विशालीभूतस्तेन। सामन्तैः समीपवर्त्तिभि-

---

সহিত ইতস্ততঃ ধাবিত হইতে লাগিল, তাহাদের চরণের আঘাতে ভূতল কাঁপিয়া উঠিল, কঞ্চুকিগণ আনন্দে আকুল হইয়া রাজার নিকট সংবাদ বলিবার জন্য স্খলিত গতিতে ধাবিত হইতে লাগিলেন, কুব্জ, বামন (খর্ব্বদেহ, বামনবীর) ও কৃশশরীর লোক সকল লোকের ঠেসাঠেসিতে নিষ্পেষিত হইয়া ভূতলে পড়িয়া যাইতে লাগিল, অন্তঃপুরস্থ রমণীগণের অলঙ্কারের বৃহৎ ও মনোহর ঝঙ্কার শুনা যাইতে লাগিল, লোকের গাত্র হইতে অপর লোক বলপূর্ব্বক বসন-ভূষণ টানিয়া লইতেছিল, তাহাতে অনেক বসন ও ভূষণ ভূতলে লুণ্ঠিত হইতেছিল, এই অবস্থায় রাজধানী একেবারে উদ্বেলিত হইয়া উঠিল। (স) তদনন্তর ত্রিভুবন পরিপূর্ণ করিয়া সেই মহোৎসবের কোলাহল হইতে লাগিল; মন্দরপর্ব্বতদ্বারা মথ্যমান সমুদ্রের শব্দের ন্যায় গম্ভীর দুন্দুভির শব্দ, সকল শব্দের অগ্রে অগ্রে চলিতে লাগিল; কোমলশব্দকারী মৃদঙ্গ,

---

(१)...स्रस्त...। (२) घूर्णमानान्तःपुर...। (३) पूर्णपात्रहरण...। (४)...विलुप्यमान...।
(५) मन्दरारांध्यमान...। (६)...जलधि...। (७)...निवहनिर्भरेण।

संवर्द्धितेन अनेक-जन-सहस्र-कलकल-बहुलेन त्रिभुवनमापूरयता उत्सवकोला-हलेन ससामन्ताः सान्तःपुराः (१) सप्रकृतयः सराजलोकाः सवेश्यायुवतयः सबालवृद्धा नन्तृतुरागोपालमुन्मत्ता इव हर्षनिर्भराः प्रजाः। (ख) प्रतिक्षणं (२) अवर्द्धत चन्द्रोदयेनेव जलनिधिः (३) कलकलमुखरो राजसूनोर्जन्म-(४) महोत्सवः। (ङ)

पार्थिवस्तु तनयानन-दर्शन-महोत्सव-(५) हृतहृदयोऽपि दिवसवशेन मौहूर्त्तिकगणोपदिष्टे प्रशस्ते मुहूर्त्ते निवारित-निखिलपरिजनः शुकनास-द्वितीयः (च) मणिमय-(६) मङ्गलकलसयुगलाशून्येन आसक्त-बहुपुत्रिका-

नृपतिभिः सहेति ससामन्ताः, अन्तःपुरैरन्तःपुरस्थजनैः सहेति सान्तःपुराः, प्रकृतिभिः पुरवासिभिः सहेति सप्रकृतयः, राजलोकैः राजपुरुषैः सहेति सराजलोकाः, वेश्यायुवतिभिः सहेति सवेश्यायुवतयः, बालै-वृद्धैश्च सहेति सबालवृद्धाः, प्रजाः हर्षनिर्भरा आनन्दपूर्णाः सत्यः उन्मत्ता इव, गोपालान् वल्लवान् मर्य्यादी-कृत्येति आगोपालं यथा स्यात्तथा नन्तृतुः नृत्यचक्रुः।

(ङ) प्रतीति। चन्द्रोदयेन जलनिधिरिव, कलकलैः कोलाहलैर्मुखरः शब्दायमानः, राजसूनो राजपुत्रस्य जन्ममहोत्सवः प्रतिक्षणं अवर्द्धत। श्रौतोपमालङ्कारः।

(च) पार्थिव इति। पार्थिवो राजा सूतिकागृहमपश्यदिति बहुपरवर्त्तिन्या क्रियया अन्वयः। तनयाननस्य पुत्रमुखस्य दर्शनमेव महोत्सवः तेन हृतहृदयोऽपि आकृष्टचित्तोऽपि, दिवसवशेन शुभसमयानु-रोधेन, मौहूर्त्तिकगणोपदिष्टे दैवज्ञगणनिर्दिष्टे। निवारिताः सह गमनाय निषिद्धाः निखिलाः परि-जना येन सः, शुकनास एव द्वितीयः सहचरो यस्य सः।

(छ) मणीति। इतश्चतायान्तपदानि वक्ष्यमाणद्वारदेशेनेत्यस्य विशेषणानि। मणिमयेन मङ्गल-

শঙ্খ, বৃহৎ ঢাক ও ছোট ঢাক প্রভৃতির শব্দে সেই কোলাহল বৃদ্ধি পাইতে লাগিল এবং জয়ঢাকের বিশাল শব্দে ও বহু সহস্র লোকের কোলাহলে সেই উৎসব-কোলাহল অতিশয় বাড়িয়া উঠিল, তখন সামন্তরাজগণ, অন্তঃপুরের পরিজনগণ, পুরবাসিগণ, রাজপুরুষগণ, বেশ্যাগণ এবং বালক ও বৃদ্ধগণের সহিত গোপালক হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত প্রজাবর্গ আনন্দে পরিপূর্ণ হইয়া উন্মত্তের ন্যায় নৃত্য করিতে লাগিল। (ঙ) রাজপুত্রের সেই জন্মমহোৎসব কোলাহলে পরিপূর্ণ হইয়া চন্দ্রোদয়ে সমুদ্রের ন্যায় ক্রমে বৃদ্ধি পাইতে লাগিল।

(চ) কিন্তু রাজা পূর্ব্বেই পুত্রের মুখদর্শনরূপ মহোৎসবে আকৃষ্টচিত্ত হইয়াও শুভ সময়ের অনুরোধে দৈবজ্ঞগণের উপদেশ অনুসারে প্রশস্ত মুহূর্ত্তে অন্যান্য পরিজনদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া কেবল শুকনাসের সহিত যাইয়া সূতিকাগৃহ দর্শন করিলেন। (ছ) সেই সূতিকাগৃহের দ্বারের উভয় পার্শ্বে মঙ্গলের নিমিত্ত দুইটি মণিময় কলস স্থাপিত ছিল, তাহার

(१) सान्तःपुरजनः। (२) प्रतिदिनम्। (३) जलधिः। (४) जन्मनो....।
(५)...दर्शनोत्सव....। (६) कनकमय...।

लङ्कृतेन (१) विविध-नव-(२) पल्लव-निवह-निरन्तर-निचितेन सन्निहित-कनक-मय-हल-मुसल-युगेन विरल-ग्रथित-सित-कुसुम-मिश्र-दूर्वा-प्रवाल-मालालङ्कृतेन आलम्बिताविकल-(३) व्याघ्रचर्मणा वन्दन-मालाऽ-(४) न्तराल-घटित-घण्टा-गणेन द्वारदेशेन (५) विराजमानम्, (क) उभयतश्च द्वारपक्षकयोर्मर्यादा-निपुणेन गोमयमयीभिरुत्तान-विनिहित-वराटक-प्रकर-(६) दन्तुराभिः अन्तरा-न्तराबद्ध-विविध-वर्ण-(७) राग-रुचिर-कार्पास-(८) कुसुम-लेश-लाञ्छिताभिः

कलसयुगलेन अग्रन्थः अविरहितः संयुक्तस्तेन। आसक्ताभिः सम्मिलिताभिरुपस्थिताभिः बहुपुत्रिकाभि-र्बहुपुत्रशालिनीभिः स्त्रीभिः अलङ्कृतः शोभितस्तेन। सन्तानरक्षोपदेशाय तासामुपस्थितिरिति बोध्यम्। विविधानां नानाप्रकाराणां नवानां नूतनानां पल्लवानां निवहेन समूहेन निरन्तरं घनं यथा स्यात्तथा निचिता व्याप्तस्तेन। कलसयुगलोपर्य्येवामीभिः पल्लवैर्व्याप्तिरिति ज्ञेयम्। सन्निहितं इलव्यवहारादासन्नं कनकमययोः हलमुसलयोर्युगं यत्र तेन। विरलं अघनं यथा स्यात्तथा ग्रथितैः सूत्रेण गुम्फितैः सित-कुसुमैः श्वेतपुष्पैः मिश्राः संयुक्ता ये दूर्वाप्रवाला दूर्वापल्लवास्तेषां मालया स्रजा अलङ्कृतः शोभितस्तेन। अग्रभागनिवारणार्थमिदमलङ्करणम्। "वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे।" इति त्रिकाण्डशेषः। आलम्बितं आचारादेकपार्श्वे द्वारावरणार्थमवलम्बितं अविकलं अखण्डं व्याघ्रचर्म यस्मिन् तेन। तथा वन्दनमालायास्तोरणोपरि विन्यस्ताया: कुसुममालायाः, अन्तराले मध्ये मध्ये घटिता ग्रथिता घण्टागणा यस्मिन् तेन। "तोरणार्थं तु मङ्गल्यं दाम वन्दनमालिका।" इत्यभिधानचिन्तामणिः। ईदृशेन द्वारदेशेन विराजमानमिति सूतिकागृहविशेषणम्।

(ख) उभयत इति। किञ्चेति चार्थः। मर्य्यादानिपुणेन कौलिकनियमाभिज्ञेन। इत्यतस्तृतीयैक-वचनान्तपुंलिङ्गपदानि 'पुरन्ध्रिवर्गेण समधिष्ठित'मिति वक्ष्यमाणसूतिकागृहविशेषणीभूतवाक्यगतस्य पुरन्ध्रि-वर्गेत्यस्य विशेषणानि। द्वारपक्षकयोर्द्वारपार्श्वयोः उभयत उभयभागयोः। वक्ष्यमाणस्य स्वस्तिकभक्ति-

: উপরে ঘনভাবে নানাবিধ নূতন পল্লব বিন্যস্ত ছিল, বহুপুত্রশালিনী রমণীগণ সে স্থানে উপস্থিত হইয়া শোভাবৰ্দ্ধন করিতেছিল, স্বর্ণময় একখানা হল ও একটা মুষল রাখা হইয়াছিল, সাদা ফুল ও দূর্ব্বার পল্লব দিয়া ফাঁক্ ফাঁক্ করিয়া গাঁথা এক ছড়া মালা দিয়া সেই দ্বারের শোভা করা হইয়াছিল, পূরা একখানা বাঘের চামড়া এক পাশে ঝুলান ছিল, আর তোরণের উপরে এক ছড়া ফুলের মালা লম্বা করিয়া দেওয়া ছিল, তাহার মাঝে মাঝে ছোট ছোট ঘণ্টা গাঁথা ছিল— এইরূপ দো'রে সেই সূতিকাঘর বেশ শোভা পাইতেছিল। (খ) কৌলিক আচারে অভিজ্ঞ পতিপুত্রবতী রমণীগণের মধ্যে কেহ কেহ সেই দ্বারের উভয় পার্শ্বে গোময় দ্বারা লেপ দিয়া, তাহার উপরে চিৎ করিয়া কতকগুলি কড়ি দিয়াছিল, তাহাতে সেই লেপটি

(१)...पुत्रिकाप्रतानेन। (२)...बल...। (३)...अविरल...। (४) माला, मालिका...।
(५) द्वारेण। (६)...वराटकदन्तुराभिः। (७)...पर्ण...। (८) कूर्पास..., कर्पास...।

कुसुम्भ-केसर-लवाश्लेष-लोहिताभिर्लेखाभिरालिखित--स्वस्तिक - भक्तिजालमुपरच-यता (ख) हारिद्र-द्रव-(१) विच्छुरण-परिपिञ्जराम्बर-(२) धारिणीं भगवतीं षष्ठी-देवीं कुर्वता (ग) विकच-पक्षपुट-विकट-शिखण्डि-पृष्ठमण्डला-(३) धिरूढं आलोल-लोहित-पट-घटित-पताकं उल्लसित-शक्तिदण्ड-प्रचण्डं कार्त्तिकेयं सङ्घटयता (४) (घ) विन्यस्तालक्तक-पटल-पाटल-मध्यभागौ सूर्य्याचन्द्रमसावा-

---

जालमित्यस्याधिकरणमेतत्। गोमयमयीभिर्गोमयेन कृताभिः, उत्तानं ऊर्द्धमुखं यथा स्यात्तथा विनिहितेन स्थापितेन वराटकानां कपर्द्दकानां प्रकरेण समूहेन दन्तुराभिर्विषमीकृताभिः, अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये बद्धैरर्पितैः विविधैर्नानाप्रकारैः वर्णैर्नीलपीतादिभिः यो रागो रञ्जनं तेन रुचिराणि मनोहराणि यानि कार्पासकुसुमानि तेषां लवैः क्षुद्रक्षुद्रखण्डैः लाञ्छिताभिश्चिह्निताभिः। कुसुम्भानां कुसुम्भपुष्पाणां ये केसर-लवाः किञ्जल्ककणास्तेषां आश्लेषेण संयोगेन लोहिता रक्तवर्णास्ताभिः, लेखाभिर्लिपिभिः, आलिखितानां चित्रितानां स्वस्तिकभक्तीनां त्रिकोणरचनाविशेषाणां जालं समूहं उपरचयता विदधता।

(ग) हारिद्रेति। हरिद्राया अयमिति हारिद्रो यो द्रवो रसस्तेन यद्विच्छुरणं रञ्जनं तेन परि-पिञ्जरं सर्वतः पिङ्गलवर्णं अम्बरं वस्त्रं धारयति परिदधाति या सा तथोक्ता ताम्। षष्ठीदेवीं षष्ठीदेवीप्रतिमां कुर्वता पिष्टतण्डुलैर्विदधता।

(घ) विकचेति। विकचेन प्रस्फुटेन विस्तृतेन पक्षपुटेन पक्षद्वयेन विकटं विशालं यत् शिखण्डिनो मयूरस्य पृष्ठमण्डलं तत्र अधिरूढं आरूढम्। आलोला चञ्चला लोहितपटघटिता रक्तवर्णवस्त्रनिर्म्मिता पताका यस्य तम्। तथा उल्लसितेन उत्तोल्य गृहीतेन शक्तिदण्डेन शक्तिनामकास्त्रेण प्रचण्डो भयङ्करस्तं, कार्त्ति-केयं कार्त्तिकेयप्रतिमां सङ्घटयता तण्डुलपिष्टेनैव कुर्वता। बालकरक्षार्थमेतत् प्रतिमाद्वयनिर्म्माणमिति बोध्यम्।

(ङ) विन्यस्तेति। विन्यस्तेन अर्पितेन अलक्तकपटलेन लाक्षारससमूहेन पाटलौ आरक्तौ मध्यभागौ ययोस्तौ, सूर्य्याचन्द्रमसौ सूर्य्याचन्द्रमसोः प्रतिमाद्वयं आवध्नता तण्डुलपिष्टेनैव कुर्वता।

উচু-নীচু হইয়াছিল, নানাবিধ বর্ণদ্বারা রঞ্জিত করায় মনোহর কার্পাস-কুসুমের কণাদ্বারা সেই লেপটিকে আবার চিহ্নিত করিতেছিল, কুসুম-ফুলের কেসর-রেণুর সংযোগে সেই লেপটি রক্তবর্ণ হইয়াছিল,—সেই লেপদ্বারাই আবার চিত্রিত স্বস্তিক (ত্রিকোণাকার দ্রব্য) নির্ম্মাণ করিতেছিল; (গ) কেহ, ভগবতী ষষ্ঠীদেবীর প্রতিমা নির্ম্মাণ করিয়া তাহাকে হরিদ্রার রসে রঞ্জিত পিঙ্গলবর্ণ বস্ত্র পরিধান করাইতেছিল; (ঘ) কেহ, পক্ষযুগল বিস্তৃত করায় বিশাল ময়ূরের পৃষ্ঠে আরূঢ়, চঞ্চল রক্তবর্ণ পতাকা-সমন্বিত এবং শক্তি অস্ত্র উত্তোলন করায় ভয়ঙ্কর-মূর্ত্তি এইরূপ কার্ত্তিকেয়-প্রতিমা নির্ম্মাণ করিতেছিল; (ঙ) কেহ, মধ্যস্থান আলতার রসে রক্তবর্ণ করিয়া চন্দ্র ও সূর্য্যের প্রতিমা নির্ম্মাণ করিতেছিল;

---

(१) हारिद्रद्राव..., हरिद्रद्रव...। (२)...पिञ्जरिताम्बर।

(३)...शिखण्डिमण्डल..., शिखिपृष्ठमण्डल...। (४) संघट्टयता।

बध्नता (ङ) कुङ्कुम-पङ्क-पिञ्जरीकृतां ऊर्द्धप्रोत-कनकमय-यव-निकर-कण्टकितां अविरल-लग्न-गौर-सिद्धार्थक-प्रकरतया (१) काञ्चनरस-खचितामिव मृन्मय-गुटिका-कदम्ब-मालां विन्यस्यता (च) चन्दनजलधवलितेषु भित्तिशिखर-भागेषु पञ्चराग-विचित्र-चेल चीर-कलाप-चित्रिताम् आपीतपिष्टातक-(२) पङ्का-ङ्कितां वर्द्धमानक-(३) परम्परां अन्यानि च सूतिकागृह-(४) मण्डनमङ्गलानि सम्पादयता पुरन्ध्रिवर्गेण समधिष्ठितम्, (छ) उपहार-संयत-विविध-गन्ध-

(ङ) कुङ्कुमेति। कुङ्कुमपङ्केन गाढ़कुङ्कुमरसेन पिञ्जरीकृतां पिङ्गलवर्णीकृतां। ऊर्द्धं उपरिभागे प्रोताः स्यूता निखाता ये कनकमयाः सुवर्णनिर्म्मिता यवाः तेषां निकरेण समूहेन कण्टकिता सञ्जात-कण्टका तां विषमीकृतामित्यर्थः। अविरलं घनं यथा स्यात्तथा लग्नः संसक्तः गौरसिद्धार्थकानां श्वेत-सर्षपाणां प्रकरः समूहो यत्र तस्य भावस्तया हेतुना, काञ्चनरसेन तरलीकृतसुवर्णेन खचितां लिप्तामिव स्थितामिति क्रियानुप्रेक्षालङ्कारः। मृन्मयगुटिका मृत्तिकानिर्म्मितगुलिका एव कदम्बानि कदम्बकुसुमानि तेषां मालां श्रेणीं विन्यस्यता भूमौ स्थापयता। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः।

(च) चन्दनेति। चन्दनजलेन धवलितेषु शुभ्रीकृतेषु, भित्तीनां शिखरभागेषु उपरिदेशेषु, पञ्चभिः रज्यते एभिरिति रागा वर्णास्तैः विचित्राणां चेलचीराणां वस्त्रखण्डानां कलापेन समूहेन चित्रितां नाना-वर्णतामित्यर्थः, तथा आपीतानां ईषत्पीतवर्णानां पिष्टातकानां पटवासानां पङ्केन गाढ़द्रवेण अङ्कितां चिह्नितां चित्रितामित्यर्थः, वर्द्धमानकपरम्परां शरावश्रेणीं "शरावो वर्द्धमानक" इत्यमरः। सूतिकागृहस्य मण्डन-मङ्गलानि शोभाविधानरूपशुभकार्य्याणि सम्पादयता विदधता पुरन्ध्रिवर्गेण पतिपुत्रवतीनां नारीणां समूहेन समधिष्ठितं आश्रितम्।

(छ) उपेति। उपहारे द्वारसमीपे संयतो बद्धः, विविधानां नानाप्रकाराणां गन्धकुसुमानां सुगन्धि-पुष्पाणां मालया अलङ्कृतः जरन् वृद्धश्छागो यस्य तत्।

(ङ) কেহ কেহ, বহুতর মৃত্তিকার গুটী সাজাইয়া রাখিতেছিল; সেগুলি কুঙ্কুমের জলে পিঙ্গলবর্ণ করা হইয়াছিল, উপরে বহুতর সোনার যব পুঁতিয়া দেওয়ায় উঁচু-নীচু হইয়াছিল এবং ঘন ঘন করিয়া শ্বেত সরিষা লাগাইয়া দেওয়ায় যেন স্বর্ণ-খচিত বলিয়া বোধ হইতেছিল, (চ) অন্য কেহ, চন্দনের লেপদ্বারা ধবলীকৃত ভিত্তির উপরিভাগে, পঞ্চবিধ বর্ণে চিত্র করা, কতকগুলি বস্ত্রখণ্ডে বেষ্টিত করিয়া পীতবর্ণ আবীরের লেপে রঞ্জিত করিয়া কতকগুলি শরা শ্রেণীভাবে সাজাইয়া রাখিতেছিল; কেহ কেহ সূতিকা-গৃহের অন্যান্য শোভা-সম্পাদনরূপ মঙ্গল-কার্য্য করিতেছিল; এই ভাবে—কৌলিক আচারে অভিজ্ঞ পতি-পুত্রবতী রমণীগণ সেই সূতিকাগৃহমধ্যে অবস্থান করিতেছিল। (ছ) নানাবিধ সুগন্ধ পুষ্পের মালায় অলঙ্কৃত করিয়া একটা বৃদ্ধ ছাগল দ্বারের নিকটে বাঁধিয়া রাখা হইয়াছিল;

(१) प्रकारतया। (२)...पिष्ट, पिष्टक...। (३) वर्द्धमान...। (४) प्रसवगृह...।

कुसुम-मालालङ्कृत-जरच्छागम्, (ज) अखिल-व्रीहि-मध्यावस्थापितार्य्य-(१) वृद्धाध्यासित-शयनीय-(२) शिरोभागम्, (झ) अनवरत-दह्यमानाज्य-मिश्र-भुजग-निर्म्मोक-मेष-विषाण-क्षोदम्, (ञ) अनल-प्लुष्यमाणारिष्टतरु-(३) पल्लवोल्लसित-रक्षा-धूमगन्धम्, (ट) अध्ययन-मुखर-द्विजगण-विप्रकीर्य्यमाण-शान्त्युदक-लवम्, (ठ) अभिनव-लिखित-मातृ-पट-पूजा-व्यग्र-धात्रीजनम्, (ड) अनेक-वृद्धाङ्गनारब्ध-सूतिका-मङ्गलगीतिका-मनोहरम्, (ढ) उपपाद्यमान-स्वस्त्ययनम्, (ण) क्रियमाण-शिशुरक्षा-बलि-विधानम्, (त) आबध्यमान-धवल-

---

(झ) अखिलेति। अखिलानां सर्वप्रकाराणां व्रीहीणां शरत्पक्वधान्यानां मध्ये अवस्थापिता उपवेशिता या आर्य्यवृद्धा सत्कुलोत्पन्ना जरती स्त्री तया अध्यासित: तत्कालीनव्यवहारोपदेशार्थमाश्रित: शयनीयस्य महिषीशय्याया: शिरोभागो यस्मिन् तत्। "व्रीहि: शरत्पक्वधान्य" इति प्रायश्चित्तविवेके शूलपाणि:।

(ञ) अनेति। अनवरतं दह्यमाना: आज्यमिश्रा घृतसंयुक्ता:, भुजगनिर्म्मोकाणां सर्पकञ्चुकानां मेषविषाणानां मेषशृङ्गानाञ्च क्षोदाश्चूर्णानि यस्मिन् तत्।

(ट) अनलेति। अनलेन वह्निना प्लुष्यमाणा दह्यमाना ये अरिष्टतरुपल्लवा निम्बवृक्षकिसलयानि तेभ्य उल्लसिता उत्थिता रक्षार्था बालकरक्षणप्रयोजनका धूमा गन्धाश्च यस्मिन् तत्। अत्र केचिदत्र तद्व्यवहारास्तदानीन्तनतद्देशाचारादवगन्तव्या:, अतएव मर्य्यादानिपुणेनेति प्रागेवोक्तम्।

(ठ) अध्ययनेति। अध्ययनेन मन्त्रपाठेन मुखर: शब्दायमानो यो द्विजगणो ब्राह्मणवर्गस्तेन विप्रकीर्य्यमाणा: प्रसूतिबालकयोरुपरि निक्षिप्यमाणा: शान्त्युदकलवा: शान्तिजलबिन्दवो यस्मिन् तत्।

(ड) अभीति। अभिनवं नूतनं लिखितश्चित्रितो यो मातृपटस्तस्य पूजायां तदानीमेव पटे चित्रितानां गौर्य्यादिमातृणामर्च्चनायामित्यर्थ: व्यग्रा व्यासक्ता: धात्रीजना यस्मिन् तत्।

(ढ) अनेकेति। अनेकाभिर्वृद्धाङ्गनाभिर्वृद्धस्त्रीभि: आरब्धया सूतिकामङ्गलगीतिकया प्रसूत्या मङ्गलसम्पादकगानेन मनोहरम्।

(ण) उपेति। उपपाद्यमानानि विधीयमानानि स्वस्त्ययनानि देवतापूजादीनि यस्मिन् तत्।

(त) क्रियेति। क्रियमाणं शिशो रक्षार्थे बलीनां देवतोपहाराणां विधानं यस्मिन् तत्।

(ঝ) শয্যার শিয়রের দিকে নানাবিধ শরৎপক শস্যের উপরে সৎকুলোৎপন্ন এক জন বৃদ্ধ স্ত্রীলোককে বসাইয়া রাখা হইয়াছিল; (ঞ) সর্পকঞ্চুকের ও মেষশৃঙ্গের চূর্ণ, ঘৃত-সংযুক্ত করিয়া অবিশ্রান্ত দগ্ধ করা হইতেছিল; (ট). বালকের রক্ষার নিমিত্ত অগ্নিতে দহ্যমান নিমের পল্লব হইতে, ধূম ও গন্ধ উত্থিত হইতেছিল; (ঠ) ব্রাহ্মণগণ মন্ত্র পাঠ করিতে করিতে শান্তির জল নিক্ষেপ করিতেছিলেন; (ড) ধাত্রীগণ পটে নূতন চিত্রিত মাতৃগণের পূজার আয়োজনে ব্যস্ত ছিল; (ঢ) অনেক বৃদ্ধ স্ত্রীলোক প্রসূতির মঙ্গলের নিমিত্ত গান আরম্ভ করায় সুন্দর দেখাইতেছিল; (ণ) কেহ স্বস্ত্যয়ন করিতেছিল; (ত) কেহ বালকের রক্ষার নিমিত্ত দেবতাদিগকে উপহার

---

(१) अवस्थितार्य्य..., आयुर्वृ...। (२) शयन...। (३)...निम्बतरु...।

कुसुम-दाम-शतम्, (थ) अविच्छिन्न-पठ्यमान-नारायण-नाम-सहस्रम्, (द) अमल-हाटक-यष्टि-प्रतिष्ठापितैरन्तःशुभशतानीव निश्चल-शिखैर्ध्यायद्भिर्मङ्गल-प्रदीपैरुद्भासितम्, (ध) उत्खातासि-(१) लता-सनाथ-पाणिभिः सर्वतो रक्षा-पुरुषैः परिवृतम्, सूतिकागृहमपश्यत्। (न) अम्भः पावकञ्च स्पृष्ट्वा विवेश। (प)

प्रविश्य च प्रसवपरिक्षामपाण्डुर-(२) मूर्त्तेरुत्सङ्गगतं विलासवत्याः, स्वप्रभा-

---

(थ) आबध्येति। आबध्यमानं आलम्ब्यमानं धवलकुसुमानां दामशतं मालासमूहो यस्मिन् तत्।

(द) अवीति। अविच्छिन्नं निरन्तरं पठ्यमानं बालरक्षार्थमुच्चार्यमाणं नारायणस्य नाम्नां सहस्रं यस्मिन् तत्।

(ध) अमलेति। अमलासु परिष्कृतासु हाटकयष्टिषु सुवर्णदण्डेषु प्रतिष्ठापितैः संस्थापितैः निश्चल-शिखैर्वाताभावात् निस्पन्दार्च्चिर्भिः अतएव अन्तः अन्तःकरणेषु शुभशतानि प्रसूतिबालकयोरनेकमङ्गलानि ध्यायद्भिरिव स्थितैः, मङ्गलप्रदीपैः उद्भासितं प्रकाशितम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) उत्खातेति। उत्खाता उन्मुक्ता या असिलता लतावल्लम्बमानास्तरवारयः, ताभिः सनाथाः संयुक्ताः पाणयो येषां तैः, रक्षापुरुषैः रक्षानियुक्तलोकैः सर्वतः समन्तात्।

(प) अम्भ इति। अम्भो जलं पावकं वह्निञ्च स्पृष्ट्वा विवेश शुकनासेन सह राजा तत् सूतिकागृह-मित्यर्थः। जलाग्निस्पर्शनन्तु प्रसूतिबालकयोरागन्तुकदोषशङ्कानिरासार्थमिति बोध्यम्।

(फ) प्रविश्येति। प्रविश्य च राजा आत्मजं ददर्शेत्यन्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपुंलिङ्गपदानि आत्मजमित्यस्य विशेषणानि। प्रसवेन परिक्षामा नितान्तकृशा पाण्डुरा च मूर्त्तिर्यस्यास्तस्या विलासवत्याः, उत्सङ्गगतं क्रोडस्थितं, स्वप्रभासमुदयेन निजदीप्तिनिवहेन उपहतास्तिरस्कृताः गर्भगृहस्य सूतिकागृहस्य प्रदीपानां प्रभा येन तम्। अत्र दीपप्रभाणामुपहननासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। अस्यानुरूपः श्लोको यथा रघुवंशे—

দিতেছিল ; (থ) কেহ শ্বেতবর্ণ পুষ্পের বহুতর মালা বাঁধিয়া দিতেছিল ; (দ) কেহ অবিশ্রান্ত নারায়ণের সহস্র নাম পাঠ করিতেছিল ; (ধ) এবং নির্ম্মল স্বর্ণময় দণ্ডের উপরে সংস্থাপিত নিস্পন্দ বহুতর মঙ্গল-প্রদীপ, মনে মনে যেন প্রসূতি ও বালকের নানাবিধ মঙ্গল চিন্তা করিতে করিতে সেই সূতিকাগৃহ আলোকিত করিতেছিল ; (ন) এবং রক্ষার্থ নিযুক্ত পুরুষগণ উন্মুক্ত তরবারি-হস্তে সেই সূতিকাগৃহের চতুর্দ্দিকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (প) অনন্তর রাজা শুকনাসের সহিত জল ও অগ্নি স্পর্শ করিয়া সেই সূতিকাগৃহে প্রবেশ করিলেন।

(ফ) রাজা শুকনাসের সহিত প্রবেশ করিয়া অসীম আনন্দজনক সেই পুত্রটি

---

(१) उद्यतासि...। (२)...पाण्डु...।

समुदयोपहत-गर्भगृह-प्रदीप-(१) प्रभम्, (फ) अपरित्यक्तगर्भरागत्वादुदय-परिपाटल-मण्डलमिव सवितारम्, अपरसन्ध्या-(२) लोहितबिम्बमिव चन्द्रमसम्, अनुपजातकाठिन्यमिव कल्पतरुपल्लवम्, उत्फुल्लमिव रक्तारविन्दराशिम्, अवनिदर्शनावतीर्णमिव लोहिताङ्गम्, (ब) विद्रुमकिसलयदलैरिव बालातपच्छेदैरिव पद्मरागरश्मिभिरिव विरचितायवम्, (३) (भ) अनभिव्यक्त-मुखपञ्चकमिव महासेनम्, (म) सुरवनिता-करतल-(४) परिभ्रष्टमिवामरपतिकुमारम्, (य)

"अरिष्टशय्यां परितो विसारिणा सुजन्मनस्तस्य निजेन तेजसा।
निशीथदीपाः सहसा हतत्विषो बभूवुरालेख्यसमर्पिता इव॥"

(ब) अपरीति। अपरित्यक्तो गर्भरागो गर्भावस्थानकालीनो रक्तिमा येन तस्य भावस्तस्मात्तोः। अयन्तु विरचितावयवमित्यन्तं यावदेव हेतुरिति बोध्यम्। उदये उदयसमये परिपाटलं आरक्तवर्णं मण्डलं यस्य तं सवितारं सूर्यमिव। अपरसन्ध्यायां सायंकाले लोहितबिम्बं रक्तमण्डलं चन्द्रमसमिव। अनुपजात-काठिन्यं अचिरोत्पन्नत्वादिति भावः, तेन लौहित्यमपि व्यज्यते, विशेषलौहित्यद्योतनाय कल्पतरुपदमिति नाविशेषे विशेषाख्यदोषः। उत्फुल्लं विकसितं। अवनिदर्शनाय भूतलावलोकनाय अवतीर्णं स्वर्गादवरूढ़ं लोहिताङ्गं मङ्गलग्रहमिव, तस्यापि रक्ताङ्गत्वादिति भावः। अत्र मालोपमालङ्कारः। अवनीत्यादौ तु द्रव्योत्प्रेक्षा।

(भ) विद्रुमेति। विद्रुमकिसलयदलैः प्रवालस्य विसारिकिरणैः, विरचितावयवं विधात्रा निर्म्मिताङ्ग-मिव। बालातपच्छेदैर्नवीनसूर्य्यालोकखण्डैः। पद्मरागस्य तदाख्यमणेः रश्मिभिः किरणैः। अत्र तिसृणा-मेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(म) अनभीति। अनभिव्यक्तं अप्रकाशितं मुखपञ्चकं यस्य तं पञ्चानां मुखानां मध्ये आविर्भूतैक-मात्रमुखमित्यर्थः महासेनं कार्त्तिकेयमिव स्थितं परमसुन्दरत्वादिति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) सुरेति। सुरवनितायाः पालयित्र्या देवयोषितः, करतलात् परिभ्रष्टं असावधानतया विच्युतं अमरपतिकुमारं देवराजशिशुसुतं जयन्तमिव, तादृशकान्तिमत्त्वादिति भावः। अत्रापि द्रव्योत्प्रेक्षा।

দর্শন করিলেন; প্রসব করায় নিতান্ত-ক্ষীণ-দেহা ও পাণ্ডুবর্ণা বিলাসবতীর ক্রোড়ে থাকিয়া সে, স্বকীয় কান্তিজালে সূতিকাগৃহস্থিত প্রদীপসমূহের প্রভা তিরোহিত করিতেছিল; (ব) তখনও গর্ভের রক্তিমা পরিত্যাগ না করায় উদয়কালীন রক্তমণ্ডল সূর্য্যের ন্যায়, সন্ধ্যাকালীন রক্তমণ্ডল চন্দ্রের ন্যায়, কঠিনতা জন্মিবার পূর্ব্বে কল্পতরু-পল্লবের ন্যায়, বিকসিত রক্তপদ্মরাশির ন্যায় এবং ভূমণ্ডল দর্শন করিবার নিমিত্ত স্বর্গ হইতে অবতীর্ণ লোহিতাঙ্গ মঙ্গল গ্রহের ন্যায় সেই শিশুটি বিরাজ করিতেছিল; (ভ) প্রবালমণির বিস্তৃত কিরণজালে কিংবা নবীনসূর্য্যালোকে অথবা পদ্মরাগমণির রশ্মিসমূহে, বিধাতা যেন তাহার অঙ্গ সকল নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন; (ম-য) পাঁচখানি মুখ প্রকাশ পাইবার পূর্ব্বে এক-মুখ কার্ত্তিকেয়ের ন্যায় এবং কোন দেবীর হস্ত হইতে নিপতিত দেবরাজের শিশুপুত্রের ন্যায় বালকটি

---

(१)...प्रदीपक...। (२) सन्ध्या...। (३) रचितावयवं। (४) कर...।

उत्तप्त-कल्याण-कार्त्तस्वर-भास्वरया स्वदेहप्रभया पूरयन्तमिव वासभवनम्, (र) उद्भासमानैः सहज-भूषणैरिव महापुरुषलक्षणैरुपेतम्, (ल) आगामि-(१) काल-पालन-प्रहृष्टयेव (२) श्रिया समालिङ्गितं, आह्लादहेतुमात्मजं ददर्श। (व) विगत-निमेष-निश्चल-पक्ष्मणा च मुहुर्मुहुः प्रमृष्ट-सङ्घटितानन्द (३) वाष्प-पटल-(४) प्लुततारकेण दूर-(५) विस्फारितेन स्निग्धेन चक्षुषा पिबन्निव आलपन्निव स्पृशन्निव मनोरथसहस्र-प्राप्तदर्शनं सस्पृहमीक्षमाणः (६) तनयाननं मुमुदे, कृतकृत्यमात्मानं मेने। (श)

(र) उत्तप्तेति। उत्तप्तं वह्निना सन्तप्तं यत् कल्याणकार्त्तस्वरं उत्कृष्टजातीयं सुवर्णं तद्वत् भास्वरया दीप्तिमत्या। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) उद्भासेति। सहजभूषणैरिव स्वाभाविकालङ्कारैरिव, उद्भासमानैः स्पष्टं प्रकाशमानैः, महापुरुषाणां लक्षणैः शङ्खध्वजादिचिह्नैः उपेतं युक्तं। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) आगामीति। श्रिया लक्ष्म्या, आगामिनि काले भविष्यत्समये यौवनादौ यत् पालनं आत्मनो रक्षणं तेन प्रहृष्टया सन्तुष्टया सत्या समालिङ्गितमिव, परमसुन्दरत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आह्लादहेतुं आनन्दजनकं आत्मजं पुत्रम्।

(श) विगतेति। विगतेन निमेषेण हेतुना निश्चलानि निस्पन्दानि पक्ष्माणि लोमानि यस्य तेन, मुहुर्मुहुर्वारं वारं प्रमृष्टं पाणिना अपनीतमपि पुनः सङ्घटितमाविर्भूतं यत् आनन्दवाष्पपटलं आनन्दाश्रुसमूहः तेन प्लुता क्लिन्ना तारका यस्य तेन, दूरविस्फारितेन अत्यन्तप्रसारितेन, स्निग्धेन स्नेहव्यञ्जकेन चक्षुषा, पिबन्निव चुम्बन्निव, आलपन्निव मनोभावं व्यञ्जयन्निव, स्पृशन्निव संसजन्निव सन्, मनोरथानामभिलाषाणां सहस्रेण प्राप्तं दर्शनं यस्य तत्, तनयाननं पुत्रमुखं सस्पृहं ईक्षमाणः पश्यन् मुमुदे प्रीतो बभूव; आत्मा-

---

দীপ্তি পাইতেছিল; (র) উত্তপ্ত উত্তম সুবর্ণের ন্যায় দীপ্যমান স্বকীয় দেহকান্তিতে সেই সূতিকাগৃহ যেন পরিপূর্ণ করিতেছিল; (ল) স্বাভাবিক অলঙ্কারের ন্যায় মহাপুরুষের সমস্ত লক্ষণই তাহাতে প্রকাশ পাইতেছিল; (ব) 'ভবিষ্যতে ইনিই আমাকে পরিপালন করিবেন' ইহা মনে করিয়া সন্তুষ্ট হইয়াই যেন লক্ষ্মী তাহাকে আলিঙ্গন করিতেছিলেন; (শ) তখন রাজার নয়নে নিমেষ ছিল না, লোমগুলি নিস্পন্দ হইয়াছিল, বারংবার মার্জ্জনা করিতে থাকিলেও আনন্দাশ্রু, পুনরায় উৎপন্ন হইয়া তারাযুগল প্লাবিত করিতেছিল—এইরূপ অত্যন্ত উৎফুল্ল ও স্নেহব্যঞ্জক নয়নের ভঙ্গীতে রাজা যেন বালকটিকে চুম্বন করতঃ, আলাপ করতঃ ও আলিঙ্গন করতঃ, বহুতর অভিলাষে প্রাপ্ত তাহার মুখকমল সস্পৃহভাবে দর্শন করিয়া আনন্দিত হইলেন এবং আপনাকে কৃতার্থ মনে করিলেন।

---

(१) आगामि...। (२) क्वचित् इवशब्दो नास्ति। (३)...सङ्घट्टितानन्द...। (४) वाष्पबिन्दु...। (५) दूरं। (६) निरीक्षमाणः।

समृद्ध-मनोरथः शुकनासस्तु शनैः शनैरङ्गप्रत्यङ्गान्यस्य (१) निरूपयन् प्रीतिविस्फारित-लोचनः (२) भूमिपालमवादीत्—"देव! पश्य पश्य, (३) अस्य कुमारस्य गर्भसम्पीड़नवशादपरिस्फुटावयव-(४) शोभस्यापि माहात्म्यमाविर्भावयन्ति (५) चक्रवर्त्तिचिह्नानि (ष)। तथाहि, अस्य सन्ध्यांशु-(६) रक्त-बाल-शशिकलाकारे ललाटपट्टे नव-नलिन-नाल-(७) भङ्ग-तन्तु-तन्वीयमूर्णा परिस्फुरति (स)। एतद्विकच-पुण्डरीक-धवलं कर्णान्तायतं मुहुर्मुहुरुन्मिषितैर्धवलयतीव वासभवनमरालपक्ष्म लोचनयुगलम् (ह) विजृम्भमाण-कमल-

---

नस्य कृतकृत्यं कृतार्थं मेने मनसि चकार, चिराद्‌आशापूरणादिति भावः। अत्र पिबद्भिरित्यादौ तिसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ष) समृद्धेति। समृद्धमनोरथः सम्पूर्णाभिलाषः। अस्य बालकस्य अङ्गानि हस्तपदादीनि प्रत्यङ्गानि अङ्गुल्यादीनि च तानि, निरूपयन् निःशेषणावलोकयन्। गर्भेण गर्भाशयेन सम्पीड़नवशात् अल्पावकाशतया नितान्तयातनाकरणात् अपरिस्फुटा सर्वतोभावेनाव्यक्ता अवयवानामङ्गानां शोभा यस्य तादृशस्यापि सतः, चक्रवर्त्तिचिह्नानि सार्वभौमलक्षणानि, माहात्म्यं भावि महापुरुषत्वं आविर्भावयन्ति द्योतयन्ति सूचयन्ति।

(स) अथ कानि नाम चक्रवर्त्तिचिह्नानीत्याह तथाहीति। सन्ध्यांशुभिः सन्ध्यारागैः रक्ता लोहिता, बाला नोका अर्द्धमात्रा, या शशिकला तद्वदाकारो यस्य तस्मिन्, ललाटपट्टे भालफलके, नवो नूतनः अशुष्कः यो नलिननालभङ्गः पद्मनालखण्डः तस्य तन्तुवत् सूत्रवत् तन्वी सूक्ष्मा इयं दृश्यमाना, ऊर्णा भ्रूयुगलमध्यवर्त्ती लोमावर्त्तः परिस्फुरति विराजते। अत्र लुप्तोपमाद्वयस्य परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। "ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्त्ते चान्तरा भ्रुवोः।" इत्यमरः। तथा च भरतः—'भ्रूद्वयमध्ये मृणालतन्तुसूक्ष्मः शुभायत एकः प्रशस्तावर्त्तो महापुरुषलक्षणं चक्रवर्त्त्यादीनां महायोगिनाञ्च भवति।"

(ह) एतदिति। विकचपुण्डरीकधवलं प्रस्फुटितश्वेतपद्मवत् शुभ्रं कर्णान्तायतं कर्णसमीपपर्य्यन्तविस्तृतं अरालपक्ष्म वक्रलोमकं, लोचनयुगलं कर्तृ, मुहुर्मुहुरुन्मिषितैरुन्मीलनैः वासभवनं धवलयतीव शुभ्रीकरोतीव। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अत्र सामुद्रकम्—

"बाहुनेत्रद्वयं कुक्षि द्वौ तु नासा तथैव च। स्तनयोरन्तरञ्चैव पञ्च दीर्घं प्रशस्यते॥"

(ষ) পূর্ণ-মনোরথ শুকনাস ধীরে ধীরে বালকের অঙ্গপ্রত্যঙ্গ নিরীক্ষণ করিয়া আনন্দপ্রফুল্ল-নেত্রে রাজাকে বলিলেন—"মহারাজ! দেখুন দেখুন, জননীজঠরযাতনায় এই বালকটির অঙ্গের সকল শোভা পরিস্ফুট না হইলেও সম্রাটের লক্ষণগুলি, ভাবী মহাপুরুষত্বের সূচনা করিতেছে; দেখুন—সন্ধ্যারাগ-রঞ্জিত অর্দ্ধচন্দ্রাকার ললাটদেশে পদ্মের সদ্যোভগ্ন নালখণ্ডের সূত্রের ন্যায় সূক্ষ্ম এই লোমাবর্ত্ত বিরাজ করিতেছে। (স) প্রস্ফুটিত শ্বেতপদ্মের ন্যায় ধবলবর্ণ, বক্র-লোমসংযুক্ত ও আকর্ণবিস্তৃত এই নয়নযুগল, বারংবার উন্মীলনদ্বারা সূতিকাগৃহকে যেন ধবলবর্ণ করিতেছে। (হ) স্বর্ণরেখার ন্যায় সুদীর্ঘ এই নাসিকাটি, বিকাসকালীন পদ্ম-

---

(१) बालस्य। (२) प्रीतिविस्फारिताक्षः, प्रीतिविस्फारितलोचनं। (३) क्वचिदिह क्रियास्ति।
(४) अस्फुटावयव...। (५) आविर्भावयन्तीव। (६) सन्ध्यारक्त...। (७) नलिन...।

कोष-परिमल-मनोहरमियमस्य सहजमाननामोदमाजिघ्रतीव दूरायता कनक-लेखेव नासिका (घ)। रक्तोत्पल-कलिकाकारमुद्वहतीव (१) चास्याधर-रुचकम् (२) (क)। रक्तोत्पल-कलिका-लोहित-(३) तलौ भगवतो विष्टरश्रवस इव शङ्खचक्रचिह्नौ प्रशस्तलेखा-लाञ्छितौ करौ (ख)। अभिनव-कल्पतरु-पल्लव-कोमलं लेखामयैर्ध्वज-रथ-तुरगातपत्र-कमलैरलङ्कृतं अनेक-नरेन्द्र-सहस्र-

---

(घ) विजृम्भमाणेति। कनकलेखेव स्वर्णलेखेव दूरायता सुदीर्घा इयमस्य नासिका, विजृम्भमाणस्य विकसतः कमलकोषस्य पद्ममुकुलस्य परिमलवत् सौरभवत् मनोहरं, सहजं स्वाभाविकं आननामोदं मुखगन्धं आजिघ्रतीव गृह्णातीव। अत्र उपमा-लुप्तोपमा-क्रियोत्प्रेक्षाणामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। प्रमाणन्तूक्तम्।

(क) रक्तोत्पलेति। रुचकं विम्बाकारमाङ्गलिकद्रव्यं। अधरो रुचकमिव अधर एव रुचकमिति वा तदधररुचकं कर्तृ, रक्तोत्पलकलिकाया आकारमुद्वहतीव। अत्र उपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः, रक्तोत्पलकलिकाया आकार इव आकारस्तमिति साद‍ृश्याक्षेपादसम्भवद्वस्तुसम्बन्धा निदर्शना क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "रुचकं मङ्गलद्रव्ये" इत्यादि विश्वः। अत्र सामुद्रकम्—

"पाणिपादतलौ रक्तौ नेत्रान्तरनखानि च। तालुकोऽधरजिह्वा च सप्त रक्तं प्रशस्यते॥"

(ख) रक्तोत्पलेति। रक्तोत्पलकलिकावत् लोहिते तले ययोस्तौ, करौ। "अश्वत्थः सर्ववृक्षाणा"-मिति भगवद्गीतोक्तेः विष्टरे अश्वत्थे श्रूयत इति विष्टरश्रवा विष्णुस्तस्येव "वैकुण्ठो विष्टरश्रवा" इत्यमरः। शङ्खचक्रयोश्चिह्ने रेखे ययोस्तौ, पक्षे शङ्खचक्रे एव चिह्ने ययोस्तौ, प्रशस्ताभिर्लेखाभिः अङ्कुशादिभिः रेखाभिः लाञ्छितौ चिह्नितौ, इदमुभयत्रापि समानम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। अत्र पूर्वमेव प्रमाणमपरञ्च सामुद्रकम्—

"अङ्कुशं कुलिशं छत्रं यस्य पाणितले भवेत्। तस्यैश्वर्यं विनिर्दिष्टं अशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम्॥"

(ग) अनेति। अभिनवकल्पतरुपल्लववत् कोमलं। लेखामयैः रेखास्वरूपैः ध्वजः रथः तुरगोऽश्वः आतपत्रं छत्रं कमलं पद्मञ्च तैः। अनेकेषां नरेन्द्रसहस्राणां राजसहस्राणां चूडामणिचक्रैः शिरोमणिसमूहैः यच्चुम्बनं नमस्कारकाले संस्पर्शः तस्य उचितं योग्यं। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। तथा च सामुद्रकं—

"यस्य पादतले पद्मं चक्रं वाप्यथ तोरणं। अङ्कुशं कुलिशं छत्रं स सम्राड् भवति ध्रुवम्॥"

কলিকার সৌরভের ন্যায় মনোহর স্বাভাবিক মুখের গন্ধ যেন আঘ্রাণ করিতেছে। (ক) এবং ইহার অধরবিম্ব যেন রক্তোৎপল-কলিকার আকার ধারণ করিতেছে। (ক) রক্তোৎপল-কলিকার ন্যায় লোহিতবর্ণ পাণিতলে ভগবান্ নারায়ণের ন্যায় শঙ্খ ও চক্রের চিহ্ন এবং অঙ্কুশপ্রভৃতি প্রশস্ত রেখা রহিয়াছে। (গ) নূতন কল্পতরুপল্লবের ন্যায় কোমল এবং ধ্বজ, রথ, অশ্ব, ছত্র ও পদ্মরেখাতে অলঙ্কৃত ইহার চরণযুগল, বহুতর রাজগণের শিরোমণি-

---

(१) रक्तोत्पलनिकरं, रक्तोत्पलकलिकानुरागं।

(२) अधरपुटकं अधरकं। (३)...कलिकाकारलोहित...।

चूड़ामणि-चक्र-चुम्बनोचितं चरणयुगलम (ग)। एष च दुन्दुभेरिवातिगम्भीरः स्वरयोगोऽस्य रुदतः श्रूयते" (घ)

इत्येवं कथयत्येव तस्मिन् ससम्भ्रमापसृतेन राजलोकेन द्वारि स्थितेन (१) दत्तमार्गस्त्वरितगतिरागत्य प्रहर्षोद्गम-पुलकित-तनुः स्फारीभवल्लोचनो मङ्गलक-नामा (२) प्रहृष्ट-वदनः पुरुषः (३) पादयोः प्रणम्य राजानं व्यजिज्ञपत्—(ङ) "देव! दिष्ट्या वर्द्धसे, प्रतिहतास्ते शत्रवः, चिरं जीव जय च (४) पृथिवीम्। त्वत्प्रसादादत्रभवतः शुकनासस्यापि ज्येष्ठायां ब्राह्मण्यां मनोरमाभि-धानायां राम इव रेणुकायां तनयो जातः। श्रुत्वा देवः प्रमाणम्" इति। (च)

अथ नृपतिः (५) अमृतवृष्टिप्रतिममाकर्ण्य तद्वचनं प्रीति-विस्फारिताक्षः

(घ) एष इति। स्वरयोगः कण्ठसम्बद्धो ध्वनिरित्यर्थः। अतोपमालङ्कारः। तथा सामुद्रकम्—"स्वरो बुद्धिश्च नाभिश्च त्रिगम्भीरमुदाहृतम्।" इत्यादि।

(ङ) इत्येवमिति। तस्मिन् शुकनासे। ससम्भ्रमं सत्वरं अपसृतेन पन्थानं विहाय गतेन। राज-लोकेन राजगणेन, दत्तो मार्गः पन्था यस्य सः। प्रहर्षोद्गमेन आनन्दोदयेन पुलकिता रोमाञ्चिता तनुः शरीरं यस्य सः, स्फारीभवन्ती विस्तारं प्राप्नुवती लोचने यस्य सः। प्रहृष्टं प्रफुल्लं वदनं यस्य सः।

(च) देवेति। दिष्ट्या भाग्येन। प्रतिहता भवन्त्विति शेषः। त्वत्प्रसादादिति विशेषानुनयद्योत-नार्थमुक्तं अत्रभवतो माननीयस्य। रेणुकायां जमदग्निभार्य्यायां रामः परशुराम इव। अतोपमालङ्कारः। देवो भवान् प्रमाणं कर्त्तव्यनिर्द्धारयिता।

(छ) अथेति। अमृतवृष्टिप्रतिमं पीयूषवर्षणतुल्यं। कल्याणपरम्परा मङ्गलसन्ततिः, ममेति शेषः।

সমূহের সংস্পর্শের যোগ্য। (ঘ) আর রোদন করিবার সময় ইহার এই কণ্ঠস্বর, দুন্দুভি-ধ্বনির ন্যায় অতিগম্ভীর শুনা যাইতেছে।"

(ঙ) শুকনাস এইরূপ বলিতেছিলেন—এই সময়েই দ্বারস্থিত রাজগণ সত্বর পথ ছাড়িয়া দিলে, আনন্দে রোমাঞ্চিতশরীর, বিস্ফারিতনেত্র ও প্রফুল্লবদন মঙ্গলকনামে এক ব্যক্তি, দ্রুতগতিতে আসিয়া রাজার চরণে প্রণাম করিয়া তাঁহাকে জানাইল - (চ) "মহারাজ! সৌভাগ্যবশতঃ আপনার উন্নতি হইতেছে, আপনার শত্রুগণ বিনষ্ট হউক, আপনি চিরজীবী হউন, এবং পৃথিবী জয় করুন। আপনার অনুগ্রহে, মাননীয় মন্ত্রিমহাশয়েরও জ্যেষ্ঠ ভার্য্যা মনোরমার গর্ভে, রেণুকার গর্ভে পরশুরামের ন্যায় একটি পুত্র জন্মিয়াছে। এই বৃত্তান্ত শুনিয়া যাহা কর্ত্তব্য হয়, তাহা করুন।"

(ছ) অনন্তর রাজা অমৃতবৃষ্টির ন্যায় সেই বাক্য শুনিয়া প্রীতি-প্রফুল্লনেত্রে বলিলেন—

(१) द्वारस्थितेन। (२) मङ्गलनामा। (३) प्रहृष्टवदनपुरुषः। (४) क्वचित् चकारो नास्ति। (५) नृपतिः।

प्रत्यवदत्—"अहो! कल्याणपरम्परा। सत्योऽयं लोकप्रवादः (१) यत्, 'विपद्विपदं सम्पत् सम्पदमनुबध्नाति' इति। सर्वथा समानसुखदुःखतां दर्शयता विधिनाऽपि भवतैव वयमनुवर्त्तिताः" इत्यभिधाय प्रीतिविकसितमुखः सरभसमालिङ्ग्य विहसन् स्वयमेव शुकनासस्योत्तरीयं पूर्णपात्रं जहार। (छ) तस्मै च प्रीतमनाः प्रियवचनानुरूपं (२) पुरुषायापरिमितं पारितोषिकमादिदेश। (ज)

उत्थाय च तथैव तेन चरण-विघट्टन-(३) क्वणित-नूपुर-(४) सहस्र-मुखरित-

---

अतएवाह सत्योऽयमिति। अनुबध्नाति अनुसरति। शुकनासं प्रत्याह सर्वथेति। सर्वथा सर्वेण प्रकारेण समानं सुखदुःखं ययोस्तयोर्भावस्तां दर्शयता विधिना दैवेनापि भवतेव त्वयेव वयमहमित्यर्थः अनुवर्त्तिता अनुसृताः। तथा च पुत्त्रोत्पत्तेः प्राक् तव मम च तदनुत्पत्तिनिबन्धनं समानमेव दुःखमासीत्, इदानीमपि च तदुत्पत्तिनिबन्धनं समानमेव सुखं, तेन च "सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते" इति न्यायेन दुःखानुभवानन्तरं सुखानुभवस्यातीवमनोरमत्वात् यथा परमसन्तोषोत्पादनेन भवान् मामनुगच्छति विधिरपीदानीं तथैवेति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। सरभसं सहर्षं आलिङ्ग्य शुकनासमाश्लिष्य। उत्तरीयं उत्तरीयवसनरूपं पूर्णपात्रं सन्तोषेणाहरणीयद्रव्यं।

(ज) तस्मा इति। तस्मै पुरुषाय मङ्गलकाय। पारितोषिकं दातुं धनाध्यक्षमादिदेशेत्यर्थः।

(झ) उत्थायेति। राजा तस्मात् स्थानादुत्थाय तेन अन्तःपुरिकाजनेन राजपरिजनेन प्रहृष्टत्वेन चारणगणेन चानुगम्यमानः शुकनासभवनं गत्वा द्विगुणतरमुत्सवमकारयदित्यन्वयः। अत्र प्राथमिकानि तृतीयान्तपदानि अन्तःपुरिकाजनेनेत्यस्य विशेषणानि। चरणयोर्विघट्टनेन निक्षेपेण क्वणितानां शब्दितानां नूपुराणां सहस्रेण समूहेन मुखरितानि सशब्दीकृतानि दिगन्तराणि येन तेन। अत्र दिगन्तराणां मुखरीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

"কি আশ্চর্য্য! আজ যে অবিচ্ছিন্ন মঙ্গলের ধারা দেখিতেছি। অতএব এই লোকপ্রবাদ সত্য; যে—'বিপদ বিপদের ও সম্পদ সম্পদের অনুসরণ করিয়া থাকে'। বিধাতা সকল প্রকারেই তোমার ও আমার সমান দুঃখ ও সমান সুখ দেখাইয়া আজ তোমারই মতন আমার সন্তোষ-বিধান করিলেন" এই কথা বলিয়া প্রীতি-প্রফুল্ল-মুখে আনন্দের সহিত শুকনাসকে আলিঙ্গন করিয়া হাসিতে হাসিতে নিজেই শুকনাসের উত্তরীয়বসন টানিয়া লইলেন; (জ) এবং সন্তুষ্টচিত্তে সেই মঙ্গলককে প্রিয়সংবাদ বলার অনুরূপ অপরিমিত পারিতোষিক দিবার আদেশ করিলেন।

(ঝ) রাজা উঠিয়া সেই ভাবেই শুকনাসের বাড়ী যাইয়া দ্বিগুণ উৎসব করাইলেন;

---

(१) जनप्रवादः। (२) प्रियवचनश्रवणानुरूपं।

(३)...विकुट्टन..., कुट्टन...। (४)...मणिनूपुर...।

दिगन्तरेण (झ) सरभसोत्क्षेप-चलित-(१) मणिवलयावली वाचालित-भुज-लतेन (ञ) ऊर्द्धीकृतैरुत्तानतलैः करपुटैरनिल-लुलितां (२) आकाशगङ्गा-(३) कमलिनीमिव दर्शयता (ट) पर्य्यस्त-क्षुदित-कर्णपल्लवेन (ठ) परस्परा-ङ्गद-कोटि-सङ्घट्ट-दष्ट-पाटितोत्तरीयांशुकेन (ड) श्रमजल-धौताङ्गराग-रञ्जित-चीन-वाससा (४) (ढ) किञ्चिदवशिष्ट-तमालपत्रेण (ण) विलसद्वारविला-सिनीहसितैरुन्निद्र-कैरव-वनानुकारं प्रथयता (त) सरभसवल्गन-(५)

(ञ) सरेति। सरभसं सवेगं उत्क्षेपेण नृत्यगीततालानुसारादुत्तोलनेन चलिताभिश्चञ्चलीभूताभिः मणिवलयावलीभिः रत्नमयकङ्कणश्रेणीभिः वाचालिता: शब्दायमानीकृताः भुजलता यस्य तेन।

(ट) ऊर्द्धेति। ऊर्द्धीकृतैरुत्तोलितैः, उत्तानतलैरुन्मुखतलैः करपुटैः करैः, अनिललुलितां वायुना पातितां आकाशगङ्गायाः कमलिनीं पद्मिनीं दर्शयतेव तादृशहस्तोत्तोलनादिति, भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

(ठ) पर्य्यस्तेति। पर्य्यस्ता आदौ गमनसम्भ्रमात् भूमौ पतिताः, क्षुदिता अनन्तरं जनचरणैर्विदलिताः कर्णपल्लवाः कर्णाभरणीभूतकिसलयानि यस्य तेन।

(ड) परस्परेति। परस्परं अङ्गदकोटिभिः केयूराग्रैः संघट्टेन घर्षणेन दष्टानि आदौ विद्धानि अनन्तरं पाटितानि छिन्नानि उत्तरीयांशुकानि यस्य तेन।

(ढ) श्रमेति। श्रमजलैर्घर्म्मजलैर्धौता ये अङ्गरागा अङ्गविलेपनानि कुङ्कुमादीनि तै रञ्जितानि चीनवासांसि सूक्ष्मवसनानि यस्य तेन। "चीनो मृगान्तरे तन्तुव्रीहिदेशांशुकान्तरे।" इति विश्वः।

(ण) किञ्चिदिति। किञ्चिदल्पमात्रं अवशिष्टं तमालपत्रं तिलकं यस्य तेन, अधिकन्तु जनसम्मर्द्दे-नैव विलुप्तमिति भावः। 'तमालपत्रं तिलके तापिञ्छे पत्रकेऽपि च।" इति हैमः।

(त) विलसदिति। विलसन्तीनां सविलासं गच्छन्तीनां वारविलासिनीनां वेश्यानां हसितैर्हासैः

যাইবার সময় তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ অন্তঃপুরের রমণীগণও যাইতেছিল; তাহাদের পদক্ষেপের সময় নূপুরসমূহের শব্দে দিগন্তর শব্দিত হইতেছিল; (ঞ) বেগে ভুজলতা উত্তোলন করায় চঞ্চল মণিময় বলয়ের শব্দে সে ভুজলতাও শব্দিত হইতেছিল; (ট) তাহারা করতল চিৎ করিয়া উত্তোলন করায় বায়ুকর্ত্তৃক নিপাতিত আকাশগঙ্গার পদ্মিনী যেন দেখাইতেছিল; (ঠ) লোকের সংঘর্ষে কর্ণের পল্লব পতিত হইয়া পদদলিত হইতেছিল; (ড) পরস্পর সংঘর্ষের সময় একের কেয়ূরের অগ্রভাগ অপরের উত্তরীয়-বসনে বিদ্ধ হইয়া তাহা ছিঁড়িয়া ফেলিতেছিল; (ঢ) অঙ্গে লিপ্ত কুঙ্কুমপ্রভৃতি, ঘর্ম্মজলে ধৌত হইয়া সূক্ষ্ম বস্ত্রগুলিকে রঞ্জিত করিতেছিল; (ণ) লোকের ঠেলাঠেলিতে গায়ের তিলক (গোন্দানি প্রভৃতি) অল্পমাত্র অবশিষ্ট ছিল; (ত) তাহারা সবিলাসগামিনী বারাঙ্গনাগণের হাস্যে প্রস্ফুটিত

---

(१)...चालित..., चलित...। (२)...लुण्ठितां। (३) आकाशकमलिनीं।
(४) नवीनवाससा। (५)...चलन...।

स्खलल्लोल-हारलतास्फालित-कुचस्थलेन (थ) सिन्दूर-तिलक-लुलितालक-(१) लेखेन (द) विप्रकीर्णपिष्टातक-पांशु-पुञ्ज-पिञ्जरित-(२) केशपाशेन (ध) प्रनृत्य-विकल-(३) मूक-कुब्ज-किरात-वामन-वधिर-जड़-जन-पुरःसरेण (न) उत्तरीयांशुक-ग्रीवावबद्धावकृष्ट-विड़म्बित-(४) जरत्कञ्चुकि-कदम्बकेन (५) (प) वीणा-वेणु-मुरज-कांस्यताल-लयानुगतेन (६) (फ) कलमधुरमुद्गायता (ब)

उन्निद्रस्य विकसितस्य कैरववनस्य कुमुदकाननस्य अनुकारमनुकरणं प्रथयता प्रकाशयता कविसमयवशात् हास्यस्य श्वेतत्वादिति भावः। आर्थीयमुपमालङ्कारः।

(थ) सरभसेति। सरभसं सवेगं यत् वल्गनमास्फालनं तेन स्खलन्तीभिः स्वस्थानात् भ्रश्यन्तीभिः लोलाभिः हारलताभिः आस्फालितं स्पृष्टं कुचस्थलं यस्य तेन।

(द) सिन्दूरेति। सिन्दूरतिलकेषु लुलिता गमनसम्भ्रमात् लुण्ठिता अलकरेखा चूर्णकुन्तलराजि- र्यस्य तेन।

(ध) विप्रेति। विप्रकीर्णैर्विक्षिप्तैः पिष्टातकपांशुपुञ्जैः पटवासचूर्णनिकरैः पिञ्जरिताः पिङ्गलवर्णी- कृताः केशपाशा यस्य तेन।

(न) प्रनृत्येति। प्रनृत्येन विशेषनर्त्तनेन विकला विह्वलाः मूकाः, कुब्जाः, किराताः कृशदेहाः, वामना ह्रस्वशरीराः, वधिराः, जड़ा नितान्तनिर्बोधाश्च जनाः पुरःसरा अग्रगामिनो यस्य तेन।

(प) उत्तरीयेति। उत्तरीयांशुकैः तत्तदुत्तरीयवसनैः ग्रीवासु गलेषु आदौ बद्धं वायुप्रेरणया यदृच्छा- वशात् संयमितं, अनन्तरञ्च अवकृष्टं आनन्दविह्वलतया तदनवधानेन गतिवेगादाकृष्टं, अतएव विड़म्बितं प्रसभाहरणेन भूमौ पातनोपक्रमेण च विह्वलीकृतं जरतामतिवृद्धानां कञ्चुकिनां अन्तःपुरचरविप्राणां कदम्बकं समूहो येन तेन। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः। जरत्पदेनातिवार्द्धक्यबोधनान्नाधिकपदत्वदोषः।

(फ) वीणेति। वीणा, वेणुः, मुरजो मृदङ्गः, कांस्यतालं करतालं तेषां लयः शब्दसाम्यं तदनुगतेन तदनुसारिणा चलितेन।

(ब) कलेति। कलमस्फुटं मधुरञ्च यथा स्यात्तथा उद्गायता उच्चैःस्वरेण गानं कुर्वता।

কুমুদবনের অনুকরণ করিতেছিল। (থ) বেগে আন্দোলন করায় স্বস্থানচ্যুত চঞ্চল হারলতাদ্বারা তাহাদের স্তনমণ্ডল তাড়িত হইতেছিল; (দ) খোলা চুলগুলি আসিয়া সিন্দূর-তিলকের উপর পড়িতেছিল; (ধ) আবীররাশি নিক্ষেপ করায় কেশকলাপ পিঙ্গলবর্ণ হইতেছিল; (ন) মূক, কুব্জ, ক্ষীণদেহ, খর্ব্বকায়, বধির ও নির্বোধ লোকগুলি উদ্ধতনৃত্যে বিহ্বল হইয়া অগ্রে অগ্রে যাইতেছিল; (প) কোন কোন রমণীর উত্তরীয়বস্ত্র কোন কোন বৃদ্ধ কঞ্চুকীর গলদেশে বদ্ধ হইয়া গেলে পর তাহা আকর্ষণ করায় সেই কঞ্চুকিগণ নিতান্ত বিড়ম্বনা পাইতেছিলেন; (ফ) তাহারা বীণা, বংশী, মৃদঙ্গ ও করতালের লয় অনুসারে পা ফেলিয়া যাইতেছিল; (ব) উচ্চৈঃস্বরে অস্পষ্ট ও মধুর গান করিতেছিল; (ভ) আনন্দে

---

(१)...लोलितालक...। (२)...पांशुपिञ्जरित...। (३) प्रनृत्तकल..., प्रनृत्तविकल..., प्रहृत्तकल...। (४)...विलम्बित...। (५) कदम्बेन। (६)...अनुयातेन।

हर्षनिर्भरतया मत्तेनेव उन्मत्तेनेव ग्रहगृहीतेनेव व्यपगत-(१) वाच्यावाच्य-विवेकेन (२) नृत्य-गीत-क्रीड़ा-(३) प्रसक्तेनान्तःपुरिकाजनेन, (भ) प्रचलित-(४) मणिकुण्डलाहत (५) कपोलभित्तिना च विघूर्णमान-कर्णोत्पलेनाधोगलित-(६) विलोल-शेखरेण दोलायमान-वैकक्षक-(७) कुसुममालेन निर्दय-प्रहत-भेरी-मृदङ्ग-मर्द्दल-पटह-निनादानुगत-काहल-(८) शङ्ख-रव-जनित-रभसेन चरण-सन्निपातैर्दारयतेव वसुधां (९) राजपरिजनेन, (म) प्रवृत्तनृत्येन च (१०) चारणगणेन विविध-

(भ) हर्षेति। हर्षनिर्भरतया आनन्दपरिपूर्णतया, मत्तेनेव मद्यपानजनितमत्ततायुक्तेनेव, उन्मत्तेनेव उन्मादरोगग्रस्तेनेव, तथा ग्रहगृहीतेनेव भूताविष्टेन जनेनेव व्यपगतो विनष्टः वाच्यावाच्ययोर्वक्तव्यावक्तव्ययोः विवेको विवेचनं यस्य तेन वाच्यमपि वदता अवाच्यमश्लीलादिकमपि वदतेत्यर्थः। अन्तःपुरिकाजनेन अन्तःपुरस्थ-रमणीगणेन। अत्र मालोपमालङ्कारः। केचित्तु उत्प्रेक्षामाचक्षते।

(म) प्रचलितेति। इतःप्रभृति तृतीयान्तपदानि वक्ष्यमाणस्य राजपरिजनेनेत्यस्य विशेषणानि। प्रचलितैर्मणिकुण्डलैः आहताः कपोलभित्तयो गण्डस्थलानि यस्य तेन। विघूर्णमानानि आन्दोलितानि कर्णोत्पलानि यस्य तेन। अधोगलिता भूमौ पतिताः विलोलाश्चञ्चलाः शेखराः शिरोभूषणानि यस्य तेन। दोलायमानाः कम्पमानाः वैकक्षककुसुममालाः तिर्य्यग्लम्बिवक्षःस्थपुष्पमाला यस्य तेन। "वैकक्षकन्तु तत्। यत्तिर्य्यक् क्षिप्तमुरसि" इत्यमरः। निर्दयं सातिशयं यथा स्यात्तथा प्रहतास्ताड़िताः ये भेर्य्यो मृदङ्गाः मर्द्दला वाद्यविशेषाः पटहा ढक्काश्च तेषां निनादैरनुगता मिलिता ये काहलानां विशालढक्कानां शङ्खानाञ्च रवास्तैर्जनितो रभस आनन्दो यस्य तेन। दारयतेवेति क्रियोत्प्रेक्षा।

(य) प्रवृत्तेति। प्रवृत्तं जातं नृत्यं यस्य तेन। विविधैर्मुखवाद्यैः कृतः कोलाहलो येन तेन। पठता

পরিপূর্ণ হওয়ায় কখনও মত্তের ন্যায়, কখনও উন্মত্তের ন্যায় এবং কখনও ভূতাবিষ্টের ন্যায় হইয়া বাচ্য কথাও বলিতেছিল, অনেক অবাচ্য কথাও বলিতেছিল এবং নৃত্য, গীত ও খেলাতে ব্যাপৃত হইয়া চলিতেছিল।

(ম) রাজার পরিজনবর্গও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; তাহাদের মণিময় কুণ্ডল আন্দোলিত হইয়া গণ্ডস্থলে আঘাত করিতেছিল, কর্ণের উৎপল দুলিতেছিল, মস্তকের আভরণ দুলিতে দুলিতে ভূতলে পড়িয়া যাইতেছিল, বক্ষঃস্থলের ফুলের মালা দুলিতেছিল, অত্যন্ত তাড়ন করায় ভেরী, মৃদঙ্গ, মাদল ও ঢাকের শব্দের সহিত জয়ঢাক ও শঙ্খের শব্দে তাহাদের আনন্দ জন্মাইতেছিল, আর তাহারা পদক্ষেপে ভূতল যেন বিদীর্ণ করিতেছিল। (য) চারণগণও রাজার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ নৃত্য

(१) अपगतः। (२) विवेकेनेव। (३) नृत्तक्रीड़ा...। (४) प्रचल...। (५)...उद्घट्टित...। (६) गलित...। (७) वैकक्षिक..., वैकक्ष...। (८)...काहला...। (९) विदारयतेव वसुन्धरां। (१०) नृत्ते प्रवृत्ते।

मुख-वाद्य-(१) कृतकोलाहलेन पठता गायता वल्गता (२) चानुगम्यमानः शुक-नाशभवनं गत्वा द्विगुणतरमुत्सवमकारयत्। (य)

अतिक्रान्ते च षष्ठीजागरे, प्राप्ते दशमेऽहनि, पुण्ये मुहूर्त्ते गाः सुवर्णञ्च कोटिशो ब्राह्मणसात्कृत्वा (३) 'मातुरस्य मया परिपूर्णमण्डलश्चन्द्रः स्वप्ने मुख-कमलमाविशन् दृष्टः' इति स्वप्नानुरूपमेव सूनोः (४) चन्द्रापीड़ इति नाम चकार। (र)

अपरेद्युः शुकनासोऽपि कृत्वा ब्राह्मणोचिताः सकलाः क्रिया राजानुमत-मात्मजस्य विप्रजनोचितं वैशम्पायन इति नाम चक्रे। (ल)

राजस्तुतिमुच्चारयता, गायता, वल्गता उल्लम्फनं प्रलम्फनञ्च कुर्वता, चारणगणेन च कुशीलवसमूहेन च। "चारणास्तु कुशीलवा" इत्यमरः।

(र) अतीति। षष्ठीजागरे षष्ठरात्रिकर्त्तव्ये जागरणे। तथा च विष्णुधर्म्मोत्तरे—"षष्ठेऽह्नि रात्रियामन्तु जन्मदानान्तु कारयेत्। राम! जागरणं कार्य्यं जन्मदानां तथा बलिः" दशमेऽहनि जन्मावधि दशमे दिवसे प्राप्ते उपस्थिते। आविशन् प्रविशन्। सूनोः पुत्रस्य। चन्द्र आपीड़ः शेखरो यस्य सः। "दशम्यामुत्थाप्य पिता नाम कुर्य्या"दिति पारस्करसूत्रात् "जननाद्दशरात्रे व्युष्टे नामधेयकरण"मिति गोभिल-सूत्राच्च दशमेऽहनीत्युक्तम्। सपिण्डमरणाशौचस्य चतुर्थदिनादौ सपिण्डजननाशौचस्य चतुर्थदिनादिपूर्वार्द्धे वा तारापीड़स्यासौ पुत्रो जात इति मन्तव्यं, तेन स्वपुत्रजननाशौचस्य तदशौचेन व्यपगमात् दशमदिने शुचितया राज्ञः पुत्रस्य नामकरणमुपपद्यते, अन्यथा क्षत्रियाणां द्वादशाहाशौचितया दशमदिने अशौचवत्त्वात्तत्रानधिकारः। एवञ्चोक्तसूत्रद्वयमपि तादृशसङ्करेणाशौचह्रासविषयमिति ध्येयम्।

(ल) अपरेद्युरिति। अपरेद्युः परस्मिन्नहनि जननादेकादशाहे। "एकादशे द्वादशे वा पिता नाम कुर्य्या"दिति श्रुत्वा, दिग्वि-शिव-शतार्हे तत्कुलाचारतो वा शुभतिथिदिनयोगे नाम कुर्य्यात् प्रशस्त"मिति

করিতেছিল, কেহ কেহ নানাবিধ মুখবাদ্যে কোলাহল করিতেছিল; কেহ কেহ রাজস্তুতি পাঠ করিতেছিল; কেহ কেহ গান করিতেছিল; এবং কেহ কেহ উল্লম্ফনপ্রলম্ফন করিতে করিতে যাইতেছিল।

(র) ষষ্ঠীজাগর-বাসর অতীত হইলে, দশম দিনে শুভ মুহূর্ত্তে রাজা ব্রাহ্মণদিগকে কোটি কোটি গরু ও সুবর্ণ দান করিয়া 'এই বালকের মাতার মুখমধ্যে পূর্ণমণ্ডল চন্দ্র, প্রবেশ করিতেছে, ইহা আমি পূর্ব্বে স্বপ্নে দেখিয়াছিলাম' এই কথা মনে করিয়া সেই স্বপ্ন অনুসারে পুত্রের নাম করিলেন—'চন্দ্রাপীড়'।

(ল) শুকনাসও, পরদিন ব্রাহ্মণোচিত সকল কার্য্য সম্পাদন করিয়া রাজার অনুমতি-ক্রমে ব্রাহ্মণের উপযুক্ত, পুত্রের নাম করিলেন—'বৈশম্পায়ন'।

---

(१) विविधवाद्य···। (२) क्वचित् वल्गता इति नास्ति।
(३) कोटिशो ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा। (४) स्वसूनोः।

क्रमेण कृतचूड़ाकरणादिक्रिया-(१) कलापस्य शैशवमतिचक्राम चन्द्रापीड़स्य। (व)

तारापीड़: क्रीड़ाव्यासङ्ग-(२) विघातार्थं वहिर्नगरादनुशिप्रं (३) अर्द्धक्रोशमात्रायामं, अतिमहता तुहिनगिरि-शिखर-मालानुकारिणा (४) सुधाधवलितेन (५) प्राकारमण्डलेन परिवृतम्, (श) अनुप्राकारमाहितेन महता परिखावलयेन परिवेष्टितम्, (ष) अतिदृढ़कपाट-सम्पुटम्, उद्घाटितैकद्वार-

---

ज्योतिषवचनेन च नामकरणे एकादशाहोऽपि विहित इत्यवधेयम्। ब्राह्मणोचिता: शर्म्मान्तनामोल्लेखादिसहितनान्दीमुखश्राद्धादी:। राज्ञा अनुमतमनुमोदितं प्रभुतया वयस्यतया च सर्व्वकार्य्येष्वेव तदनुमतिग्रहणस्यौचित्यादिति भाव:। विप्रजनोचितं मङ्गलसूचकमित्यर्थ:। यथा मनु:—"मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात् क्षत्रियस्य बलान्वितम्। वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम्।" तथा च विशं लोकं पातीति विशम्पो विष्णु: पृषोदरादित्वात् साधु:, स एव अयनमाश्रयो यस्येति विशम्पायन:, ततश्च प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण्। त्रिपुरविजयिन: शिवस्याभिधानाच्चन्द्रापीड़शब्दस्यापि बलसूचकत्वमिति दिक्।

(व) क्रमेणेति। चूड़ाकरणं तस्यादिभूते निष्क्रमणान्नप्राशने च तद्रूपा: क्रियास्तासां कलाप इति स:, तथा च कृत: चूड़ाकरणादिक्रियाकलापो निष्क्रमणादिसंस्कारकार्य्यसमूहो यस्य तस्य।

अहो! महत् खलु सौभाग्यं श्रोतॄणाम्, येन हि कविरस्मिन् विषयेऽतात्मभावतया चन्द्रापीड़स्य शैशवलीलावर्णनेऽत्रैव विरत इति।

(श) तारेति। तारापीड़:, चन्द्रापीड़स्य क्रीड़ासु व्यासङ्गविघातार्थं आसक्तिनिवारणार्थं नगरात् स्वराजधानीतो वहि:, शिप्रां शिप्रातीरमनु इत्यनुशिप्रं शिप्रानदीतीरे विद्यामन्दिरमकारयदित्यन्वय:। क्लीवलिङ्गद्वितीयान्तपदानि तस्य विशेषणानि। अर्द्धक्रोशमात्रं आयामो दैर्घ्यं यस्य तत्। तुहिनगिरेर्हिमाचलस्य शिखरमालानुकारिणा शृङ्गश्रेणीसदृशेन अतिमहता अत्युच्चेनेत्यर्थ:। सुधया चूर्णलेपेन धवलितं शुभ्रीकृतं तेन।

(ष) अन्विति। अनुप्राकारं तस्य प्राकारस्य समीपे, आहितेन स्थापितेन कृतेन।

(व) ক্রমে চন্দ্রাপীড়ের নিষ্ক্রমণ, অন্নপ্রাশন ও চূড়াকার্য্য সম্পাদন করা হইল এবং শৈশবকাল অতীত হইল।

(শ) তদনন্তর মহারাজ তারাপীড়, চন্দ্রাপীড়ের খেলাতে আসক্তি নিবারণ করিবার নিমিত্ত, রাজধানীর বাহিরে শিপ্রানদীর তীরে অর্দ্ধক্রোশদীর্ঘ একটি বিদ্যালয় নির্ম্মাণ করাইলেন; হিমালয়ের শৃঙ্গসমূহের ন্যায় অত্যন্ত উচ্চ ও চূর্ণলেপনে শুভ্রবর্ণ প্রাচীরদ্বারা সেই বিদ্যালয়টি পরিবেষ্টিত করা হইল; (ষ) প্রাচীরের নিকটে নির্ম্মিত বৃহৎ পরিখা-

---

(१)…बालक्रिया…। (२) व्यासङ्ग…। (३) अनुक्षिप्रं, अनुसिप्रं। (४) शिखरानुकारिणा।
(५) सुधाधवलेन, प्राकारधवलेन चन्द्रशालावलयेन विलासितं प्राकार…।

प्रवेशम्, एकान्तोपरचित-तुरग-(१) वाह्यालो-विभागम्, अधःकल्पित-व्यायाम-शालम्, अमरागाराकारम्, विद्यामन्दिरं (२) अकारयत्। (स) सर्वविद्या-चार्य्याणाञ्च संग्रहे यत्नमतिमहान्तमन्वतिष्ठत्। (ह) तत्रस्थञ्च तं केशरि-किशोरकमिव पञ्जरगतं कृत्वा प्रतिषिद्धनिर्गमम्, आचार्य्य-कुल-पुत्र-प्राय-परि-जनम्, अपनीताशेष-शिशुजन-क्रीड़न-(३) व्यासङ्गम्, अनन्यमनसम्, अखिल-विद्योपादानार्थमाचार्य्येभ्यश्चन्द्रापीड़ं शोभने दिवसे वैशम्पायनद्वितीयमर्पयाम्बभूव (च)। प्रतिदिनञ्चोत्थायोत्थाय (४) सह विलासवत्या विरलपरिजनस्तत्रैव गत्वैनमालोकयामास राजा। (क)

(स) अतीति। अतिदृढैः कपाटैः सम्पुटं आवरणं यस्य तत्। उद्घाटितेन उन्मुक्तकपाटेन एकेन द्वारेण प्रवेशो यस्मिन् तत्। एकान्ते एकस्मिन् पार्श्वे उपरचितो निर्म्मितः तुरगवाह्यालीनां अश्वशकटश्रेणीनां विभागः अवस्थितिस्थानं यस्मिन् तत्। अधःप्रदेशे कल्पिता निर्म्मिता व्यायामशाला मल्लक्रीड़ागृहं यस्मिन् तत्। अमरागाराकारं देवगृहतुल्यम्।

(ह) सर्वेति। सर्वविद्यानां ये आचार्य्याः शिक्षकास्तेषां, संग्रहे आनयने।

(च) तत्रेति। केशरिकिशोरकं सिंहशावकं पञ्जरगतमिव, तं चन्द्रापीड़ं तत्रस्थं कृत्वा। अत्रोपमालङ्कारः। आचार्य्याः शिक्षकाः कुलपुत्राः सत्कुलजाताः कुमाराश्च प्रायाः बहुलाः परिजना यस्य तम्। अपनीतो निषेधेन दूरीकृतः अशेषेषु समस्तेषु शिशुजनक्रीड़नेषु बालखेलासु व्यासङ्ग आसक्तिर्यस्य तम्। न विद्यते अन्यस्मिन् विषये मनो यस्य तं तादृशञ्च कृत्वा, वैशम्पायनद्वितीयं तं चन्द्रापीड़ं। अखिलविद्योपादानार्थं सकलविद्याशिक्षार्थं।

(क) प्रतीति। उत्थायोत्थाय प्रातः प्रातरित्यर्थः। विरला अल्पाः परिजना यस्य सः, अन्यथा विद्यालये हुलहुलिका स्यादिति भावः। एनं चन्द्रापीड़म्।

দ্বারাও তাহা বেষ্টিত হইল; (স) অত্যন্ত দৃঢ় কপাটে তাহার অন্যান্য দ্বারগুলি বন্ধ ছিল; একটিমাত্র দ্বার উন্মুক্ত থাকায় সেইমাত্র প্রবেশের পথ ছিল; একদিকে বহুতর ঘোড়ার গাড়ী রাখিবার স্থান নির্ম্মাণ করাইলেন এবং নীচে ব্যায়ামের ঘর তৈয়ারী করান হইল, ইহাতে সেই বিদ্যালয়টি স্বর্গীয় দেবভবনের ন্যায় সুন্দর হইয়াছিল। (হ) অনন্তর সকল-প্রকার বিদ্যা শিক্ষা করাইবার লোক আনয়ন করিবার জন্য বিশেষ যত্ন করিলেন। (ক) এবং সিংহশাবককে যেমন পঞ্জরে স্থাপন করে, সেইরূপ চন্দ্রাপীড়কে সেই বিদ্যালয়ে স্থাপন করিয়া, তাহা হইতে নির্গত হইতে নিষেধ করিয়া, শিক্ষকগণ ও সৎকুলজাত কুমারগণকেই অধিক পরিমাণে সহচর নির্দিষ্ট করিয়া, বালকের সকল প্রকার খেলাতেই আসক্ত হইতে নিষেধ করিয়া, অনন্যমনে শিক্ষা করিবার উপদেশ দিয়া, সকল প্রকার বিদ্যাশিক্ষা করিবার নিমিত্ত, বৈশম্পায়নের সহিত চন্দ্রাপীড়কে শুভদিনে শিক্ষকগণের হস্তে সমর্পণ করিলেন। (ক) এবং রাজা বিলাসবতীর সহিত প্রতিদিন নিদ্রা হইতে

(१)...तुरङ्ग...। (२) विद्यागृहं। (३)...शिशुक्रीड़न...। (४) क्वचित् दिवसेऽनिशम्।

चन्द्रापीड़ोऽप्यनन्यहृदयतया तथा नियन्त्रितो राज्ञा (१) अचिरेणैव कालेन (२) यथास्वमात्मकौशलं प्रकटयद्भिः पात्रवशादुपजातोत्साहैराचार्य्यैरुपदिश्यमानः (३) सर्वा विद्या जग्राह। (ख) मणिदर्पण इवातिनिर्म्मले तस्मिन् सञ्चक्राम सकलः कलाकलापः। (ग) तथाहि पदे, वाक्ये, प्रमाणे, धर्म्मशास्त्रे, राजनीतिषु, व्यायामविद्यासु, चाप-चक्र-चर्म्म (४) कृपाण-शक्ति-तोमर-परशु-गदाप्रभृतिषु सर्व्वेष्वायुधविशेषेषु, रथचर्य्यासु, गजपृष्ठेषु, तुरङ्गमेषु (५) वीणा-वेणु-मुरज-कांस्यताल-दर्दुरपुटप्रभृतिषु वाद्येषु, भरतादिप्रणीतेषु नृत्यशास्त्रेषु, (६) नारदीयप्रभृतिषु गान्धर्व्ववेदविशेषेषु, हस्तिशिक्षायां, तुरगवयोज्ञाने, (७) पुरुषलक्षणेषु, चित्रकर्म्मणि, यन्त्रच्छेद्ये, (८) पुस्तक-

---

(ख) चन्द्रेति। राज्ञा तारापीड़ेन तथा नियन्त्रितो निर्गमनिषेधादिना तादृशं नियमितः, चन्द्रापीड़ोऽपि अनन्यहृदयतया विद्याशिक्षायामेवैकाग्रचित्ततया। यथास्वं यथार्थं "यथास्वन्तु यथायथ"मित्यमरः। आत्मकौशलं शिक्षादाने स्वस्वनैपुण्यं प्रकटयद्भिराविष्कुर्व्वद्भिः, पात्रवशात् आधारवशात् चन्द्रापीड़स्य प्रखरधीशक्त्यादिना उत्कर्षवशादित्यर्थः। उपदिश्यमानोऽध्याप्यमानः। जग्राह शिशिक्षे।

(ग) किञ्च मणीति। कलाकलापो नृत्यगीतादिकलाविद्यासमूहः, सञ्चक्राम आचार्य्येभ्यः संक्रान्तो बभूव। अत्रोपमालङ्कारः। विद्यान्तरेभ्यः कलानां सुकुमारतया पृथगुपन्यासः।

(घ) उक्तमेवार्थं विशेषेण विवृण्वन्नाह तथाहीति। पदं व्याकरणशास्त्रं पदसाधनमात्रप्रयोजनत्वात्, तस्मिन्। वाक्यं पूर्व्वोत्तरमीमांसाद्वयं वेदवाक्योपजीव्यत्वात्, तस्मिन्। प्रमाणं न्यायवैशेषिकादिदर्शनशास्त्रं आत्मानात्मनोः प्रमितिकरणत्वात्, तस्मिन्। धर्म्मशास्त्रं मन्वादिप्रणीतं धर्म्मप्रतिपादनप्रधानं शास्त्रं तस्मिन्। राजनीतिषु शुक्रकामन्दकादिप्रणीतासु। व्यायामविद्यासु मल्लक्रीड़ाज्ञानेषु। रथचर्य्यासु रथारोहणेषु। कांस्यतालं करतालं। दर्दुरपुटं भिकशब्दाकारशब्दात्मको वाद्यविशेषः। तुरगवयोज्ञाने अस्य तुरगस्य कियद्वय

উঠিয়া উঠিয়া, অল্পসংখ্যক পরিজনে পরিবৃত হইয়া, সেই বিদ্যালয়ে যাইয়া চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া আসিতেন।

(খ) চন্দ্রাপীড়ও মহারাজকর্ত্তৃক সেইরূপ নিয়মিত হইয়া, অচিরকালমধ্যেই সকল বিদ্যা শিক্ষা করিলেন; কারণ—শিক্ষকগণ চন্দ্রাপীড়ের অত্যন্ত যোগ্যতা দর্শনে উৎসাহী হইয়া, স্ব স্ব ক্ষমতা যথা যথভাবে প্রকাশ করতঃ শিক্ষা দিয়াছিলেন। (গ) মণিময় দর্পণের ন্যায় অত্যন্তনির্ম্মল চন্দ্রাপীড়ের হৃদয়ে নৃত্যগীতাদি সকল কলাবিদ্যাও শিক্ষকগণ হইতে সংক্রান্ত হইয়াছিল। (ঘ) অর্থাৎ ব্যাকরণ, পূর্ব্বমীমাংসা ও উত্তরমীমাংসা, ন্যায় ও বৈশেষিকাদি দর্শনশাস্ত্র, স্মৃতিশাস্ত্র, নীতিশাস্ত্র, ব্যায়ামবিদ্যা (কুস্তী), ধনু, চক্র, চর্ম্ম

---

(१) यन्त्रितो राज्ञा। (२) क्वचित् 'कालेन' इति नास्ति। (३) उपदिश्यमानाः। (४)…वर्म्म…
(५) तुरङ्गेषु। (६) नृत्तशास्त्रेषु। (७)…ज्ञानेषु। (८) पत्रच्छेद्ये।

व्यापारे, लेख्यकर्म्मणि, सर्वासु द्यूतकलासु, गन्धशास्त्रेषु, (१) शकुनिरुतज्ञाने, ग्रहगणिते, रत्नपरीक्षासु, दारुकर्म्मणि, दन्तव्यापारे, वास्तुविद्यासु, आयुर्वेदे, मन्त्रप्रयोगे, (२) विषापहरणे, सुरङ्गोपभेदे, तरणे, लङ्घने, प्लुतिषु, आरोहणे, रतितन्त्रेषु, (३) इन्द्रजाले, कथासु, नाटकेषु, आख्यायिकासु, काव्येषु, महाभारत-पुराणेतिहास-रामायणेषु, सर्वलिपिषु, सर्वदेशभाषासु, सर्वसंज्ञासु, सर्वशिल्पेषु, (४) छन्दःसु, अन्येष्वपि कलाविशेषेषु परं कौशलमवाप। (घ)

इति ज्ञान इत्यर्थः। पुरुषाणां लक्षणेषु चिह्नरेखादिदर्शनेन शुभाशुभबोधकशास्त्रेषु सामुद्रिकेषु। यन्त्रेण दूरवीक्षणादियन्त्रेण छेदे परिच्छेदे, शक्ये ग्रहनक्षत्रादिनिर्णये। पुस्तकव्यापारे पुस्तकनिर्म्माणकर्म्मणि ग्रन्थरचनायामित्यर्थः। लेख्यकर्म्मणि अक्षरविन्यासे। द्यूतकलासु अक्षक्रीडादिरूपकलाविद्यासु। गन्धशास्त्रेषु गन्धद्रव्यनिर्म्माणविद्यासु। शकुनिरुतज्ञाने पक्षिरवानुसारेण शुभाशुभनिर्णयशास्त्रे वसन्तराजशाकुनादौ। ग्रहगणिते ज्योतिःशास्त्रे। दारुकर्म्मणि काष्ठद्वारा नानाविधवस्तुनिर्म्माणे। दन्तव्यापारे हस्तिदन्तद्वारा नानाविधशिल्पनिर्म्माणे। वास्तुविद्यासु गृहारामादिप्रकारबोधकशास्त्रेषु। मन्त्रप्रयोगे मन्त्रणाकरणे। विषापहरणे विषचिकित्सायां। सुरङ्गाया उपभेदे खननपूर्वकनिर्म्माणे। तरणे नद्यादौ सन्तरणे। लङ्घने प्राकारादीनाम्। प्लुतिषु शार्दूलादिभिर्मल्लक्रीडायामुल्लम्फनेषु। आरोहणे वृक्षादौ। रतितन्त्रेषु रतिशास्त्रेषु वात्स्यायनसूत्रादिषु। कथासु कथाकाव्येषु। आख्यायिकासु तदाख्यकाव्यविशेषेषु। काव्येषु महाकाव्यादिषु। महाभारतं प्रसिद्धं, पुराणानि ब्राह्मादीनि, इतिहासाः पुरावृत्तानि कथासरित्सागरादीनि, रामायणं वाल्मीकीयम् तेषु। कथानाटकाख्यायिकानां काव्यान्तर्गतत्वेऽपि पृथगुपादानं, महाभारतरामायणयोरितिहासान्तर्गतत्वेऽपि पृथगुपादानञ्च तेषु तेषां स्वाभिमतप्राधान्यसूचनार्थं गोवृषन्यायात्। सर्वलिपिषु सर्वविधाक्षरपरिचयेषु, अतो न लेख्यकर्म्मणेत्यनेन पौनरुक्त्यम्। सर्वसंज्ञासु करनयनभङ्ग्यादिना सकलप्रकारार्थसूचनासु। छन्दःसु वेदेषु पिङ्गलादिप्रणीतछन्दःशास्त्रेषु वा। अन्येष्वपि व्याकरणज्ञानादिषु। परमुत्कृष्टं कौशलं नैपुण्यम्।

(ঢাল), তরবারি, শক্তি, তোমর, পরশু ও গদাপ্রভৃতি সকলপ্রকার বিশেষ বিশেষ অস্ত্র, রথারোহণ, গজারোহণ, অশ্বারোহণ, বীণা, বংশী, মৃদঙ্গ, করতাল ও দর্দ্দুরপুটপ্রভৃতি বাদ্য, ভরতমুনিপ্রভৃতি-প্রণীত নাট্যশাস্ত্র, নারদপ্রভৃতিপ্রণীত গান্ধর্ববেদ (গানশাস্ত্র), হস্তিশিক্ষা, অশ্বের বয়সের জ্ঞান, সামুদ্রিকশাস্ত্র, চিত্রবিদ্যা, দূরবীক্ষণাদি যন্ত্রদ্বারা গ্রহনক্ষত্রাদিনির্ণয়, গ্রন্থরচনা, নানাবিধ লেখা, সকলপ্রকার দ্যূতক্রীড়া, গন্ধদ্রব্য নির্ম্মাণ, পক্ষীর রব শুনিয়া শুভাশুভ নির্ণয়, জ্যোতিষশাস্ত্র, রত্নপরীক্ষা, কাষ্ঠদ্বারা নানাবিধ বস্তু নির্ম্মাণ, হস্তিদন্তদ্বারা নানাবিধ বস্তুনির্ম্মাণ, বাস্তুশাস্ত্র, আয়ুর্ব্বেদ, মন্ত্রণাকরণ, বিষচিকিৎসা, সুরঙ্গনির্ম্মাণ, সন্তরণ লঙ্ঘন,

---

(१) क्वचित् अयं पाठो नास्ति। क्वचित्तु गान्धर्वशास्त्रेष्विति पाठः। (२) यन्त्रप्रयोगे।
(३) क्वचित् 'आरोहणे, रतितन्त्रेषु,' इति पाठो नास्ति। (४) शिल्पेषु।

सहजा चास्याजस्रं (१) अभ्यस्यतो वृकोदरस्येव शैशव एव (२) आविर्बभूव सर्वलोक-(३) विस्मयजननी महाप्राणता। (ङ) यदृच्छया क्रीड़ताऽप्यनेन करतलालम्बित-(४) कर्णपल्लवावनताङ्गाः सिंहकिशोरक-(५) क्रमाक्रान्ता इव गजकलभाश्चलितुमपि न शेकुः। (च) एकैकेन कृपाणप्रहारेण तालतरून् (६) मृणालदण्डानिव लुलाव। (छ) सकल-राजन्य-वंश-वन-दावानलस्य परशुरामस्येवास्य नाराचाः शिखरिशिलातलभिदो बभूवुः। (ज) दश-पुरुष-

अहो मन्ये खलु तावतीमेव शिक्षामुपपादयन्तो बाणस्य लेखनी सहसैव भग्नमुखी जाता, इतरथा वर्ष-शतेनापि मुनिजनदुर्लभां योगसिद्धिमपि कुमारस्यालिखीत्।

(ङ) सहजेति। किञ्चेति चार्थः। अजस्रं निरन्तरं अभ्यस्यतः शिक्षमाणस्य अस्य चन्द्रापीड़स्य वृकोदरस्य द्वितीयपाण्डवस्येव, शैशव एव सहजा स्वाभाविकी, सर्वेषां लोकानां विस्मयजननी आश्चर्यजनिका, महाप्राणता अतीव दैहिकबलं। अत्रोपमालङ्कारः।

(च) यदृच्छयेति। यदृच्छया स्वेच्छया क्रीड़तापि खेलां कुर्वतापि अनेन चन्द्रापीड़ेन करतलाभ्यां अवलम्बितौ आकृष्य धृतौ यौ कर्णपल्लवौ ताभ्यां अवनतानि अङ्गानि येषां ते, गजकलभा हस्तिशावकाः, सिंहकिशोरकेण सिंहशावकेन क्रमाभ्यां चरणाभ्यां आक्रान्ता इव सन्तः, चलितुमपि न शेकुः, किं पुनः प्रहर्त्तुमिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) एकैकेनेति। कृपाणप्रहारेण तरवारिराघातेन। लुलाव चिच्छेद। अत्रोपमालङ्कारः।

(ज) सकलेति। सकला राजन्यवंशाः क्षत्रियकुलान्येव वंशा वेणवस्तेषां वनस्य समूहस्य दावानलो वनवह्निस्तस्य, सर्वक्षत्रियान्तकारिण इत्यर्थः, परशुरामस्येव अस्य चन्द्रापीड़स्य नाराचा लौहमयवाणाः, शिखरिशिलातलभिदः पर्वतप्रस्तरविदारिणः। अत्र श्लिष्टपरम्परितरूपकसङ्कीर्णोपमालङ्कारः।

উল্লম্ফন, আরোহণ, রতিশাস্ত্র, ইন্দ্রজালবিদ্যা, উপাখ্যান, নাটক, আখ্যায়িকা, কাব্য, মহাভারত, পুরাণ, ইতিহাস, রামায়ণ, সকলপ্রকার অক্ষরপরিচয়, সকল দেশীয় ভাষাজ্ঞান, সকলপ্রকার সঙ্কেত, সর্ব্ববিধ শিল্প কার্য্য, ছন্দঃশাস্ত্র এবং অন্যান্য কলাবিদ্যা—এই সমস্ত বিষয়েই চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত নিপুণতা লাভ করিয়াছিলেন।

(ঙ) চন্দ্রাপীড় তখন সর্ব্বদাই শিক্ষা করিতেছিলেন, কিন্তু সেই অবস্থাতে সেই শৈশবকালেই ভীমসেনের ন্যায় তাঁহার, সকল লোকের বিস্ময়জনক স্বাভাবিক অত্যন্ত দৈহিক বল প্রকাশ পাইয়াছিল। (চ) চন্দ্রাপীড় ইচ্ছানুসারে খেলা করিতে করিতেও হস্তদ্বারা কর্ণযুগল আকর্ষণ করিয়া ধরিলে, হস্তিশাবকগণ অবনতদেহ হইয়া সিংহশাবক কর্ত্তৃক আক্রান্ত হইয়াই যেন চলিতেও পারিত না। (ছ) চন্দ্রাপীড় এক একটি তরবারির আঘাতে মৃণালদণ্ডের ন্যায় এক একটি তালবৃক্ষ ছেদন করিতেন। (জ) সকল ক্ষত্রিয়-বংশের দাবানল পরশুরামের ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের লৌহময় বাণসকল পর্ব্বতের পাষাণতল বিদারণ

(१)सहजाश्रमं...। (२) शैशवमेव। (३) लोकविस्मयजननी।

(४)...आलम्बित, आकुञ्चित...। (५) सिंहकिशोर...। (६) बाल एव तालतरून्।

संवाहनयोग्येन चायोदण्डेन श्रममकरोत्। (झ) ऋते च महाप्राणतायाः सर्वाभिरन्याभिर्विद्याभिः (१) अनुचकार तं वैशम्पायनः। (ञ) चन्द्रापीड़स्य तु सकल-कला-कलाप-परिचय-बहुमानेन शुकनास-गौरवेण सहपांशुक्रीड़नया सहसंवर्द्धनतया च सर्वविस्रम्भस्थानं द्वितीयमिव हृदयं वैशम्पायनः परं मित्रमासीत्। (ट) निमिषमपि तेन विना स्थातुमेकाकी न शशाक। वैशम्पायनोऽपि तमुष्णकरमिव वासरोऽनुगच्छन्न क्षणमपि विरहयाञ्चकार। (ठ)

एवं तस्य सर्वविद्यापरिचयमाचरतश्चन्द्रापीड़स्य त्रिभुवनविलोभनीयोऽमृतरस इव सागरस्य, सकललोक-हृदय-नयनानन्द-(२) जननश्चन्द्रोदय इव प्रदोषस्य,

(झ) दण्डेति। अयोदण्डेन लौहमुद्गरेण। श्रमं व्यायामं।

(ञ) ऋत इति। महाप्राणतायाः महाबलवत्त्वात् ऋते विना। "दिगितरर्त्तेऽन्ये"ति पञ्चमी। चन्द्रापीड़समानो विद्वानभूदिति सरलार्थः।

(ट) चन्द्रेति। सकलानां कलानां विद्यानां कलापे समूहे परिचयेन विशेषज्ञानलाभेन यो बहुमानः सम्मानस्तेन, शुकनासगौरवेण शुकनासं प्रति पूज्यत्वज्ञानेन, सह पांशुक्रीड़नया एकत्र धूलिखेलया, सह संवर्द्धनतया एकत्र वृद्धिं प्राप्ततया च हेतुना, वैशम्पायनः चन्द्रापीड़स्य द्वितीयं हृदयमिव सर्वविस्रम्भस्थानं सकलविश्वासाश्रयभूतम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) निमिषमिति। तेन वैशम्पायनेन। वासरो दिवसः उष्णकरं सूर्य्यमिव तं चन्द्रापीड़ं। विरहयाञ्चकार तत्याज। रहिण्य रादिः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ड) एवमिति। सागरस्य अमृतरसः पीयुषद्रव इव। त्रिभुवनं विलोभयति विशेषेण मोहयतीति सः "कृत्यल्युटोऽन्यत्रापी"ति कर्त्तर्य्यनीयः। वक्ष्यमाणस्य यौवनारम्भ इत्यस्य विशेषणान्येतानि। प्रदोषस्य रजनी-

করিত। (ঝ) এবং দশজন পুরুষে যে লৌহদণ্ড বহন করিতে পারে, চন্দ্রাপীড় সেই লৌহদণ্ডদ্বারা ব্যায়াম করিতেন। (ঞ) বৈশম্পায়ন অত্যন্ত শারীরিক বল ভিন্ন অন্য সকল বিদ্যাতেই চন্দ্রাপীড়ের অনুকরণ করিয়াছিলেন। (ট) সকল বিদ্যাতে বিশেষ জ্ঞান-লাভ করায় নিজের সেই সম্মানবশতঃ, পিতা শুকনাসের প্রতি গৌরববশতঃ, এক সঙ্গে ধূলিখেলা করায় এবং একত্র বর্দ্ধিত হওয়ায় বৈশম্পায়ন, চন্দ্রাপীড়ের দ্বিতীয় হৃদয়ের ন্যায় সকল প্রকার বিশ্বাসের পাত্র-পরম বন্ধু ছিলেন। (ঠ) চন্দ্রাপীড় বৈশম্পায়নকে ত্যাগ করিয়া একাকী এক নিমেষকালও থাকিতে পারিতেন না। এবং দিন যেমন সূর্য্যের অনুগমন করে অথচ ক্ষণকালও তাঁহাকে ত্যাগ করে না, সেইরূপ বৈশম্পায়নও চন্দ্রাপীড়ের অনুগমন করতঃ ক্ষণকালও তাঁহাকে ত্যাগ করিতেন না।

(ড) চন্দ্রাপীড় এই ভাবে সমস্ত বিদ্যা অভ্যাস করিতেছিলেন, এই সময় তাঁহার যৌবনকাল উপস্থিত হইল; সেই নব যৌবন, সমুদ্রের অমৃতের ন্যায় জগতের লোভজনক,

(१) कलाभिः। (२) "हृदयानन्द...।

बहुविध-राग-विकार-भङ्गुरः सुरधनुःकलाप इव जलधरसमयस्य, मकर-ध्वजायुधभूतः कुसुमप्रसव इव कल्पपादपस्य, अभिनवाभिव्यज्यमान राग-रमणीयः सूर्य्योदय इव कमलवनस्य, विविध-लास्य-विलास-योग्यः कलाप इव शिखण्डिनो यौवनारम्भः प्रादुर्भवन् रमणीयस्यापि द्विगुणां रमणीयतां पुपोष। (ङ) लब्धावसरः सेवक इव (१) निकटीबभूवास्य मन्मथः। (ढ) लक्ष्म्या सह वितस्तार वक्षःस्थलम्। बन्धुजनमनोरथैः सहापूर्य्यतोरुदण्डद्वयम्। अरि-जनेन सह तनिमानमभजत मध्यभागः। त्यागेन सह प्रथिमानमाततान

सुखस्य। जलधरसमयस्य वर्षाकालस्य, सुरधनुःकलाप इव इन्द्रचापसमूह इव बहुविधा रागविकारा विषया-भिलाषरूपविकृतयः नीलपीतादिरञ्जनवर्णमिश्रणानि च यस्मिन् सः, तथा भङ्गुरो विनश्वरः। तयोः कर्म्म-धारयः। कल्पपादपस्य कुसुमप्रसव इव पुष्पोद्गम इव, मकरध्वजायुधभूतः कन्दर्पशस्त्रस्वरूपः, उभयथापि कामपीड़ाजननादिति भावः। कमलवनस्य सूर्य्योदय इव, अभिनवं अभिव्यज्यमान आविर्भवन् यो रागो रमणीष्वनुरागो रक्तिमा च तेन रमणीयः। तथा शिखण्डिनो मयूरस्य कलापः पुच्छदेश इव, विविधानां लास्यानां नृत्यानामिव विलासानां "धीरा दृष्टिर्गतिश्चित्रा विलासे सस्मितं वचः" इत्युक्तलक्षणानां विभ्रमाणां योग्य उत्पादने समर्थः। एवमनेन प्रकारेण सर्वासां विद्यानां परिचयमभ्यासं आचरतः कुर्वतः तस्य चन्द्रापीड़स्य यौवनारम्भः प्रादुर्भवन्नित्यन्वयः। पुपोष चकार। अत्र पूर्णा मालोपमालङ्कारः।

(ङ) लब्धेति। मन्मथो मदनः सेवकः पादसंवाहनादिकरः परिचारक इव लब्धावसरो यौवनो-दयादन्यान्यलोकापगमात् प्राप्तावकाशः सन्। अस्य चन्द्रापीड़स्य। अत्रापि पूर्णोपमालङ्कारः।

(ढ) लक्ष्म्येति। लक्ष्म्या शरीरशोभया। वितस्तार विस्तीर्णं बभूव। इतः प्रभृति 'स्वरेण सह गम्भीरतामाजगाम हृदय'मित्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये सहोक्तिरलङ्कारः। बन्धुजनानां मनोरथैः 'कदा चन्द्रापीड़ो युवा भविष्यति' इत्यभिलाषैः। अपूर्य्यत पूर्णं बभूव। मध्यभागः कटिदेशः। तनीभाव-

---

প্রদোষকালের চন্দ্রোদয়ের ন্যায় সকল লোকের হৃদয় ও নয়নের আহ্লাদকারী, বর্ষাকালের ইন্দ্রধনুর ন্যায় নানাবিধ রাগবিকার-সমন্বিত (নানাবিষয়ের অভিলাষবিশিষ্ট, পক্ষান্তরে—নীলপীতাদি নানাবর্ণমিশ্রিত) ও অচিরস্থায়ী, কল্পবৃক্ষের পুষ্পবিকাসের ন্যায় কন্দর্পের অস্ত্রস্বরূপ, পদ্মবনের সূর্য্যোদয়ের ন্যায় নূতন প্রকাশমান রাগে (রমণীর প্রতি অনুরাগে, পক্ষান্তরে রক্তবর্ণে,) রমণীয় এবং ময়ূরের পুচ্ছের ন্যায় নৃত্যতুল্য বিবিধ বিলাসের উপযোগী হইয়াছিল; আর চন্দ্রাপীড় স্বভাবতই সুন্দর হইলেও সেই নবযৌবন তাঁহার দ্বিগুণ সৌন্দর্য্য বর্দ্ধিত করিয়াছিল। (ঢ) এই সময় শুশ্রূষাকারী সেবকের ন্যায় কন্দর্প, অবসর পাইয়া তাঁহার নিকটবর্ত্তী হইলেন। (ণ) আর সেই সময়ে চন্দ্রাপীড়ের শরীর-শোভার সহিত বক্ষঃস্থল বিস্তার পাইতে লাগিল, বন্ধুজনের অভিলাষের সহিত উরুযুগল পূর্ণ হইয়া উঠিল, শত্রুগণের সহিত কটিদেশ কৃশ হইতে লাগিল, ত্যাগশক্তির সহিত নিতম্বদেশ বিস্তার পাইতে

---

(१) अनुजीवकः, नवजीवकः।

नितम्बभाग:। प्रतापेन सहारुरोह रोमराजि:। अहित-कलत्रालक-लताभि: सह प्रलम्बतामुपययौ भुजयुगलम्। चरितेन सह धवलतामभजत लोचन-युगलम्। आज्ञया सह गुरुर्बभूव भुजशिखरदेश: (१)। स्वरेण सह गम्भीरतामाजगाम हृदयम्। (ग)

एवञ्च (२) क्रमेण समारूढयौवनारम्भं परिसमाप्त-सकल-कला-विज्ञानमधीताशेषविद्यञ्चावगम्यानुमोदितमाचार्य्यैश्चन्द्रापीड़मानेतुं राजा बलाधिकृतं बलाहकनामानमाहूय बहु (३) तुरगबल-पदाति-परिवृतमतिप्रशस्तेऽहनि प्राहिणोत्। (त) स गत्वा विद्यागृहं द्वारपै: (४) समावेदित: प्रविश्य (५)

सन्निमा तं क्षमत्वम्। त्यागेन दानेन। पृथोर्भाव: प्रथिमा तं, विशालताम्, आततान लिमे धातूनामनेकार्थत्वान्नैयार्थत्वदोष:। अहितकलत्राणां शत्रुस्त्रीणां अलकलताभि: लतावल्लम्बमानचूर्णकुन्तलै:। प्रलम्बतां दीर्घतां आलम्बितत्वञ्च। भाविभर्तृवधभावनया वैरिवनिताभि: केशानामसंयमनादिति भाव:। चरितेन चरित्रेण। धवलतां बाल्यचापल्यदोषराहित्यं शुभ्रताञ्च। गुरुराज्ञापक्षे गौरववती सर्वेषां शिरोधार्य्येत्यर्थ:, पक्षान्तरे तु गुरुर्विशाल:। भुजशिखरदेश: स्कन्धभाग:। गम्भीरतां मन्द्रत्वं धीरत्वञ्च।

(त) एवञ्चेति। राजा तारापीड़:। समारूढ: समुत्पन्नो यौवनारम्भो यस्य तम्, परिसमाप्तं सकलानां कलानां नृत्यगीतादीनां विज्ञानं शिक्षया ज्ञानलाभो यस्य तम्, अधीता अशेषा: समस्ता विद्या येन तम्, आचार्य्यै: शिक्षकै: अनुमोदितं गन्तुमनुज्ञातं बलाधिकृतं सैन्याध्यक्षं। बहुभि: तुरगबलैरश्वारोहिसैन्यै: पदातिभिश्च सैन्यै: परिवृतं। प्राहिणोत् प्रेरितवान्।

(थ) स इति। स बलाहक:। द्वारपैर्द्वारपालै: समावेदित: स्वसन्निधावुपसर्पुं राजपुत्रस्यानुमति

লাগিল, প্রতাপের সহিত রোমরাজি উৎপন্ন হইতেছিল, শত্রু-স্ত্রীগণের কেশকলাপের সহিত বাহুযুগল দীর্ঘতা লাভ করিতে লাগিল, চরিত্রের সহিত নয়নযুগল নির্ম্মল হইয়া উঠিল আজ্ঞার সহিত স্কন্ধদেশ বিস্তৃত হইতে লাগিল, এবং কণ্ঠস্বরের সহিত হৃদয় গম্ভীরতা লাভ করিতে লাগিল।

(ত) চন্দ্রাপীড়ের যৌবনসময় উপস্থিত, সমস্ত শিল্পকলা শিক্ষা সমাপ্ত হইয়াছে এবং অন্য সকল বিদ্যাও অধ্যয়ন করা হইয়াছে আর শিক্ষকগণও বিদ্যালয় হইতে যাইবার অনুমতি দিয়াছেন, ক্রমে ইহা জানিয়া মহারাজ তারাপীড়, চন্দ্রাপীড়কে আনিবার নিমিত্ত বলাহকনামে সেনাপতিকে আহ্বান করিয়া আনিয়া বহুতর অশ্বারোহী ও পদাতিসৈন্য-পরিবেষ্টিত করিয়া অতি প্রশস্ত দিনে সেই বিদ্যালয়ে প্রেরণ করিলেন।

(থ) বলাহক বিদ্যালয়ে যাইয়া উপস্থিত হইলেন, তদনন্তর দৌবারিকগণ রাজপুত্রের নিকট যাইয়া ফিরিয়া আসিয়া জানাইল যে, 'রাজপুত্র আপনাকে প্রবেশ করিবার অনুমতি

---

(१) शिखरदेश:। (२) एवं। (३) बहुत...। (४) द्वार्स्थै:। (५) प्रवेशित:।

क्षितितल-विलम्बित-(१) चूडामणिना शिरसा प्रणम्य स्वभूमिसमुचिते राजसमीप इव सविनयमासने राजपुत्रानुमतो न्यषीदत्। (थ) स्थित्वा च मुहूर्त्तमात्रं बलाहकश्चन्द्रापीडमुपसृत्य व्यजिज्ञपत्-(२)—"कुमार! महाराजः समाज्ञापयति—'पूर्णा नो मनोरथाः, अधीतानि शास्त्राणि, शिक्षिताः सकलाः कलाः, गतोऽसि (३) सर्वायुधविद्यासु (४) परां प्रतिष्ठाम्, अनुमतोऽसि निर्गमाय विद्यागृहात् सर्वाचार्य्यैः। (द) उपगृहीतशिक्षं गन्धगजकुमारकमिव वारिविनिर्गतं (५) आधिगत-सकल-कला-कलापं (६) पौर्णमासीशशिनमिव नवोद्गतं (७) पश्यतु त्वां जनः। (ध) व्रजन्तु सफलतामतिचिर-दर्शनोत्कण्ठितानि

जातेति विज्ञापितः। क्षितितले विलम्बितः संसक्तश्चूडामणिर्यस्य तादृशेन शिरसा। स्वभूमौ नियोगोपयुक्तस्थाने राजपुत्रस्य वामपार्श्वे इत्यर्थः समुचिते योग्ये राजपुत्रासनात् किञ्चिन्नीच इति तात्पर्य्यं आसने। राज्ञस्तारापीडस्य समीप इव। अत्रोपमालङ्कारः।

(द) स्थित्वेति। नोऽस्माकं मनोरथा अभिलाषाः पूर्णाः। कथमित्याह अधीतानीत्यादि। परामुत्तमां प्रतिष्ठां शिक्षाजनितगौरवम्। "प्रतिष्ठा गौरवे स्थितौ" इत्यादि मेदिनी।

(ध) उपेति। वारिर्गजबन्धनस्थानाद्विनिर्गतं बहिर्भूतं। "वारिर्वाग्गजबन्धन्योः स्त्री क्लीवेऽम्बुनि बालके।" इति मेदिनी। अधिगतः प्राप्तः सकलानां कलानां कलाविद्यानां षोडशभागानाञ्च कलापः समूहो येन तम्। अत्र प्रथमा उपमा द्वितीया च पूर्णोपमा इत्युभयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

দিয়াছেন।' পরে বলাহক প্রবেশ করিয়া মস্তক অবনত করিয়া রাজপুত্রকে প্রণাম করিলেন। তখন তাঁহার চূড়ামণি ভূতলে সংলগ্ন হইল; তদনন্তর তিনি মহারাজ তারাপীড়ের নিকটে যে ভাবে উপবেশন করিয়া থাকেন, সেই ভাবে রাজপুত্রের অনুমতি অনুসারে নিজের উপযুক্ত স্থানে উপযুক্ত আসনে বিনীতভাবে উপবেশন করিলেন। (দ) বলাহক কিছুকাল থাকিয়া চন্দ্রাপীড়ের নিকটে যাইয়া জানাইলেন—"কুমার! মহারাজ আদেশ করিতেছেন—যে, 'আমাদের সকল অভিলাষ পূর্ণ হইয়াছে; কারণ—তুমি সকল শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াছ, সমস্ত শিল্পকলা শিক্ষা করিয়াছ, সকল অস্ত্র-বিদ্যাতেও অত্যন্ত প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছ, আবার শিক্ষকগণও বিদ্যালয় হইতে যাইবার অনুমতি দিয়াছেন। (ধ) সুতরাং বন্ধনস্থান হইতে নির্গত শিক্ষিত গন্ধহস্তিশাবকের ন্যায় এবং সকল কলা-পরিপূর্ণ নবোদিত পূর্ণিমার চন্দ্রের ন্যায় এখন তোমাকে লোকে দর্শন করুক (এখন তুমি নির্গত হইয়া আসিবে)। (ন) তোমাকে দর্শন করিবার নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত জনসাধারণের নয়ন এখন সফলতা লাভ

---

(१)...अवलम्बित, चुम्बित...। (२) व्यजिज्ञापयत्। (३) गतः।
(४) सर्वासु। (५) वारिबन्धाद्विनिर्गतं। (६)...कलापकं। (७) उद्गतं।

लोकलोचनानि। (न) दर्शनं प्रति ते समुत्सुकान्यतीव सर्वाण्यन्तःपुराणि। (प) अयमत्रभवतो दशमो वत्सरः (१) विद्यागृहमधिवसतः, प्रविष्टोऽसि षष्ठमनुभवन् वर्षम्, एवं सम्पिण्डितेनाधुना (२) षोड़शेन प्रवर्द्धसे, तदद्य प्रभृति निर्गत्य दर्शनोत्सुकाभ्यो दत्त्वा दर्शनमखिलाभ्यो मातृभ्यः, (३) अभिवाद्य च गुरून्, (४) अपगतनियन्त्रणो यथासुखमनुभव राज्यसुखानि नवयौवनललितानि च। (फ) सम्मानय राजलोकं, पूजय द्विजातीन्, परिपालय प्रजाः, आनन्दय बन्धुवर्गम्। (ब) अयञ्च ते (५) त्रिभुवनैकरत्नमनिल-गरुड़-समजव इन्द्रायुधनामा तुरङ्गमः प्रेषितो महाराजेन द्वारि तिष्ठति। एष खलु देवस्य पारसीकाधिपतिना त्रिभुवनाश्चर्य्यमिति कृत्वा 'जलनिधिजलादुत्थितमयोनिजमिदमश्वरत्नमासादितं मया महाराजाधिरोहणयोग्य" इति सन्दिश्य प्रहितः। (भ)

(प) दर्शनमिति। अन्तःपुराणि अन्तःपुरस्थाः स्त्रिय इत्यर्थः।

(फ) अयमिति। अत्रभवतः परमशिक्षिततया अपरसाधारणमाननीयस्य। "वियु तत्रभवान् पूज्यस्तथैवात्रभवानपि।" इति हेमः। सम्पिण्डितेन सङ्कलितेन। षोड़शेन वर्षेण। अपगतं नियन्त्रणं पूर्ववन्निरोधो यस्य सः। नवयौवनस्य ललितानि विलासव्यापारान्।

(ब) सम्मानयेति। राजलोकं अधीनमित्रनृपतिवर्गम्। द्विजातीन् ब्राह्मणान्।

(भ) अयमिति। त्रिभुवने एकं अद्वितीयं रत्नं अश्वजातिषूत्कृष्ट इत्यर्थः, अनिलगरुड़योर्वायुगरुड़योः समः समानो जवो वेगो यस्य सः। ते तव निमित्तं प्रेषितः। पारसीकाधिपतिना पारसीक-

---

করুক। (প) এবং অন্তঃপুরস্থ সকল রমণীগণ তোমাকে দর্শন করিবার নিমিত্ত অত্যন্ত উৎকণ্ঠিত হইয়াছেন। (ফ) আর তুমি বিদ্যালয়ে বাস করিতেছ, এই তাহার দশম বৎসর চলিতেছে এবং তুমি ষষ্ঠ বৎসর বয়সে বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিয়াছিলে, অতএব ইহার সঙ্কলনে, এখন তুমি ষোড়শ বৎসর-বয়স্ক হইয়া বৃদ্ধি লাভ করিয়াছ অতএব অদ্য হইতে নির্গত হইয়া, দর্শনের নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত সকল মাতৃগণকে দর্শন দান করিয়া, গুরুজনদিগকে অভিবাদন করিয়া, অবাধে রাজ্যসুখ ও নবযৌবনের ভোগবিলাস যথেচ্ছভাবে অনুভব কর। (ব) রাজগণের সম্মান কর, ব্রাহ্মণদিগের পূজা কর, প্রজাদিগকে পালন কর এবং আত্মীয়-স্বজনকে আনন্দিত কর।' (ভ) ত্রিভুবনের মধ্যে রত্নস্বরূপ এবং বায়ু ও গরুড়ের তুল্য বেগবান্ ইন্দ্রায়ুধনামে একটি অশ্ব আপনার নিমিত্ত মহারাজ পাঠাইয়া দিয়াছেন, সেই অশ্বটি দ্বারদেশে রহিয়াছে। 'সমুদ্রের জল হইতে উত্থিত অযোনিজাত এই অশ্বরত্নটি আমি পাইয়াছি, ইহা মহারাজেরই (তারাপীড়েরই) আরোহণের যোগ্য' এইরূপ খবর দিয়া এবং এই অশ্বটি ত্রিভুবনের মধ্যে

---

(१) संवत्सरः। (२) अमुना। (३) अखिलमातृभ्यः,। (४) गुरून्।

(५) क्वचित् 'ते' इति नास्ति।

दृष्ट्वा च निवेदितं लक्षणविद्भिः—"यान्युच्चैःश्रवसः श्रूयन्ते लक्षणानि तैरयमुपेतः। नैवंविधो भूतो भावी वा तुरङ्गमः" इति। तदयमनुगृह्यतामधिरोहणेन। (म) इदञ्च मूर्द्धाभिषिक्त-(१) पार्थिवकुल-प्रसूतानां विनयोपपन्नानां शूराणामभिरूपाणां कलावताञ्च (२) कुलक्रमागतानां राजपुत्राणां सहस्रं परिचारार्थं (३) अनुप्रेषितं तुरङ्गमारूढं (४) द्वारि प्रणामलालसं प्रतिपालयति।" इत्यभिधाय विरतवचसि (५) बलाहके चन्द्रापीड़ः पितुराज्ञां शिरसि कृत्वा नवजलधर-ध्वान-गम्भीरया गिरा "प्रवेश्यतामिन्द्रायुध" इति निर्जिगमिषुरादिदेश। (य)

देशराजेन। महाराजस्य तारापीड़स्य तव अधिरोहणयोग्यं आरोहणोचितं. इति जलनिधिजलादित्यादिकं सन्दिग्धेत्यर्थः। देवस्य तारापीड़स्य समीपे एष तुरङ्गमः प्रहितः प्रेषितः।

(म) ननु सर्वः खल्वात्मीयं प्रशंसतीति पारसीकराजप्रशंसायां नास्ति विशेषगौरवमित्याह दृष्ट्वेति। लक्षणविद्भिरवस्थितैरश्वलक्षणाभिज्ञैः। उच्चैरुन्नते श्रवसी कर्णौ यस्य तस्य देवराजाश्वस्य। इति सम्भावयाम इति शेषः। अतएव पारसीकराजवाक्यं सत्यमिवेति भावः।

(य) इदमिति। ब्राह्मणेभ्यः क्षत्रियासु जाता मूर्द्धाभिषिक्ताः। यथाविधि राज्ञोऽभिषिक्ता मूर्द्धाभिषिक्ता इत्यपि सम्प्रदायः। तादृशा ये पार्थिवा राजानस्तेषां कुले प्रसूता उत्पन्नास्तेषाम्। अभिरूपाणां मनोहराकृतीनाम्। कलावतां शिक्षितकलाविद्यानां, कुलक्रमागतानां वंशपरम्परयागतानां। एषां पूर्वपुरुषा यथा भवतः पूर्वपुरुषाणां परिचर्य्यां कृतवन्तः, इमेऽपि तथैव भवन्तमागता इति भावः। परिचारार्थं परिचर्य्यानिमित्तं। अनुप्रेषितं महाराजेन मत्पश्चात् प्रेरितं। प्रणामे भवतो नमस्कारे लालसं नितान्ता-

---

একটি আশ্চর্য্য এইরূপ মনে করিয়া পারস্থরাজ, মহারাজের (তারাপীড়ের) নিকট এই অশ্বটি পাঠাইয়া দিয়াছেন। (ম) এই দেশের অশ্বলক্ষণাভিজ্ঞেরাও দেখিয়া জানাইয়াছেন যে, 'উচ্চৈঃশ্রবার যতগুলি লক্ষণ শুনা যায়, সেই সমস্ত লক্ষণ-সম্পন্নই এই অশ্ব; সুতরাং আমরা মনে করি, এইরূপ অশ্ব পূর্ব্বেও কখন জন্মে নাই কিংবা ভবিষ্যতেও জন্মিবে না।' অতএব আপনি আরোহণ করিয়া ইহাকে অনুগৃহীত করুন। (য) অভিষিক্ত রাজগণের বংশে উৎপন্ন, বিনয়গুণ-সম্পন্ন, বলবান্, সুন্দরাকৃতি, শিল্পকলাভিজ্ঞ ও কুলক্রমাগত এই একসহস্র রাজপুত্রকে আপনার পরিচর্য্যার নিমিত্ত মহারাজ আমার পরে প্রেরণ করিয়াছেন; ইঁহারা অশ্বে আরোহণ করিয়া, আপনাকে নমস্কার করিবার অভিলাষী হইয়া দ্বারদেশে প্রতীক্ষা করিতেছেন।" এই কথা বলিয়া বলাহক বিরত হইলে, চন্দ্রাপীড় পিতার আদেশ শিরোধার্য্য করিয়া, বিদ্যালয় হইতে নির্গত হইবার অভিলাষী হইয়া জলদগম্ভীর-স্বরে আদেশ করিলেন—"ইন্দ্রায়ুধকে প্রবেশ করান।"

---

(১) मूर्द्धाभिषिक्तानां। (२) कुलवतां। (३) परिचारार्थं। (४)···अधिरूढं। (५) अभिधाय विरराम।

अथ वचनानन्तरमेव प्रवेशितम्, उभयतः खलीन-कनक-(१) कटकाव-लग्नाभ्यां पदे पदे कृताकुञ्चनप्रयत्नाभ्यां पुरुषाभ्यामाकृष्यमाणम्, अतिप्रमाणम्, ऊर्द्ध्व-कर-पुरुष-प्राप्य-पृष्ठभागम्, (र) आपिबन्तमिव सम्मुखागतमखिलमाकाशम्, (ल) अतिनिष्ठुरेण मुहुर्मुहुः प्रकम्पितोदररन्ध्रेण ह्रेषारवेण पूरितभुवनोदर-विवरेण निर्भर्त्सयन्तमिवालीक-वेग-दुर्विदग्धं गरुत्मन्तम्, (व) अतिदूरम-वनमता प्रतिक्षण-मतिदूरमुन्नमता च जव-निरोध-स्फीत-रोष-घुरघुरायमाण-घोर-घोणेन शिरोभागेन (२) निज-जव-दर्प-(३) वशादुल्लङ्घनार्थमाकलयन्तमिव

भिलाषुकं सत्। प्रतिपालयति भवन्तं प्रतीक्षते। नवजलधरध्वानवत् नूतनमेघगर्जनवत् गम्भीरा तया। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। निर्जिगमिषुः विद्यालयान्निर्गन्तुमिच्छुः।

(र) अथेति। अथेति वाक्यान्तरारम्भे, आनन्तर्यार्थस्य तु वचनानन्तरमेवेत्यनेनैवाभिधानात्। वचना-नन्तरमेव चन्द्रापीडस्यादेशवाक्यानन्तरमेव, प्रवेशितं बलाहकादिशेनानीतं इन्द्रायुधमश्वादिति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रियया‌न्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि इन्द्रायुधमित्यस्य विशेषणानि। खे मुखविवरे लीन इति खलीनः कविका स एव कनककटकं सुवर्णवलयं तस्मिन् अवलग्नाभ्यां संसक्ताभ्यां धृतकविकाभ्यामित्यर्थः, पदे पदे प्रतिपदक्षेपं कृत आकुञ्चने आकृष्यानयने प्रयत्नो याभ्यां ताभ्यां, आकृष्यमाणं आकृष्य आनीयमानं, प्रमाणं साधारणमेव परिमाणमतिक्रान्तमित्यतिप्रमाणं, अतएव ऊर्द्ध्वकरेण उन्नमितहस्तेन पुरुषेण प्राप्यः स्पृश्यः पृष्ठ-भागो यस्य तं अतीवोन्नतमित्यर्थः।

(ल) आपिबेति। आपिबन्तमिव मुहुर्मुहुर्मुखव्यादानादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) अतीति। अतिनिष्ठुरेण नितान्तकर्कशेन, मुहुर्मुहुः प्रकम्पितं उदररन्ध्रं येन तेन, तथा पूरितं भुवनोदरविवरं जगन्मध्यं येन तेन, ह्रेषारवेण ह्रेषाध्वनिना, अलीकवेगेन मिथ्याजवेन दुर्विदग्धं दुरभि-मानिनं गरुत्मन्तं गरुडं निर्भर्त्सयन्तं तिरस्कुर्वन्तमिव, आत्मनस्तदधिकयथार्थवेगवत्त्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(श) अतीति। प्रतिक्षणं क्षणे क्षणे अतिदूरं अत्यन्तं अवनमता अधोगच्छता, अतिदूरमुन्नमता अत्यन्तमूर्द्ध्वं गच्छता च, जवनिरोधेन दाल्लककर्त्तृकवेगावरोधेन स्फीतो वृद्धिं प्राप्तो यो रोषः क्रोधस्तेन घुरघुरायमाणा 'घुरघुर' इत्येवं शब्दं कुर्वाणा घोरा भयानका घोणा नासिका यस्य तेन, शिरोभागेन मस्तकदेशेन

(র) রাজপুত্রের আদেশের পরই বলাহক সেই অশ্বকে বিদ্যালয়ে প্রবেশ করাইলেন, দুইজন লোক দুই দিকে 'থাকিয়া, কড়িয়ালি ধরিয়া, প্রতিপদক্ষেপে আকর্ষণে যত্ন করিয়া টানিয়া আনিতেছিল; তাহার আকৃতি অতিবৃহৎ,' কোন পুরুষ (দণ্ডায়মান হইয়া) উর্দ্ধে হস্ত প্রসারণ করিয়া তাহার পৃষ্ঠদেশ পাইতে পারে, (ল) সেই অশ্ব বারংবার মুখব্যাদান করায় সম্মুখবর্ত্তী সমস্ত আকাশ যেন পান করিতেছিল। (ব) বারংবার উদর কম্পিত করিয়া নির্গত, জগতের মধ্য-পরিপূরক ও অত্যন্ত কর্কশ হ্রেষারবে (অশ্বের শব্দের নাম—

(१) खलीनकटक...। (२) मुखेन। (३) निजदर्पवशात्, निजजवदर्पावेशात्।

त्रिभुवनम्, (ग्र) असित-पीत-हरित-पाटलाभिराखण्डल-चापानुकारिणीभिर्लेखाभिः कल्माषित-(१) शरीरम्, आस्तीर्ण विविधवर्ण-(२) कम्बलमिव कुञ्जरकलभम्, कैलास-तटाघात-धातु-धूलि-पाटलमिव हरवृषभम्, असुर-रुधिर-पङ्कलेखा-लोहित-सटमिव पार्वतीसिंहम्, (ष) रंहःसङ्घातमिव मूर्त्तिमन्तम्, (स) अनवरत-परिस्फुरत्प्रोथपुटोन्मुक्त-सूत्कारेण (३) अतिजवापीतमनिलमिव नासिकाविवरे-

---

करणेन, निजजवदर्पवशात् स्वकीयवेगाभिमानवशात् उल्लङ्घनार्थं अतिक्रमणार्थं त्रिभुवनं आकलयन्तमिव किंपरिमाणमिति वितर्कयन्तमिव। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ष) असितेति। असिताः कृष्णाः, पीताः, हरिताः पाटलाः श्वेतरक्ताश्च ताभिः, अतएव आखण्डल-चापानुकारिणीभिः इन्द्रधनुःसदृशीभिः, लेखाभिः रोमरेखाभिः, कल्माषितं विचित्रीकृतं शरीरं यस्य तम्। अतएव आस्तीर्णं पृष्ठोपरि पातितं विविधवर्णं कम्बलं यस्य तं, कुञ्जरकलभं हस्तिशावकमिव। तथा कैलासस्य तटे प्रदेशविशेषे आघातेन शृङ्गप्रहारेण धातुधूलिभिः निर्गतगैरिकादिरेणुभिः पाटलं श्वेतरक्तवर्णं हरवृषभं शिवस्य वृषमिव। तथा असुराणां रुधिरपङ्कलेखाभिर्गाढ़रक्तरेखाभिः लोहिता रक्तवर्णाः सटा जटा यस्य तं, पार्वत्या दुर्गायाः सिंहमिव स्थितम्। अत्र आर्थोपमया वाक्यार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन च सङ्कीर्णा मालोपमालङ्कारः।

(स) रंह इति। रंहःसङ्घातं वेगसमूहमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) अनेति। अनवरतं परिस्फुरत इतस्ततः सञ्चरतः प्रोथपुटान्नासिकाग्रात् उन्मुक्तो यः सूत्कारः 'सूत्' इत्येवं शब्दः तेन हेतुना, नासिकाविवरेण करणेन अतिजवेन पूर्वकृतेन नितान्तवेगेन आपीतं सम्यक् पीतं अनिलं वायुं उद्वमन्तं निःसारयन्तमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

রেখা, ছেষা) সে যেন নিথ্যাবেগে স্বরভিমানী গরুড়কে তিরস্কার করিতেছিল। (শ) তাহার মস্তক ক্ষণে ক্ষণে অত্যন্ত অবনত ও উত্থিত হইতেছিল, এবং বেগরোধ করায় অতিরিক্ত ক্রোধবশতঃ নাসিকা, 'ঘুর ঘুর' শব্দ করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল—যে, সে নিজের বেগের অহঙ্কারে ত্রিভুবন উল্লঙ্ঘন করিবার নিমিত্ত 'ত্রিভুবন কতটুকু' তাহা যেন মনে মনে বিবেচনা করিতেছিল; (ষ) ইন্দ্রধনুর অনুকারী, কৃষ্ণবর্ণ, হরিদ্রাবর্ণ, হরিতবর্ণ ও শ্বেত-রক্তবর্ণের বহুতর রেখা, তাহার শরীর বিচিত্র করিয়াছিল; সুতরাং পিঠের উপরে নানাবর্ণের কম্বলসংযুক্ত হস্তিশাবকের ন্যায়, কৈলাস-পর্ব্বতের গাত্রে শৃঙ্গের আঘাত করায় নির্গত গৈরিকাদি ধাতুর রেণুতে পাটলবর্ণ শিবের বৃষের ন্যায় এবং অসুরগণের গাঢ়রক্ত সংলগ্ন হওয়ায় রক্তবর্ণ জটা-সমন্বিত দুর্গার সিংহের ন্যায় সেই অশ্বটাকে দেখা যাইতেছিল। (স) মূর্ত্তিমান্ বেগ-সমূহের ন্যায় সে দণ্ডায়মান ছিল। (হ) অবিশ্রান্ত ইতস্ততঃ সঞ্চালিত নাসিকার অগ্র হইতে 'সুৎ' 'সুৎ' শব্দ নির্গত হইতেছিল, সেই জন্য বোধ হইতেছিল যে,—পূর্ব্বে অত্যন্ত বেগ-

---

(१) कल्मषित, कल्माषित...। (२) आस्तीर्णकम्बलमिव। (३)...फूत्कारेण।

णोद्गमन्तम्, (ङ) अन्तःस्खलित-मुखर-खलीन-खर-शिखर-क्षोभ-जन्मनो लाला-जलभुवः फेनपल्लवान् (१) उदधि-निवास-परिपीतामृतरस-गण्डूषानिवोद्गिरन्तम्, (च) अत्यायतं निर्म्मांसतया (२) समुत्कीर्णमिव वदनमुद्वहन्तम्, (क) आनन-मण्डल--निहितारुण--मणि-समुद्गतैरंशुकलापैरुपेतेनावसक्त-रक्त-चामरेणेव निश्चलशिखरेण कर्णयुगलेन विराजमानम्, (ख) उज्ज्वल-कनक-शृङ्खला-रचित-(३) रश्मि-कलाप-कलितया लाक्षा-लोहित-लम्ब-लोल-सटा-सन्तानया जलनिधि-

---

(च) अन्तरिति। अन्तर्मुखमध्ये स्खलितः सञ्चलितः, अतएव मुखरः शब्दायमानो यः खलीनः कविका तस्य खरशिखरेण तीक्ष्णाग्रेण यः क्षोभो घर्षणं तस्माज्जन्म येषां तान्, लालाजलं मुखस्रावजलं तस्माद्भवन्ति उत्पद्यन्ते ये ते तान्, फेनपल्लवान् विस्तृतफेनान्, उदधिनिवासे समुद्रावस्थानकाले परिपीता ये अमृतरसास्तेषां गण्डूषान् मुखपूरणपरिमितांशान् उद्गिरन्तं बहिष्कुर्वन्तमिव। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) अत्येति। अत्यायतमतिदीर्घं, निर्म्मांसतया अश्वजातेः स्वभावात् देहोपयोगिमांसहीनतया समुत्कीर्णमिव सम्यक् काष्ठविशेषादुद्धृतमिव वदनं उद्वहन्तं धारयन्तम्। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) आननेति। आननमण्डले मस्तक इत्यर्थः निहितेभ्यः शोभार्थं सूत्रे ग्रन्थित्वा स्थापितेभ्यः अरुणमणिभ्यः रक्तवर्णरत्नेभ्यः प्रवालादिभ्यः समुद्गतैः अंशुकलापैः किरणसमूहैः उपेतेन युक्तेन, अतएव अवसक्तः संलग्नः रक्तो लोहितवर्णश्चामरो यस्मिन् तेनेव स्थितेन, निश्चले निष्पन्दे शिखरे अग्रभागौ यस्य तेन। अत्र रक्तचामरसंयोगोत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) उज्ज्वलेति। उज्ज्वलया कनकशृङ्खलया रचितः कल्पितो यो रश्मिकलापः प्रग्रहसमूहस्तेन कलितया बद्धया, तथा लाक्षावत् लोहितो रक्तवर्णः लम्बो दीर्घः लोलश्चञ्चलः सटासन्तानो जटासमूहो यस्याः

দশঃ যে সকল বায়ু পান করিয়াছিল, তাহা যেন নাসিকারন্ধ্র দ্বারা নিঃসৃত করিয়া দিতেছে। (ঙ) মুখমধ্যে সঞ্চলিত কবিকার (কড়িয়ালির) তীক্ষ্ণ অগ্রভাগের ঘর্ষণে লালা হইতে বিস্তৃত ফেন উৎপন্ন হইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সমুদ্রমধ্যে নিবাসকালীন যে সকল অমৃত পান করিয়াছিল, তাহার গণ্ডূষ যেন বাহির করিয়া দিতেছে। (ক) অত্যন্ত দীর্ঘ এবং মাংস না থাকায় কাষ্ঠ বা প্রস্তর হইতে খোদিতের ন্যায় অবস্থিত, মুখমণ্ডল ধারণ করিতেছিল। (খ) কর্ণযুগলের অগ্রভাগ নিশ্চল ছিল, তাহার উপরে মস্তকস্থিত রক্তবর্ণ মণিসমূহের রশ্মি আসিয়া পড়িতেছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যেন দু'খানা রক্তবর্ণ চামর কর্ণযুগলের উপরে সংলগ্ন হইয়া রহিয়াছে। (গ) চকমকে সোনার শিকলের লাগামে তাহার গলা বাঁধা ছিল গলার উপরে লা'র মত রক্তবর্ণ লম্বা লম্বা বহুতর জটা ঝুলিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে—সমুদ্রমধ্যে বিচরণ করায় যেন বহুতর প্রবাল

---

(१) फेनलवान्। (२) अतिनिर्म्मांसतया। (३)...रुचिर...।

सञ्चरण-लग्न विद्रुम-पल्लवयेव शिरोधरयोपशोभितम्, (ग) अतिकुटिल-कनक-पत्र-लता-प्रतान-भङ्गुरेण पदे पदे रणितरत्नमालेन स्थूलमुक्ताफलप्रायेण तारा-गणेनेव सन्ध्यारागं (१) अरुणेनाश्वालङ्कारेणालङ्कृतम्, (घ) अश्वालङ्कार-निहित-मरकतरत्न-प्रभा-श्यामायमान-देहतया गगनतल-निपतित-दिवसकर-रथ-तुरग (२) शङ्कामिवोपजनयन्तम्, (ङ) अतितेजस्वितया जव-निरोध-रोष-वशात् प्रतिरोम-कूपात् समुद्गतानि (३) सागर-परिचय-लग्नानि (४) स्वेद-लव-(५) जालकानि

तया, अतएव जलनिधिसञ्चरणे पूर्वं समुद्रे विचरणकाले लग्नाः संसक्ताः विद्रुमपल्लवाससत्या विसृत-प्रवाला यस्यां तयेव, शिरोधरया ग्रीवया। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) अतीति। अतिकुटिलानां नितान्तवक्राणां कनकपत्रलतानां स्वर्णनिर्म्मितपत्राकार-लताकारांश-विशेषाणां प्रतानो बाहुल्यं यत्र तस्य तत् भङ्गुरं समुदायेनापि वक्रञ्चेति तेन, पदे पदे प्रतिपदक्षेपे रणिता शब्दिता रत्नमाला यत्र तेन, स्थूलानां मुक्ताफलानां प्रायो बाहुल्यं यत्र तेन, अरुणेन रक्तवर्णेन अश्वालङ्कारेण अश्वाभरणेन अलङ्कृतं भूषितम् अतएव तारागणेन नक्षत्रसमूहेन सन्ध्यारागं सन्ध्याकालीनरक्तिमानमिव स्थितं। अत्रोपमालङ्कारः।

(ङ) अश्वेति। अश्वालङ्कारेषु निहितानां अर्पितानां मरकतरत्नानां प्रभाभिः श्यामायमानः श्याम-वदाचरन् देहो यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, गगनतलात् निपतितो यो दिवसकररथस्य सूर्य्यरथस्य तुरग अश्वः तस्य शङ्कां आत्मनि भ्रमं उपजनयन्तं कुर्वन्तमिव स्थितम्। रविरथतुरगाणामपि श्यामत्वादतिविशालत्वा-च्चेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) अतीति। अतितेजस्वितयेति च रोषोत्पत्तौ हेतुः। जवनिरोधेन पालककर्त्तृकवेगावरोधेन यो रोषः क्रोधस्तद्वशात् प्रतिरोमकूपात् समुद्गतानि उत्थितानि स्वेदलवजालकानि घर्म्मबिन्दुसमूहान्, सागरपरि-चयेन समुद्रमध्ये विचरणपौनःपुन्येन लग्नानि देहसंसक्तानि मुक्ताफलानि मौक्तिकानीव वर्षन्तम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

লাগিয়া রহিয়াছে, এইরূপ গ্রীবাদ্বারা সে শোভা পাইতেছিল; (ঘ) রক্তবর্ণ অশ্বালঙ্কারে সে অলঙ্কৃত ছিল, সেই অলঙ্কারের মধ্যে পত্র ও লতার ন্যায় আকৃতিবিশিষ্ট অত্যন্ত বক্র স্বর্ণনির্ম্মিত বহুতর ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র অংশ ছিল, আর সে অলঙ্কারগুলি প্রায় সম্পূর্ণই বক্র ছিল, প্রত্যেক পদক্ষেপে মণিময় মালার শব্দ হইতেছিল, আর তাহার মধ্যে বহুসংখ্যকই বড় বড় মুক্তা ছিল, সুতরাং নক্ষত্রসমূহে শোভিত সন্ধ্যারাগের ন্যায় সেই অশ্বটাকে দেখা যাইতেছিল। (ঙ) সেই অলঙ্কারগুলির মধ্যে স্থাপিত মরকত-মণির কিরণে তাহার দেহ শ্যামবর্ণ হওয়ায় সে যেন আকাশ হইতে নিপতিত সূর্য্যরথ-নিযুক্ত ঘোটকের ভ্রম জন্মাইতেছিল। (চ) সেই অশ্বটা অত্যন্ত তেজস্বী, অথচ তাহারই বেগ-রোধ করা হইয়াছিল; সুতরাং ক্রোধবশতঃ

---

(१) सन्ध्यारागमरुणेन, सन्ध्यारागानुरागेन। (२)...तुरङ्गम...।
(३)...कूपसमुद्गतानि, कूपसमुद्गतानि। (४)...परिचयाल्लग्नानि। (५) स्वेदजललव।

वर्षन्तम्, (च) इन्द्रनीलमणि-पादपीठानुकारिभिरञ्जनशिला-घटितैरिव अनवरत-पतनोत्पतन-जनित-विषम-मुखर-रवैः (१) पृथुभिः खुरपुटैर्जर्जरितवसुन्धरैः मुरजवाद्यमिवाभ्यस्यन्तम्, (छ) उत्कीर्णमिव जङ्घासु, विस्तारितमिवोरसि, श्लक्ष्णीकृतमिव मुखे, प्रसारितमिव कन्धरायाम्, उल्लिखितमिव पार्श्वयोः, द्विगुणीकृतमिव जघनभागे, (ज) जव-(२) प्रतिपक्षमिव गरुत्मतः, त्रैलोक्यसञ्चरण-सहायमिव मारुतस्य, अंशावतारमिवोच्चैःश्रवसः, वेगसब्रह्मचारिणमिव मनसः, (झ)

(छ) इन्द्रेति। इन्द्रनीलमणेर्नीलकान्तमणेः पादपीठानि अनुकर्तुं शीलं येषां तैः, श्यामत्वादिति भावः। अञ्जनशिलया कज्जलवत् कृष्णवर्णपाषाणेन घटितैर्निर्मितैरिव, अनवरतं यत् पतनं भूमाववतरणं उत्पतनं भूमेरुत्थानञ्च ताभ्यां जनितो विषमो विकटः मुखररवः अग्रभागध्वनिर्येषां तैः, पृथुभिर्विशालैः, जर्जरितवसुन्धरैर्विदारितभूतलैः खुरपुटैः, मुरजवाद्यं मृदङ्गवाद्यं अभ्यस्यन्तं शिक्षमाणमिव तादृशशब्दोत्पत्तेरिति भावः। अत्र आर्थोपमासङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) उत्कीर्णमिति। जङ्घासु जङ्घावच्छेदे उत्कीर्णमिव दारुविशेषं पाषाणं वा सन्तक्ष्य बहिष्कृतमिव, तत्र देहोपयोगिमांसाभावेन केवलास्थिमयतया प्रतीयमानत्वादिति भावः। इतः प्रभृति द्विगुणीकृतमिवेत्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। सर्वत्र विधिनेति कर्तृपदमूहनीयम्, अवयवेष्ववयविनः सत्ताङ्गीकारेणाधिकरण एव सप्तमी। जङ्घायुगलस्यातीव दीर्घतया अंशबहुत्वाभिप्रायेण बहुवचनम्। तस्य जङ्घायुगलमुत्कीर्णमिवेति सरलार्थः। एवमन्यत्रापि बोध्यम्। उरसि वक्षसि। श्लक्ष्णीकृतमिव चिक्कणीकृतमिव। कन्धरायां ग्रीवायां प्रसारितमिव आयतीकृतमिव दीर्घग्रीवत्वादिति भावः। उल्लिखितमिव उत्कीर्णमिव देहोपयोगिमांसाभावादिति भावः। जघनभागे नितम्बदेशे द्विगुणीकृतमिव, तयोरतिस्थूलत्वादिति भावः।

(झ) जवेति। गरुत्मतो गरुडस्य जवप्रतिपक्षमिव वेगे प्रतिस्पर्द्धिनमिव, तत्तुल्यवेगशालित्वादिति भावः। एवमन्यत्रापि। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। अन्येष्वप्येवम्। मारुतस्य वायोः त्रैलोक्यसञ्चरणसहायमिव त्रिभुवनविचरणसहचरमिव। उच्चैःश्रवसो देवराजाश्वस्य। वेगे सब्रह्मचारिणं सतीर्थमिव।

প্রত্যেক রোমকূপ হইতে সমুত্থিত ঘর্ম্মবিন্দুসমূহ বর্ষণ করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, বহুবার সমুদ্রমধ্যে বিচরণ করায় গাত্রসংলগ্ন মুক্তাসমূহ যেন বর্ষণ করিতেছে। (ছ) বিধাতা তাহার বিস্তৃত খুরগুলিকে যেন কজ্জলের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ প্রস্তর দ্বারা নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন, সুতরাং সেগুলি, নীলকান্তমণি-নির্ম্মিত পাদপীঠের অনুকরণ করিতেছিল এবং ভূতল বিদারণ করিতেছিল; অতএব অনবরত উত্থান ও পতন কর্ত্তৃক উৎপাদিত সেই খুরগুলির অগ্রভাগের বিকটশব্দে সে যেন মৃদঙ্গবাদ্য অভ্যাস করিতেছিল। (জ) বিধাতা তাহার জঙ্ঘাদ্বয় যেন কাষ্ঠ বা পাষাণ হইতে খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন, বক্ষঃস্থল যেন বিস্তৃত করিয়াছিলেন, মুখভাগ যেন পালিশ করিয়া দিয়াছিলেন, গ্রীবা যেন আয়ত করিয়াছিলেন, পার্শ্বযুগলও যেন খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন এবং নিতম্বদ্বয় যেন দ্বিগুণ করিয়া নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন। (ঝ) আর সে, বেগে গরুড়ের যেন প্রতিপক্ষ, ত্রিভুবন-বিচরণে বায়ুর যেন

---

(१)...विषमखरमुखरवैः। (२) जय...।

हरिचरणमिव सकलवसुन्धरोल्लङ्घनक्षमम्, (ञ) वरुणहंसमिव मानस प्रचारम्, (ट) मधुमासदिवसमिव विकसिताशोकपाटलम्, (ठ) व्रतिनमिव भस्म-सित-पुण्ड्र-काङ्कितमुखम्, (ड) कमलवनमिव मधु-पङ्क-पिङ्ग-केशरम्, (ढ) ग्रीष्मदिवसमिव महायाममुग्रतेजसञ्च, (ण) भुजङ्गमिव (१)

(ञ) हरीति । हरेर्वामनरूपस्य विष्णोश्चरणमिव । बलियज्ञे वामनचरणस्य सकलवसुन्धरातिक्रमणात् इन्द्रायुधस्यापि तद्योग्यत्वादिति भावः । अत्र पूर्णोपमालङ्कारः ।

(ट) वरुणेति । मानसवत् मनोवत् प्रचारो गतिर्यस्य तम्, पक्षे मानसे तदाख्यसरोवरे प्रचारो विचरणं यस्य तम् । पूर्णोपमा ।

(ठ) मध्विति । मधुमासस्य चैत्रमासस्य दिवसमिव, विकसितं यदशोकं पुष्पं तद्वत् पाटलं श्वेतरक्तम्, पक्षे विकसितैरशोकैः पुष्पैः पाटलम् । पूर्णोपमा ।

(ड) व्रतिनमिति । व्रतिनं किञ्चिन्नियमवन्तं श्राद्धादिवैधकर्म्मप्रवृत्तं द्विजमिव, भस्मवत् सितः शुभ्रो यः पुण्ड्रको ललाटे रोमविन्यासविशेषः, पक्षे भस्मना यः सितपुण्ड्रकः शुभ्रतिलकविशेषस्तेन अङ्कितं चिह्नितं मुखं यस्य तम् । पूर्णोपमा ।

(ढ) कमलेति । कमलवनं पद्मवनमिव, मधुना पुष्परसेन युक्तो यः पङ्को वचादिचूर्णलेपः, पक्षे मधुपङ्को गाढमकरन्दः, तेन पिङ्गाः पिङ्गलवर्णाः केशराः स्कन्धकेशाः किञ्जल्काश्च यस्य तम् । पूर्णोपमा । अत्र वैद्यशास्त्रम् यथा—"अश्वस्य वातादिदोषशान्तये मधुयुक्तवचादिचूर्णस्य पङ्केन तनुलेपनम् ।"

(ण) ग्रीष्मेति । महान् आयामो दीर्घता यस्य तम्, तथा उग्रं भयङ्करं तेजो बलं यस्य तम्, अन्यत्र तु महान्तः अन्यान्यकालापेक्षया बृहत्तमाः यामाः प्रहरा यस्मिन् तम्, तथा उग्रं दारुणं तेज आतपो यस्मिन् तम् । पूर्णोपमा ।

(त) भुजङ्गमिति । भुजङ्गं सर्पमिव, सदा सर्वदा गतौ गमने अभिमुखमुन्मुखं, पक्षे सदागतेर्वायोः अभिमुखं अभिमुखावस्थितम् । पूर्णोपमा ।

সহচর, উচ্চৈঃশ্রবার যেন অংশাবতার এবং বেগশিক্ষায় মনের যেন সতীর্থ ছিল। (ঞ) সেই অশ্বটা, বামনরূপী নারায়ণের চরণের ন্যায় সমস্ত পৃথিবীলঙ্ঘনে সমর্থ ছিল; (ট) বরুণের হংস যেমন মানস-সরোবরে বিচরণ করে, সেও তেমন মনের মতন বেগে বিচরণ করিত; (ঠ) চৈত্র মাসের দিন যেমন প্রস্ফুটিত অশোক-কুসুমে পাটলবর্ণ হয়, সেও তেমন প্রস্ফুটিত অশোক-কুসুমের ন্যায় পাটলবর্ণ ছিল; (ড) বৈধকার্য্যে প্রবৃত্ত ব্রাহ্মণের মুখমণ্ডল যেমন ভস্মদ্বারা নির্ম্মিত শুভ্রবর্ণ ত্রিপুণ্ড্রকে অঙ্কিত থাকে, তাহার মুখখানাও তেমন ভস্মের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ললাটস্থিত রোমাবর্ত্তে অঙ্কিত ছিল; (ঢ) পদ্মসমূহের কেশরগুলি যেমন তাহার গাঢ় মধুতে পিঙ্গলবর্ণ হইয়া থাকে, তাহার কেশরগুলিও (স্কন্ধের কেশগুলিও) তেমন মধু-মিশ্রিত বচ প্রভৃতির লেপে পিঙ্গলবর্ণ হইয়াছিল; (ণ) গ্রীষ্মকালের দিন যেমন অন্যান্য ঋতু অপেক্ষা বৃহৎ বৃহৎ প্রহর ও দারুণ রৌদ্র-সমন্বিত হয়, সেই অশ্বটার শরীরও তেমন অত্যন্ত

(१) उग्रतेजसा भुजगं ।

सदागत्यभिमुखम्, (त) उदधिपुलिनमिव शङ्खमालिकाभरणम्, (थ) भीत-मिव स्तब्धकर्णम्, (द) विद्याधरराज्यमिव चक्रवर्त्तिनरवाहनोचितम्, (ध) सूर्य्योदयमिव सकलभुवनार्घार्हम्, (१) (न) अश्वातिशयमिन्द्रायुधमद्राक्षीत् । (प)

दृष्ट्वा च तमदृष्टपूर्वममानुषलोकोचिताकारमखिल-त्रिभुवन-राज्योचितमशेष-

---

(थ) उदधीति । उदधिपुलिनं समुद्रसैकतमिव, शङ्खमालिका कण्ठार्पिता जलात् स्वयमुत्थिता च या शङ्खश्रेणि: सैवाभरणं भूषणं यस्य तम् । पूर्णोपमा ।

(द) भीतमिति । भीतं अपरकथ्यमाननिजकार्य्यश्रवणादुद्विग्नं चौरादिजनमिव, स्तब्धौ निस्पन्दौ कर्णौ यस्य तम् । पूर्णोपमा ।

(ध) विद्येति । विद्याधराणां देवयोनिविशेषाणां राज्यमिव, चक्रवर्त्तिन: सार्वभौमस्य समग्रपृथिवी-पतीभूतस्य नरस्य पुरुषस्य वाहने वहनकरणे उचितं योग्यम्, आत्मनोऽपि सर्वथैवोत्कृष्टत्वादिति भाव: । पक्षे चक्रवर्त्तिन: सार्वभौमस्य नरवाहनस्य नरवाहनदत्तनामकस्य वत्सराजपुत्त्रस्य उचितं योग्यम् । पूर्णो-पमा । पुरा किल उदयनाख्यस्य वत्सराजस्य महिष्यां वासवदत्तायां नरवाहनदत्तनामा पुत्त्रो जात:, स च विद्याधरराज्यस्य राजा बभूवेति कथासरित्सागरे विस्तृतवार्त्तानुसन्धेया ।

(न) सूर्य्योदयमिति । सकलभुवनमेव अर्घो मूल्यं तस्य अर्हो योग्यस्तम्, समग्रभुवनरूपमूल्येन क्रय-योग्यमित्यर्थ: परमोत्कृष्टत्वादिति भाव: । पक्षे सकलभुवनस्य समस्तजगद्वासिनो जनस्य अर्घे अर्घदाने अर्हं योग्यं । पूर्णोपमा ।

(प) अश्वेति । अश्वेषु अतिशय उत्कर्षो यस्य तं अश्वजातिषूत्कृष्टमित्यर्थ: । अद्राक्षीच्चन्द्रापीड इति शेष: ।

(फ) दृष्ट्वेति । [illegible]लोक: स्वर्गलोकस्तस्य उचितो योग्य आकारो यस्य तम् । अखिलं

দৈর্ঘ্য ও ভয়ঙ্কর বল- [illegible]ত ছিল ; (ত) সর্প যেমন বায়ুর অভিমুখে অবস্থান করে, ইন্দ্রায়ুধও তেমন সর্ব্বদা [illegible] গমনের নিমিত্ত উন্মুখ হইয়া অবস্থান করিত ; (থ, দ) আর সেই ইন্দ্রায়ুধ, সমুদ্র-পুলিনের [illegible]ন্যায় শঙ্খমালাময় অলঙ্কারে অলঙ্কৃত এবং ভীত ব্যক্তির ন্যায় স্তব্ধকর্ণ ছিল ; (ধ) বিদ্যাধর রাজ্য যেমন সমগ্র পৃথিবীর অধিপতি নরবাহনদত্তের উপযুক্ত ছিল ইন্দ্রায়ুধও তেমন যিনি সম[illegible] পৃথিবীর অধিপতি, এইরূপ পুরুষের বাহনের উপযুক্ত ছিল ; (ন) আর সূর্য্যোদয় যেমন সক[illegible]ল জগদ্‌বাসী লোকের অর্ঘদানের যোগ্য, ইন্দ্রায়ুধও তেমন সমগ্র ভুবনরূপ মূল্যের যোগ্য ছিল । (প) চন্দ্রাপীড় অশ্বজাতির মধ্যে উৎকৃষ্ট সেই ইন্দ্রায়ু[illegible]কে দর্শন করিলেন ।

(ফ) চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত ধীরপ্রকৃতি হইলেও, সেই অশ্বরূপী অনির্ব্বচনীয় পদার্থ দেখিয়া

---

(१) सकलभुवनाभ्यर्हं ।

लक्षणोपपन्नमश्वरूपातिशयमतिधीरप्रकृतेरपि चन्द्रापीडस्य पस्पर्श विस्मयं (१) हृदयम्। (फ) आसीच्चास्य मनसि 'सरभस-परिवर्त्तन-(२) वलित-(३) वासुकि-भ्रमित-मन्दरेण मथ्नता जलधि-(४) जलं इदमश्वरत्नमनुद्धरता (५) पूर्वं किं नाम रत्नमुद्धृतं सुरासुरलोकेन (६)। (ब) अनारोहता च मेरुशिलातलविशालमस्य पृष्ठमाखण्डलेन किमासादितं त्रैलोक्यराज्यफलम्। (भ) उच्चैःश्रवसा विस्मितहृदयो वञ्चितः खलु जलनिधिना शतमखः। (म) मन्ये च भगवतो

त्रिभुवनं राज्यं यस्य तस्य देवराजस्येत्यर्थः उचितं योग्यं। अशेषैः समस्तैः लक्षणैरश्वोत्कर्षलक्षणैः उपपन्नं विशिष्टं। अश्वरूपः अतिशयः अनिर्वचनीयः कश्चिदतिरेकः अतिरिक्तः पदार्थ इत्यर्थः तम्, तमिन्द्रायुधं इह विद्यमानस्य। हृदयं कर्त्तृ विस्मयं पस्पर्श आश्चर्यं प्राप। अत्राभेदेऽपि अश्वरूपातिशयमित्यनेन भेदाध्यवसायादतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ब) आसीदिति। किञ्चेति चार्थः। अस्य चन्द्रापीडस्य मनसि ईदृशी वृत्तिरासीदित्यर्थः। सरभसं सवेगं यत् परिवर्त्तनं आकर्षणं तेन वलितो वर्द्धितो यो वासुकिरनन्तनागस्तेन भ्रमितो घूर्णितो यो मन्दरः पर्वतस्तेन करणेन। मथ्नता आलोडयता सुरासुरलोकेन देवदानवगणेन। किं नाम रत्नमुद्धृतं न किमपीत्यर्थः। जगत्प्रथितानि उच्चैःश्रवःप्रभृतीनि रत्नानि इतस्तुच्छानीति भावः।

(भ) अनेति। आखण्डलेन इन्द्रेण, मेरुशिलातलवत् सुमेरुपर्वतस्य वृहत् पाषाणवत् विशालं अस्य इन्द्रायुधस्य पृष्ठं अनारोहता सता, किं त्रैलोक्यराज्यस्य त्रिभुवनराजत्वकरणस्य फलं आसादितं प्राप्तं अपि तु किमपि नेत्यर्थः। अस्य पृष्ठारोहणमतीवसौभाग्यफलमिति भावः।

उच्चैरिति। उच्चैःश्रवसा तदाख्यघोटकदर्शनेनेत्यर्थः विस्मितं हृदयं यस्य सः, शतमख इन्द्रः जलनिधिना मथ्यमानेन समुद्रेण वञ्चितः खलु, येनेदं न दत्तमिति भावः। अत्र ध्रुवशब्दसमानार्थकखलुशब्दोपादानाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

তাঁহার হৃদয় বিস্ময়াপন্ন হইল; কারণ, সেই অশ্ব, স্বর্গলোকের উপযুক্ত-আকার বিশিষ্ট, সমগ্র ত্রিভুবনাধিপতির আরোহণের যোগ্য এবং সর্ব্বোৎকৃষ্ট অশ্বের সকল লক্ষণ-সংযুক্ত ছিল এবং সেরূপ অশ্ব পূর্ব্বে আর কখনও তাঁহার দৃষ্টিগোচর হয় নাই। (ব) তখন তাঁহার এইরূপ মনে হইতে লাগিল যে,—'বেগের সহিত আকর্ষণ করায় বর্দ্ধিত-দেহ বাসুকির টানে ঘূর্ণিত মন্দর-পর্ব্বতদ্বারা সমুদ্র মন্থন করতঃ দেব ও দানবগণ, এই অশ্বরত্ন উদ্ধার না করিয়া কি রত্ন উদ্ধার করিয়াছিলেন? (ভ) দেবরাজ, সুমেরু-পর্ব্বতের শিলাতলের ন্যায় বিস্তৃত এই অশ্বের পৃষ্ঠে আরোহণ না করিয়া ত্রিজগতের রাজত্ব করায় কি ফল পাইতেছেন? (ম) উচ্চৈঃশ্রবাকে

---

(१) विस्मयः। (२)...विवर्त्तन...। (३)...चलित...। (४) जलनिधि...।
(५) अभ्युद्धरता, अमुद्धरता। (६) सुरलोकेन।

नारायणस्य चक्षुर्गोचरमियतापि (१) कालेन नायमुपगतः, येनाद्यापि तां गरुड़ारोहण-व्यसनितां न त्यजति (२)। (य) अहो खल्वतिशयित-(३) त्रिदशराज-(४) समृद्धिरियं तातस्य राज्यलक्ष्मीः, यदेवंविधान्यपि सकल-त्रिभुवनदुर्लभानि रत्नान्युपकरणतामागच्छन्ति। (र) अतितेजस्वितया महा-प्राणतया च सदैवतेवेयं (५) अस्याकृतिः, यत्सत्यमारोहणे शङ्कामिव मे जनयति। (ल) न हि सामान्यवाजिनाममानुषलोकोचिताः सकल-त्रिभुवन-विस्मयजनन्य ईदृश्यो भवन्त्याकृतयः। (व) दैवतान्यपि हि मुनिशापवशादुज्झित-निजशरीराणि (६) शापवचनबलोपनीतानि (७) एतानि शरीरान्तराणि (८)

(य) मन्ये इति। अयमश्वः। येन हेतुना। तां पूर्वजातां गरुड़ारोहणे व्यसनितां आसक्तिं न त्यजति नारायण इति शेषः; अन्यथा गरुड़मपहाय एनमेवारोहेदिति भावः। अत्र मन्ये इत्युपादानाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) अहो इति। अतिशयिता अतिक्रान्ता त्रिदशराजस्य देवराजस्य समृद्धिर्यया सा। यद् यस्माद्धेतोः। उपकरणतां भोगसाधनतां आगच्छन्ति प्राप्नुवन्ति। ईदृशं रत्नं देवराजस्य नास्तीति भावः।

(ल) अतीति। अस्याश्वस्य इयमाकृतिः, अतितेजस्वितया अतीवप्रभाववत्तया महाप्राणतया नितान्त-बलशालितया च हेतुना सदैवतेव कयाचिद्देवतया सहितेव अधिष्ठितेव। अत्र देवतासंयोगित्वरूपगुणोत्प्रेक्षा-लङ्कारः। अत एवाह यत्सत्यमिति। यत्सत्यमित्येकमेवाव्ययं याथार्थ्ये।

(व) ननु सदैवतेवेति कथं सम्भाव्यत इत्याह नहीति। सामान्यवाजिनां साधारणघोटकानां आकृतयः, ईदृश्यः अमानुषलोकोचिताः स्वर्गलोकयोग्याः, तथा सकलत्रिभुवनस्य विस्मयजनन्य आश्चर्यजनिका नहि भवन्ति। सुतरां सदैवतेवेति सम्भावनेति भावः।

(श) ननु कथं दैवतमस्याकृतिमाश्रयेदित्याह दैवतानीति। हि यस्मात्। दैवतान्यपि देवा अपि।

দেখিয়াই বিস্মিতচিত্ত হইয়, নিশ্চয়ই সমুদ্রকর্তৃক বঞ্চিত হইয়াছিলেন। (য) আমি মনে করি,—'এত কালের মধ্যেও এই অশ্ব, ভগবান্ নারায়ণের দৃষ্টিগোচর হয় নাই'; যেহেতু, তিনি এখনও সেই গরুড়ে আরোহণ করিবার আসক্তি ত্যাগ করিতেছেন না। (র) কি আশ্চর্য্য! পিতার এই রাজলক্ষ্মী, নিশ্চয়ই দেবরাজের সমৃদ্ধিকে অতিক্রম করিয়াছে; যেহেতু, সমস্ত ত্রিভুবনের মধ্যে দুর্লভ এই জাতীয় রত্নসকলও আসিয়া ক্রমে তাঁহার ভোগ্য হইতেছে। (ল) অত্যন্ত তেজস্বী ও মহাবলবান্ বলিয়া ইহার এই শরীর, কোন দেবতাকর্ত্তৃক যেন অধিষ্ঠিত বলিয়া বোধ হইতেছে; সুতরাং আরোহণ করিতে আমার যেন শঙ্কা জন্মাইতেছে। (ব) কারণ, সাধারণ অশ্বের আকৃতি, এই রূপ, মনুষ্যলোকের অযোগ্য ও সমগ্র ত্রিভুবনের বিস্ময়জনক হয় না। (শ) দেবতারাও মুনিগণের অভিসম্পাতে নিজ নিজ শরীর পরিত্যাগ

(१) क्वचित् अपिशब्दो नास्ति। (२) तं गरुड़ारोहणव्यसनितां न परित्यजति। (३) अतिशय...। (४)...राजा...। (५) सर्वं दैवतेयं। (६)...शरीरकाणि। (७)...वचनोपनीतानि। (८) शरीराणि।

अध्यासत एव। (श) श्रूयते हि पुरा किल (१) स्थूलशिरा नाम महातपा मुनिरखिल त्रिभुवन (२) ललामभूतामप्सरसं रम्भाभिधानां शशाप ; सा सुरलोकमपहाय।श्वहृदये निवेश्यात्मानमश्वहृदयेति विख्याता वड़वा भूत्वा (३) मृत्तिकावत्यां (४) शतधन्वानं नाम राजानमुपसेवमाना मर्त्त्यलोके महान्तं कालमुवास। (ष) अन्ये च महात्मानो मुनिजनशाप-परिपीतप्रभावा नानाकारा भूत्वा बभ्रमुरिमं लोकम्। असंशयमनेनापि महात्मना केनापि शापभाजा भवितव्यम्। आवेदयतीव मदन्तःकरणमस्य दिव्यताम्।' (स)

उज्झितशरीराणि त्यक्तदेवदेहानि। शापवचनवलेन अभिसम्पातवाक्यप्रभावेण उपनीतानि उपस्थापितानि, एतानि ईदृशानि। अध्यासत एव आश्रयन्त्येव। सुतरामस्याकृतावपि कस्यचिद्देवतस्याश्रयसम्भावनेति भावः।

(ष) नन्वीदृशी घटना कदाचिद्दृष्टा श्रुता वेत्याह श्रूयत इति। अखिलस्य त्रिभुवनस्य ललामभूतामलङ्कारस्वरूपां। "स्वा जलौकसः समा अप्सरसः" इति श्रीपत्युक्तेः "वासो दशा अप्सरसः वर्षाप: कृत्तिकामघाः। बहुत्वश्च सदेकत्वमानवतेश्च विंशते"रिति चन्द्रगोमुग्रक्तेश्च अप्सरसमित्येकवचनं। प्रयोगश्च काम्पिल्याभ्युदयादौ "अप्सरा व्यधित पार्श्वमयूत्यम्।" वड़वा अश्वी। मृत्तिकावत्यां तदाख्यायां राजधान्यां। पुरा किल स्थूलशिरा नाम महर्षिः समित्कुशाहरणाय वनं पर्य्यटन् 'हन्त! वयमधः पतामः, परित्रायस्वाम्'-नित्यार्त्तरवमाकर्ण्य तत्प्रदेशमुपगम्य लताप्रान्तमावाश्रितान् अतलस्पर्शगर्त्ते पतनोन्मुखान् कांश्चन पुरुषानालोक्य 'के यूय'मित्यपृच्छत्, ते च 'स्थूलशिरसः पितरो वयं, तस्य तु सन्तानाभावात् ततपरमधः पतामः' इत्यब्रुवन्, स्थूलशिरास्तु तदाकर्ण्य अपत्यमुत्पादयितुकामो रम्भां चकमे, सा तु देवकार्य्यं कृत्वा आगच्छमीत्यभिधाय गत्वा विलम्बितवतीति मुनिस्तां वड़वा भवेति शशाप। इति महाभारतवार्त्ता। अंशान्तरन्तु कविनैवोक्तम्।

(स) अन्य इति। मुनिजनानां शापेन परिपीतो विलयं नीतः प्रभावो माहात्म्यं येषां ते। यथा अगस्त्यादीनां शापेन नहुषादयः अजगररूपादिभिः। संशयस्याभाव इत्यसंशयम्, अभावार्थेऽव्ययीभावः। दिव्यतां स्वर्गीयत्वम्।

করিয়া, শাপবাক্যের প্রভাবে উপস্থাপিত এইরূপ অন্যান্য শরীর আশ্রয় করিয়াই থাকেন। (ষ) যেহেতু—শুনা যায় 'পূর্ব্বকালে স্থূলশিরা নামে কোন মহাতপা মুনি, সমস্ত ত্রিজগতের অলঙ্কারস্বরূপা রম্ভা নামে অপ্সরাকে অভিশাপ দিয়াছিলেন, সেই জন্য রম্ভা স্বর্গলোক পরিত্যাগ করিয়া অশ্বের হৃদয়ে আপনাকে প্রবেশ করাইয়া 'অশ্বহৃদয়া' নামে কোন অশ্বী হইয়া মৃত্তিকাবতী নামে রাজধানীতে শতধন্বানামক রাজার সেবা করতঃ বহুকাল যাবৎ মর্ত্ত্যলোকে বাস করিয়াছিল। (স) অন্যান্য মহাত্মারাও, মুনিগণের অভিসম্পাতে স্ব স্ব প্রভাব বিনষ্ট হইলে নানাপ্রকার আকৃতি ধারণ করিয়া এই জগতে বিচরণ করিয়া গিয়াছেন। সুতরাং এও শাপগ্রস্ত কোন মহাত্মাই হইবে, ইহাতে কোন সংশয় নাই। আমার অন্তঃকরণও ইহাকে স্বর্গীয় বলিয়া যেন পরিচয় দিতেছে।

---

(१) क्वचित् किलशब्दो नास्ति। (२)...भुवन...। (३) क्वचित् भूत्वेति नास्ति। (४) मृत्तिकावत्यां।

इति विचिन्तयन्नेवारूरुक्षुरासनादुदतिष्ठत्। मनसा च तं तुरङ्गममुपसृत्य (१) 'महात्मन्! अर्वन्! योऽसि सोऽसि, नमोऽस्तु ते, मर्षणीयोऽयमारोहणातिक्रमोऽस्माकम्, अपरिगतानि दैवतान्यप्यनुचित-परिभवभाञ्जि भवन्ति' इत्यामन्त्रयाम्बभूव। (ङ) विदिताभिप्राय इव स तमिन्द्रायुधश्चटुलशिरः-केसर-सटा-हति-कूणितार्द्धेकर-तारकेण तिर्य्यक् चक्षुषा विलोक्य मुहुर्मुहुस्ताडयता क्षितितलं उत्खात-धूलि-धूसरित-क्रोड़-रोम-राजिना दक्षिणखुरेणारोहणायाह्वयन्निव स्फुरित-प्राण-विवर-घर्घरध्वनिमिश्रं मधुरमपरुष-(२) हुङ्कारपरम्परानुबद्धमतिमनोहरं हेषारवं (३) अकरोत्। (च)

(ङ) इतीति। तं तुरङ्गममुपसृत्य तस्याश्वस्य समीपं गत्वा चन्द्रापीड़ः, मनसा इत्यामन्त्रयाम्बभूव अभ्यर्थयामास। किन्तदामन्त्रणमित्याह महात्मन्निति। हे अर्वन्! घोटक! "वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः।" इत्यमरः। मर्षणीयः क्षन्तव्यः। अपरिगतानि दैवत्वेनापरिचितानि, देवतान्यपि देवा अपि, अनुचितं अयोग्यं परिभवं अवमाननां भजन्ते प्राप्नुवन्तीति तानि तथोक्तानि भवन्ति। सुतरां भवानप्यपरिचितत्वेनैव ममैतदारोहणपरिभवभाग्भवतीति भावः।

(च) विदितेति। स इन्द्रायुधोऽतिमनोहरं हेषारवमकरोदित्यन्वयः। विदितः अभिप्रायश्चन्द्रापीड़स्य सविनय आशयो येन सः। चटुलस्य चपलस्य शिरसो याः केसरा एव सटा जटास्तासां आहत्या ताड़नेन कूणिता कुञ्चिता अर्द्धेकरा ईषद्वक्रा च तारका कनीनिका यस्य तेन तादृशेन चक्षुषा तं चन्द्रापीड़ं विलोक्य। उत्खाताभिराघातैनोत्थापिताभिः धूलिभिर्धूरेणुभिः धूसरिता धूसवर्णीकृता क्रोड़स्य रोमराजिर्येन तादृशेन दक्षिणखुरेन तं चन्द्रापीड़ं आह्वयन्निव सन्, स्फुरितस्य स्पन्दितस्य प्राणविवरस्य नासिकारन्ध्रस्य यो घर्घरध्वनिस्तेन मिश्रं संयुक्तं, मधुरं सुश्राव्यं अपरुषया अकर्कशया हुङ्कारपरम्परया हुमित्येवंशब्दश्रेण्या अनुबद्धं सम्मिलितं अतिमनोहरं हेषारवमकरोत्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षाद्वयेन सङ्कीर्णा स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(ঙ) এইরূপ চিন্তা করিতে করিতেই চন্দ্রাপীড় আরোহণ করিবার ইচ্ছায় আসন হইতে উঠিলেন এবং সেই অশ্বের নিকট যাইয়া মনে মনে তাহাকে এই অভ্যর্থনা করিলেন যে, 'হে মহাত্মন্! অশ্ব! তুমি যে হও, সে হও, তোমাকে নমস্কার; তুমি আমার এই আরোহণরূপ মর্য্যাদালঙ্ঘন সর্ব্বপ্রকারে ক্ষমা কর; কারণ, অপরিচিত দেবতারাও, অসঙ্গত অনেক অবমাননাভাগী হইয়া থাকেন। (চ) তদনন্তর সেই ইন্দ্রায়ুধ চন্দ্রাপীড়ের অভিপ্রায় জানিয়াই যেন, চঞ্চল মস্তকস্থিত কেসররূপ জটার তাড়নে আকুঞ্চিত ও বক্র তারাসমন্বিত নয়নদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের প্রতি তির্য্যগ্‌ভাবে দৃষ্টিপাত করিয়া, দক্ষিণ খুর দ্বারা বারংবার ভূতল তাড়ন করিয়া উত্থিত ধূলিরাশিতে ক্রোড়ের রোমসমূহ ধূসরবর্ণ করিয়া, আহ্বান করিতে করিতেই যেন, স্পন্দিত নাসিকাবিবরে 'ঘর্ঘর' শব্দসংযুক্ত ও অকর্কশ হুঙ্কারসমন্বিত সুশ্রাব্য ও অতি মনোহর হ্রেষারব করিল।

(१) अनुपसृत्य, समुपसृत्य। (२) अपरुषं। (३) अतिमनोहरहेषारवं।

अथानेन मधुर-हेषितेन (१) दत्तारोहणाभ्यनुज्ञ इव इन्द्रायुधमारुरोह चन्द्रापीड़ः। (क) समारुह्य तं प्रादेशमात्रमिव त्रैलोक्यमखिलं मन्यमानो निर्गत्य, जलधर-(२) विमुक्तोपलासार-परुषेण जर्जरयतेव रसातलमतिनिष्ठुरेण खुरपुटानां रवेण, खुररजोनिरुद्ध-घ्राण-घोर-घोषेण च हेषितेन (३) वधिरीकृत-सकल-भुवन-(४) विवरम्, (ख) अशिशिरकिरण-दीधिति-परामर्श-(५) स्फुरित-विमल-फलकेन ऊर्द्धीकृतेन कुन्त-लता-वनेन उन्नाल-नीलोत्पल-कलिका-वन-गहनं सर इव

अत्रो अश्वहेषारवस्य मधुरतां मनोहरताञ्चोपवर्णयन् कविरसौ कोकिल-कामिनी-कलकण्ठरवं वीणानिनादञ्च कमिवाश्रौषीत्।

(क) अथेति। अनेन इन्द्रायुधेन कर्त्रा, मधुरहेषितेन सुश्राव्यहेषारवेण करणेन, दत्ता आरोहणाय अभ्यनुज्ञा अनुमतिर्यस्य स इव चन्द्रापीड़ः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) समारुह्येति। तमिन्द्रायुधं समारुह्य चन्द्रापीड़ः, अखिलं त्रैलोक्यं त्रिभुवनं, प्रसारित-तर्जन्यङ्गुष्ठपरिमितं मानं प्रादेशः प्रदेशिन्यादिभिः सार्द्धमङ्गुष्ठे वितते सति। प्रादेशताल-गोकर्णवितस्तयो-र्यथाक्रमं।" इत्यभिधानचिन्तामणिः। तन्मात्रमिव मन्यमानः, इन्द्रायुधस्य सम्भावनीयनिरतिशयवेगवशेनाति-शीघ्रलङ्घनसम्भवादिति भावः, निर्गत्य अश्वसैन्यमपश्यदिति परेणान्वयः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। अथ द्वितीयान्तपदानि अश्वसैन्यमित्यस्य विशेषणानि। जलधरैर्मेघैः विमुक्तो सृष्टो य उपलासारः सन्तता शिलावृष्टि-स्तेनेव तस्य रववदित्यर्थः परुषेण श्रुतिदुःखावहेन, रसाया भुवस्तलं उपरिभागं जर्जरयतेव विदारयतेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा अतिनिष्ठुरेण नितान्तकर्कशेन, खुरपुटानां अश्वखुराग्राणां रवेण शब्देन, तथा खुररजोभिः स्वस्वखुरपुटोत्थापितधूलिभिः निरुद्धानां परिपूरितप्रायाणां घ्राणानां नासिकानां घोर-घोषो दारुणशब्दो यस्मिन् तादृशेन हेषितेन हेषारवेण च वधिरीकृतानि सकलानि भुवनविवराणि भुवन-वासिनां प्राणिनां कर्णरन्ध्राणि येन तत्। अत्र वधिरीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ग) अशिशिरेति। अशिशिरकिरणस्य उष्णरश्मेः सूर्य्यस्य दीधितिपरामर्शेन रश्मिसम्पर्केण स्फुरि-तानि दीप्तानि विमलानि फलकानि अग्रदेशा यस्य तेन, ऊर्द्धीकृतेन उत्तोलितेन, कुन्ता अस्त्रविशेषा एव लता तद्वल्लम्बमानत्वादिति भावः, तासां वनेन समूहेन करणेन, उद्गतानि नालानि यासां तासां नीलोत्-

---

(क) তদনন্তর চন্দ্রাপীড়, ইন্দ্রায়ুধের মধুর হ্রেষারবে আরোহণের অনুমতি পাইয়াই যেন তাহার পৃষ্ঠে আরোহণ করিলেন, (খ) আরোহণ করিয়া সমস্ত ত্রিভুবন যেন প্রাদেশপ্রমাণ মনে করিয়া, বিদ্যালয় হইতে নির্গত হইয়া অসংখ্য অশ্বারোহী সৈন্য দর্শন করিলেন। মেঘমুক্ত শিলাবৃষ্টির শব্দের ন্যায় শ্রুতিকঠোর, ভূতলের যেন বিদারণকারী ও অত্যন্ত কর্কশ খুরপুট-সমূহের শব্দে এবং খুরাঘাতে উত্থাপিত ধূলিসমূহে পরিপূর্ণপ্রায় নাসিকাবিবরের ভয়ঙ্কর শব্দ-মিশ্রিত হ্রেষারবে সেই অশ্বারোহী সৈন্য, জগদ্বাসী সকল প্রাণীর কর্ণবিবর বধির করিয়াছিল; (গ) সূর্য্যের কিরণ-সংস্পর্শে উজ্জ্বল ও নির্ম্মল ফলক-সমন্বিত, উত্তোলিত ও লতাস্বরূপ-

---

(१)...क्रेषितेन। (२) प्रलयजलधर...। (३) क्रेषितेन। (४)...त्रिभुवन...। (५) अशिशिरदीधितिसंस्पर्श...

गगनतलमलङ्कुर्वाणम्, (ग) उद्दण्ड-मायूरातपत्र-सहस्रान्धकारिताष्टदिङ्मुखतया स्फुरित-शतमन्यु-चाप-कलाप-कल्माषमिव जलधरवृन्दम्, (घ) उद्गमत्-फेन-पुञ्ज-धवलित-मुखतया अनवरत-वल्गन-चटुलतया च प्रलय-सागर-जल-कल्लोल-सङ्घातमिव समुन्नतम्, अदृष्ट-पर्य्यन्तमश्वसैन्यं (१) अपश्यत्। (ङ) तच्च सागरजलमिव चन्द्रोदयेन चन्द्रापीडनिर्गमेन सकलमेव सञ्चचालाश्वीयम्। (च) अहमहमिकया च प्रणामलालसाः सरभसापनीतातपत्र-शून्य-शिरसः परस्परोत्-

---

पत्रकलिकानां इन्दीवरकोरकाणां वनेन काननेन गहनं निरन्तरालं सरः सरोवरमिव गगनतलं अलङ्कुर्वाणं। अत्र वनगहनयोः पर्य्यायतया आपाततः पौनरुक्त्यप्रतीतावपि परं गहनशब्दस्य निरन्तरालार्थकतया पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः निरङ्गकेवलरूपकं श्रौत्युपमा चेत्येषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(घ) उद्दण्डेति। उत्तोलिता दण्डा येषां तानि उद्दण्डानि यानि मायूरातपत्राणि मयूरपिच्छकृतच्छत्राणि तेषां सहस्रेण समूहेन करणेन अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि अष्टानां दिशां मुखानि आद्यभागा येन तत् तथोक्तं, तस्य भावस्तया हेतुना, स्फुरितेन उद्दीप्तेन शतमन्युचापकलापेन इन्द्रधनुःसमूहेन कल्माषं चित्रितं जलधरवृन्दं मेघसमूहमिव स्थितम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(ङ) उद्गमदिति। उद्गमद्भिरुद्गच्छद्भिः फेनपुञ्जैः धवलितानि शुभ्रीकृतानि मुखानि अश्वानां वदनानि यस्मिन् तस्य भावस्तया, अनवरतवल्गनेन सतताङ्गसञ्चालनेन चटुलतया समुदयस्यापि चञ्चलतया च हेतुना, समुद्गतं तीरे समुत्थितं, प्रलये प्रलयकाले सागरजलस्य कल्लोलसङ्घातं महातरङ्गसमूहमिव स्थितम्, तस्यापि फेनपुञ्जधवलत्वात् सततचाञ्चल्याच्चेति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। अदृष्टा अतिबहुलतया नयनाविषयत्वादनवलोकिताः पर्य्यन्ताः प्रान्तभागा यस्य तत्।

(च) तच्चेति। किञ्चेति चार्थः। चन्द्रोदयेन सागरजलमिव, चन्द्रापीडनिर्गमेन हेतुना तत् सकलमेव अश्वीयमश्वसैन्यवृन्दं सञ्चचाल तस्य परिवेष्टनाय गमनोद्यमादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। "वृन्दे त्वश्वीयमाश्वव"दित्यमरः।

(छ) अहमिति। अहमादौ अहमादौ इत्यभिमानोऽहमहमिका तया, मयूरव्यंसकादित्वान्निपातः।

দীর্ঘ-কুন্তসমূহদ্বারা সেই সৈন্যগণ, জলোপরি উত্থিত-নাল-সমন্বিত নীলোৎপলকলিকাসমূহে সমাচ্ছন্ন সরোবরের ন্যায় গগনতল অলঙ্কৃত করিতেছিল। (ঘ) দণ্ড উত্তোলন করিয়া ধৃত, ময়ূরপুচ্ছ-নির্ম্মিত ছত্রসমূহে অষ্ট দিক অন্ধকার করায় সেই অশ্বারোহী সৈন্য, দীপ্তিমান্ ইন্দ্রধনুঃসমূহে বিচিত্রীকৃত মেঘসমূহের ন্যায় অবস্থান করিতেছিল। (ঙ) উত্থিত ফেনপুঞ্জে অশ্বগণের মুখ ধবলবর্ণ হওয়ায় এবং অনবরত অঙ্গসঞ্চালনে সম্পূর্ণ চঞ্চল হওয়ায় সেই অশ্বারোহী সৈন্য, প্রলয়কালে তীরে উত্থিত সমুদ্রজলের মহাতরঙ্গসমূহের ন্যায় দৃষ্টিগোচর হইতেছিল। (চ) চন্দ্রের উদয়ে সমুদ্রজলের ন্যায়, সকল অশ্বারোহী সৈন্যই চন্দ্রাপীড়ের নির্গমে চঞ্চল হইয়া উঠিল। (ছ) এবং 'আমি আগে আমি আগে' এইরূপ ইচ্ছাপ্রণোদিত হইয়া

---

(१) अप्रमेयमश्वसैन्यं।

पीड़न-कुपित-तुरङ्गम-निवारणायस्ताः (१) राजपुत्रास्तं पर्य्यवारयन्त। (छ) एकैकशश्च प्रतिनाम-ग्रहणं (२) आवेद्यमाना वलाहकेन विचलित-मुकुट-पद्मराग-किरणोद्गमच्छलेनानुरागमिवोद्वमद्भिः सङ्कुटित-सेवाञ्जलि-मुकुलतया यौवराज्या-भिषेक-कलसावर्जित-सलिल-लग्न-कमलैरिव दूरावनतैः शिरोभिः प्रणेमुः। (ज)

चन्द्रापीड़स्तु तान् सर्व्वान् मानयित्वा यथोचितमनन्तरं तुरङ्गमाधिरूढ़ेनानु-

---

"अहमहमिका तु सा स्यात् परस्परं यो भवत्यहङ्कारः।" इत्यमरः। प्रणामलालसाश्चन्द्रापीड़स्य नमस्कारा-याभिलाषुकाः, सरभसं सवेगं अपनीतैर्नामितैः आतपत्रैश्छत्रैः शून्यानि विरहितानि शिरांसि येषां ते, तथा परस्परोत्पीड़नेन अन्योन्यसंङ्घर्षेण कुपितानां तुरङ्गमानां निवारणेन निरोधनेन आयस्ताः क्लान्ताः। तं चन्द्रापीड़ं पर्य्यवारयन्त पर्य्यवेष्टन्त।

(ज) एकैकश इति। वलाहकेन तदाख्येन सेनापतिना, प्रतिनामग्रहणं.यथा स्यात्तथा एकैकश आवेद्य-मानाः 'अयममुकदेशस्य राज्ञः पुत्रः, ईदृशचरित्रः' इत्थं परिचाय्यमाना राजपुत्राः, विचलितानां शिरो-ऽवनमनेन कम्पितानां मुकुटानां ये पद्मरागा मणयस्तेषां किरणोद्गमच्छलेन अनुरागं चन्द्रापीड़ं प्रत्यनुरक्तिं उद्वमद्भिरुद्गिरद्भिरिव स्थितैः। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षाऽलङ्कारः। सङ्कुटिताः ललाटेषु संयोजिताः सेवाञ्जलयः प्रणतिद्योतककरसंयोगाः मुकुलानीव येषु तेषां भावस्तया हेतुना, तेषां यौवराज्ये योऽभिषेकस्तत्र कलसैः स्नानकुम्भैः आवर्जितैर्भग्नैः पातितैर्भग्नैः सलिलैर्भग्नैः लग्नानि ललाटेषु संसक्तानि कमलानि पद्मानि येषु तैरिव स्थितैः ललाटलग्नसेवाञ्जलीनां कमलतुल्यत्वादिति भावः। दूरावनतैः अत्यन्तावनतैः शिरोभिश्चन्द्रापीड़ं प्रणेमुः। अत्र लुप्तोपमागुणोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(झ) चन्द्रेति। चन्द्रापीड़ो नगराभिमुखः प्रतस्थे इति परवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। चन्द्रापीड़स्तु

চন্দ্রাপীড়কে নমস্কার করিবার অভিলাষী, ছত্রসমূহ সত্বর অপসারিত করায় অনাবৃতমস্তক এবং পরস্পর সঙ্ঘর্ষবশতঃ ক্রুদ্ধ অশ্বগণকে অবরুদ্ধ করায় পরিশ্রান্ত রাজপুত্রগণ আসিয়া চন্দ্রাপীড়কে, পরিবেষ্টন করিলেন। (জ) তখন বলাহক (সেনাপতি) প্রত্যেকের নাম উচ্চারণ করিয়া এক এক জনকে পরিচয় করাইয়া দিলে রাজপুত্রগণ মস্তক অত্যন্ত অবনত করিয়া চন্দ্রাপীড়কে নমস্কার করিলেন; তখন তাঁহাদের চঞ্চল মুকুটের পদ্মরাগমণির কিরণোদ্গমচ্ছলে মস্তকগুলি যেন চন্দ্রাপীড়ের প্রতি অনুরাগ উদ্গিরণ করিতেছিল আর রাজপুত্রগণ নমস্কার করিবার সময়ে ললাটদেশে পদ্মকলিকার ন্যায় অঞ্জলিপুট সংস্থাপন করায়, তাঁহাদের যৌবরাজ্যাভিষেকের সময়ে কলস হইতে নির্গত জল হইতে পদ্মসমূহ যেন ললাটে লাগিয়া রহিয়াছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল।

(ঝ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড়, প্রত্যভিবাদনপূর্ব্বক সেই সকল রাজপুত্রগণের যথোচিত সম্মান করিয়া নগরাভিমুখে প্রস্থান করিলেন; বৈশম্পায়নও অশ্বে আরোহণ করিয়া তাঁহার

---

(१) निवारणायायासितहस्ताः, निवारणायायासिताः। (२) प्रतिनामग्राहं।

गम्यमानो वैशम्पायनेन, (झ) राजलक्ष्मी-निवास-योग्य-पुण्डरीकाकृतिना, (१) सकल-राजन्यकुल-कुमुद-षण्ड-चन्द्रमण्डलेनेव तुरङ्गम-सेना-स्रवन्ती-पुलिनाय-मानेन, क्षीरोद-फेन-धवलित-वासुकि-फणा-मण्डल-च्छविना, स्थूलमुक्ता-कलाप-जालकावृतेन; (२) उपरिचिह्नीकृतं केसरिणमुद्वहता अतिमहता कार्त्तस्वरदण्डेन (३) ध्रियमाणेनातपत्रेण निवारितातपः,(ञ) उभयतः समुद्धूयमान-चामर-कलाप-पवन-नर्त्तित-कर्णपल्लवः, (ट) पुरःप्रधावता तरुण-वीर-पुरुष-प्रायेण (४) अनेक-

---

तान् सर्वान् राजपुत्रान् यथोचितं मानयित्वा प्रत्यभिवादनेन सम्भाष्य, अनन्तरं तुरङ्गमाधिरूढेन वैशम्पायनेनानुगम्यमान इत्यन्वयः।

(झ) राजेति। इत्यतस्तृतीयान्तपदानि आतपत्रेणेत्यस्य विशेषणानि। राजलक्ष्मीनिवासयोग्यं यत् पुण्डरीकं श्वेतपद्मं तस्य आकृतिरिवाकृतिर्यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। सकलं राजन्यकुलं उपस्थित-क्षत्रियगणः कुमुदषण्डं कैरवसमूह इव तस्य चन्द्रमण्डलेनेव, चन्द्रमण्डलदर्शनेन कुमुदानामिव तच्छवदर्शनेन राजपुत्राणामानन्देन मुखविकासादिति भावः। अत्र लुप्तोपमोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तुरङ्गमसेना तदश्वसैन्यमेव स्रवन्ती नदी बहुदूरविस्तृतत्वात् प्रवाहेण चलनाच्चेति भावः, तस्याः पुलिनवत् सैकतवदाचरतेति पुलिनायमानेन पुलिनवत् शुभ्रवर्णत्वाद्विस्तृतत्वाच्चेति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकं कथङ्गतोपमा चानयो-रङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। क्षीरोदस्य सागरस्य फेनैर्धवलितं शुभ्रीकृतं यद्वासुकेरनन्तनागस्य फणामण्डलं तस्य छविरिव छविः कान्तिर्यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। स्थूलमुक्ताकलापानां जालकेन मालया आवृतं प्रान्तदेशे आलम्बितं तेन। उपरिचिह्नीकृतं केशरिणं उपरिभागे सूत्रादिनिर्म्मितां सिंहाकृतिमित्यर्थः-उद्वहता धारयता, अतिमहता नितान्तविशालेन, कार्त्तस्वरस्यायमिति कार्त्तस्वरः स्वर्णमयो दण्डो यस्य तेन, ध्रियमाणेन] मस्तकोपरि केनचित् किङ्करेणेति शेषः। आतपत्रेण छत्रेण ।नवारित आतपः सूर्य्यकिरणो यस्य स इति चन्द्रापीड इत्यस्य विशेषणम्।

(ट) उभयत इति। उभयत उभयपार्श्वयोः समुद्धूयमानस्य किङ्करैरान्दोल्यमानस्य चामरकलापस्य पवनेन वायुना नर्त्तितौ सञ्चालितौ कर्णपल्लवौ यस्य सः।

পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিলেন; (ঞ) কোন সেবক চন্দ্রাপীড়ের মস্তকের উপরে অতিবৃহৎ একটা ছত্র ধারণ করিয়া রৌদ্র নিবারণ করিতে লাগিল, সেই ছত্রটা, রাজলক্ষ্মীর অবস্থানের যোগ্য শ্বেতপদ্মের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল এবং কুমুদবনের উপরে চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় রাজপুত্রগণের নিকটে প্রকাশ পাইতেছিল; অশ্বসেনারূপ নদীর পুলিনের ন্যায় দেখা যাইতে-ছিল; এবং ক্ষীরোদসাগরের ফেনে ধবলবর্ণ অনন্তনাগের ফণামণ্ডলের ন্যায় শোভা পাইতে-ছিল; আর তাহার প্রান্তভাগে বড় বড় মুক্তার ঝালর ছিল; এবং উপরিভাগে সূত্রদ্বারা একটা সিংহের আকৃতি নির্ম্মাণ করা ছিল; আর তাহার দণ্ডটা সুবর্ণময় ছিল। (ট) চন্দ্রাপীড়ের

---

(१)...निवासपुण्डरीकाकृतिना। (२) मुक्ताफलककलाप...परिवृतेन। (३) कार्त्तस्वरेण दण्डेन।
(४) वीरप्रायेण।

सहस्र-संख्येन पदातिपरिजनेन (ठ) 'जय जीवे'ति च मधुरवचसा मङ्गलप्रायं (१) अनवरतमुच्चै: पठता वन्दिजनेन स्तूयमानो नगराभिमुख: (२) प्रतस्थे। (ड)

क्रमेण च तं समासादितविग्रहमनङ्गमिवावतीर्णं नगरमार्गमनुप्राप्तमवलोक्य सर्व एव परित्यक्तसकलव्यापारो रजनिकरोदय-परिबुध्यमान-कुमुदवनानुकारी (३) जन: समजनि। (ढ) "सत्यस्मिन् सम्प्रति मुख-कुमुद-कदम्बक-विकृताकृति: (४) कार्त्तिकेयो विड़म्बयति कुमारशब्दम्। (ण) अहो वयमतिपुण्यभाजो यदिमाममानुषीं (५) अस्याकृतिमन्त:समारूढ़-प्रीतिरस-निष्यन्द-(६) विस्तारितेन

(ठ) पुर इति। पुर: प्रधावता अग्रतो द्रुतं चलता, तरुणवीरपुरुषा: प्राया बहुला यस्मिन् तेन। पदातिपरिजनेन पादचारिपरिजनवर्गेण समन्वित इति शेष:।

(ड) जयेति। चकारो भिन्नक्रमे, अन्वयश्चास्य स्तूयमान इत्यनेन। मधुरवचसा, अनवरतं जय जीवेति मङ्गलप्रायं वाक्यं उच्चै: पठता उच्चारयता, वन्दिजनेन वैतालिकगणेन स्तूयमानश्च सन्।

(ढ) क्रमेणेति। किञ्चेति चार्थ:। सर्वं एव जन:, समासादितविग्रहं गृहीतदेहं अनङ्गं कन्दर्पमिव अवतीर्णमुपस्थितम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कार:। क्रमेण नगरमार्गमनुप्राप्तं राजधानीरथ्योपस्थितमवलोक्य परित्यक्तसकलव्यापार: सन्, रजनिकरस्य चन्द्रस्य उदयेन परिबुध्यमानं प्रकाशमानं कुमुदवनं अनुकरोतीति स तथाविध: समजनि जात:, चन्द्रापीड़दर्शनजनितानन्देन प्रफुल्लमुखो बभूवेत्यर्थ:। अत्रार्थोपमालङ्कार: पूर्वोक्तद्रव्योत्प्रेक्षया संसृज्यते।

(ण) इदानीं चन्द्रापीड़मवलोक्य नागरिकाणामुक्तिविकल्पानाह सत्यस्मिन्निति। सम्प्रति अस्मिन् चन्द्रापीड़े, सति विद्यमाने, मुखानि षड़्वदनानि कुमुदानीव श्वेतत्वादितिभाव:, तेषां कदम्बकेन समूहेन विकृता अप्रायिकत्वात् कुत्सितीकृता आकृतिर्यस्य स:, कार्त्तिकेय: कुमारशब्दं विड़म्बयति स्ववाचकत्वेनाङ्गी-

---

উভয় পার্শ্বে সেবকগণ চামর-সমূহ আন্দোলন করিতেছিল, তাহার বায়ুতে চন্দ্রাপীড়ের কর্ণের পল্লব দুইটি দুলিতেছিল; (ঠ) অগ্রে অগ্রে বহুসংখ্যক পরিজন পাদচারে যাইতেছিল, তাহাদের মধ্যে বহুসংখ্যকই যুবা ও বীরপুরুষ ছিল; (ড) আর মধুরভাষী স্তুতিপাঠকগণ, জয় হউক, দীর্ঘজীবী হউন' এইরূপ মঙ্গলময় বাক্য অবিশ্রান্ত উচ্চৈঃস্বরে উচ্চারণ করতঃ তাঁহার স্তব করিতেছিল।

(ঢ) ক্রমে চন্দ্রাপীড় নগরমার্গে উপস্থিত হইলেন; তখন সমস্ত লোকই, শরীরধারী কন্দর্পের ন্যায় তাঁহাকে উপস্থিত দেখিয়া সকল কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া, চন্দ্রোদয়ে প্রকাশমান কুমুদবনের ন্যায় প্রফুল্লবদন হইয়াছিল। (ণ) আর তাহারা পরস্পর এইরূপ

---

(१) मङ्गलप्रायालापं। (२) नगराभिमुखं। (३) पुष्पककुमुद…।
(४) मुखकलापविड़म्बन:। (५) यदमानुषीं, यत इमां…। (६)…नि:स्यन्द…

कुतूहलोत्तानितेन लोचनयुगलेनानिवारिताः पश्यामः। (त) सफला नोऽद्य जाता जन्मवत्ता। सर्वथा नमोऽस्मै रूपान्तरधारिणे भगवते चन्द्रापीड़च्छद्मने पुण्डरीकेक्षणाय" इति वदद्भारचितप्रणामाञ्जलिर्नगरलोकः प्रणनाम। (थ) सर्वतश्च समपावृत-(१) कपाट-पुट प्रकट-वातायन-सहस्रतया चन्द्रापीड़-दर्शन-कुतूहलान्नगरमपि समुन्मीलित-लोचन-निवहमिवाभवत्। (द)

कृत्य अन्वर्थशून्यं करोति। तथा च कुत्सितो मारः कन्दर्पो यस्मात् स कुमार इति व्युत्पत्त्या कुमारशब्दो मुखषट्केन विकृताकृतौ कार्त्तिकेये अनुपयुज्यमानः सर्वथा सुन्दराकृतौ चन्द्रापीड़ एव नितरामुपयुज्यत इति भावः। अत्र विडम्बनासम्बन्धेऽपि तत् सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः स च लुप्तोपमया सङ्कीर्य्यते। तेन च कार्त्तिकेयात् सुन्दरश्चन्द्रापीड़ इति व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(त) अहो इति। 'यद्' यस्मात् अनिवारिताः केनाप्यनिषिद्धा वयं, अन्तःसमारूढ़ेन चित्ते समुत्पन्नेन प्रीतिरसेन आनन्दप्रवाहेण निष्पन्दं निश्चलं विस्तारितञ्च तेन, कुतूहलेन उत्तानितं उन्नमितं तेन, लोचन-युगलेन, इमां अमानुषीं अलौकिकीं स्वर्गीयां अस्य चन्द्रापीड़स्य आकृतिं पश्याम इत्यन्वयः।

(थ) सफलेति। जन्मवत्ता जन्मधारणम्। चन्द्रापीड़ एव छद्म छलं यस्य तस्मै, पुण्डरीकेक्षणाय विष्णवे। अन्यथा नेदृशो गुणग्रामः सम्भवतीति भावः। आरचितः कृतः प्रणामायाञ्जलिः करयुगलसंयोगो येन सः।

(द) सर्वत इति। अपि चेति चार्थः। सर्वतः समन्तात्, समपावृतैरपसारितैरुद्घाटितैरिति यावत् कपाटपुटैः प्रकटं प्रकाशितं वातायनसहस्रं गवाक्षजालसमूहो यस्मिंस्तस्य भावस्तया हेतुना। न केवलं नगर-लोको नगरमपीत्यपेरर्थः, समुन्मीलितः प्रकाशितः लोचननिवहो येन तत्तादृशमिव अभवत्। तादृशवाता-यनान्येव लोचनस्थानपातीनीति भावः। अत्र उन्मीलनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

বলিতে লাগিল যে, "এই রাজপুত্র বিদ্যমান থাকিতে, কুমুদের ন্যায় মুখসমূহে বিকৃতদেহ কার্ত্তিক নিজের কুমারশব্দকে অন্বর্থহীন করিতেছেন। (ত) অহো! আমরা অত্যন্ত পুণ্যবান্; যে হেতু, চিত্তে সমুৎপন্ন আনন্দপ্রবাহে নিষ্পন্দ ও বিস্তারিত এবং কৌতুকবশতঃ উন্নমিত নয়নযুগল দ্বারা অনিষিদ্ধভাবে ইঁহার এই স্বর্গীয় আকৃতি দর্শন করিতেছি। (থ) এবং আজ আমাদের জন্ম সফল হইল। ভগবান্ নারায়ণ চন্দ্রাপীড়চ্ছলে রূপান্তর ধারণ করিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, সুতরাং ইঁহাকে সর্ব্বপ্রকারে নমস্কার করি" এইরূপ বলিতে বলিতে নগরের সমস্ত লোক কৃতাঞ্জলিপুটে নমস্কার করিতে লাগিল। (দ) এবং সকল দিকেই কপাটসমূহ উদ্ঘাটিত করায় গবাক্ষদ্বারগুলি প্রকাশ পাইতে লাগিল, তাহাতে সেই রাজধানীও যেন, চন্দ্রাপীড়-দর্শনের কৌতুকবশতঃ নয়নসমূহ উন্মীলন করিতেছে বলিয়া বোধ হইতে লাগিল।

---

(१) समुपवृत, समुपावृत...।

अनन्तरञ्च "समाप्तसकलविद्यो विद्यागृहान्निर्गतोऽयमागच्छति (१) चन्द्रापीड़:" इति समाकर्ण्यालोकनकुतूहलिन्यः सर्वस्मिन्नेव नगरे ससम्भ्रममुत्सृष्टार्द्धपरिसमाप्त-प्रसाधनव्यापाराः, काश्चिद्वाम-करतल-गत-दर्पणाः स्फुरित-सकल-रजनिकर-मण्डला इव पौर्णमासीरजन्यः, (ध) काश्चिदार्द्रालक्तक-रस-पाटलित-चरणपुटाः कमल-परिपीत-बालातपा इव नलिन्यः, (न) काश्चित् ससम्भ्रम-गति-विगलित-मेखला-कलापाकुलित-चरण-किसलयाः शृङ्खला-सन्दान-मन्द-मन्द-सञ्चारिण्य इव करिण्यः, (प) काश्चिज्जलधर-समय-दिवसश्रिय इवेन्द्रायुध-राग-

(ध) अनेति। ससम्भ्रमं सत्वरं उत्सृष्टाः परित्यक्ताः अर्द्धपरिसमाप्ता अर्द्धविहिताः प्रसाधनव्यापारा भूषणक्रिया याभिस्ताः, ललना हर्म्यतलानि समारुरुहुरिति वक्ष्यमाणेनान्वयः। तदारोहणप्रकारमेव दर्शयन्नाह काश्चिदिति। काश्चित्तासां मध्ये काश्चिल्ललना इत्यर्थः। एवमन्यत्रापि। वामकरतलेषु गताः स्थिता दर्पणा मुकुरा यासां ताः, अतएव स्फुरितं प्रकाशितं सकलं सम्पूर्णं रजनिकरमण्डलं चन्द्रबिम्बं यासु ताः, पौर्णमासीरजन्य इव। दर्पणानां वर्त्तुलतया निर्म्मलतया च चन्द्रमण्डलतुल्यत्वात् तासाञ्च ज्योत्स्नावत्-सित-कान्तिमत्त्वादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(न) काश्चिदिति। आर्द्रेण अलक्तकरसेन पाटलितानि आरक्तीकृतानि चरणपुटानि याभिस्ताः, अतएव कमलैः पद्मैः करणैः परिपीतो ग्रस्तो गृहीतः, बालातपो रक्तवर्णो नवीनसूर्य्यालोको याभिस्ताः, नलिन्यः पद्मिन्यः पद्मलता इव। अत्रोपमालङ्कारः। बालातपेन अलक्तकरसस्य, पद्मैश्चरणानां, पद्मिनीभिश्च ललनानां सादृश्यं बोध्यम्।

(प) काश्चिदिति। ससम्भ्रमगत्या सत्वरगमनेन विगलितैः कटिदेशात् स्रस्तैः मेखलाकलापैः काञ्चीदामभिः आकुलितानि व्याकुलीकृतानि पदे पदे प्रतिबध्यमानानि चरणकिसलयानि यासां ताः, अतएव शृङ्खलया सन्दानेन चरणयोर्बन्धनेन मन्दमन्दसञ्चारिण्यः करिण्य इव। अत्रोपमावृत्त्यनुप्रासयोः संसृष्टिः।

(फ) काश्चिदिति। जलधरसमयदिवसश्रियः वर्षाकालदिनशोभा इव इन्द्रायुधस्य शक्रचापस्य राग इव

(ধ) তদনন্তর "চন্দ্রাপীড় সকল বিদ্যাশিক্ষা সমাপ্ত করিয়া বিদ্যালয় হইতে নির্গত হইয়া এই আসিতেছেন" এই কথা শুনিয়া সমস্ত নগরবাসিনী রমণীগণ অলঙ্কার-ধারণ-কার্য্য অর্দ্ধ-পরিসমাপ্ত অবস্থায় পরিত্যাগ করিয়া তাড়াতাড়ি যাইয়া দালানের ছাদে ও মধ্যের তলায় উঠিতে লাগিল। তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ, বামহস্তে দর্পণ ধারণ করিয়া, প্রকাশমান-পূর্ণচন্দ্র-সমন্বিত পূর্ণিমারাত্রির ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল। (ন) কেহ কেহ আর্দ্র অলক্তক-রসে চরণযুগল রঞ্জিত করিয়া, পদ্মের উপরে নূতন সূর্য্যালোক পতিত হইলে পদ্মলতার ন্যায় বিরাজ করিতেছিল; (প) কোন কোন রমণী, দ্রুতগমনবশতঃ কটিদেশ হইতে নিপতিত কাঞ্চীদামে চরণযুগল আবদ্ধ হওয়ায়, চরণে শৃঙ্খলা-বন্ধননিবন্ধন মন্দমন্দগামিনী হস্তিনীর

(१) क्वचित् 'आगच्छति' इति पदं नास्ति।

रुचिराम्बरधारिण्यः, (फ) काश्चिदुल्लसित-धवल-नख-मयूख-पल्लवान् नूपुररवाकृष्ट-गृह-कलहंसकानिव चरणपुटानुद्वहन्त्यः, (ब) काश्चित् करतल-स्थित-स्थूल-मुक्ता-हार-(१) यष्टयो रतिमिव मदनविनाश-शोक-गृहीत स्फटिकाक्षवलयां विडम्बयन्त्यः, (भ) काश्चित् पयोधरान्तराल-गलित-मुक्तालतास्तनुविमलस्रोतो-जलान्तरित-चक्रवाकमिथुना इव प्रदोषश्रियः, (म) काश्चिन्नूपुरमणिसमुत्थि-

रागो विविधवर्णयोगस्तेन रुचिराणि अम्बराणि वसनानि धारयन्तीति ताः, पक्षे इन्द्रायुधस्य रागेण रञ्जनेन रुचिरं अम्बरमाकाशं धारयन्तीति ताः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ब) काश्चिदिति। उल्लसित उत्थितः धवलो नखानां मयूखपल्लवः किरणसमूहो येभ्यस्तान्, अतएव नूपुररवैराकृष्टा आकृष्य आनीता ये गृहकलहंसकास्तानिव स्थितान् चरणपुटान् पादयुगलानि, उद्वहन्त्यो धारयन्त्यः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारो नतूपमा नूपुररवाकृष्टपदाभिधानतात्पर्य्यादिति सुधीभिर्भाव्यम्।

(भ) काश्चिदिति। करतलेषु स्थितास्त्वरावशात् कण्ठेष्वनर्पणेन पाणिष्वेव विद्यमानाः स्थूलमुक्तानां हारयष्टयो हारलता यासां ताः, अतएव मदनविनाशेन कामदेवमरणेन यः शोकस्तेन गृहीतं शिवाराधनाय धृतं स्फटिकाक्षवलयं स्फटिकनिर्म्मितजपमाला यया तां रतिं कामपत्नीं विडम्बयन्त्यः अनुकुर्वत्य इव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) काश्चिदिति। पयोधरयोः स्तनयोः अन्तरालेषु मध्येषु गलिता गतिवेगान्निपत्य समवेता मुक्तालता मौक्तिकहारा यासां ताः, अतएव तनुनः कृशस्य विमलस्य निर्म्मलस्य स्रोतसः प्रवाहस्य जलेन अन्तरितं व्यवहितं चक्रवाकयोर्मिथुनं युगलं यासु ताः प्रदोषश्रियो रजनीमुखशोभा इव। प्रदोषारम्भे चक्रवाक-दम्पत्योर्नद्या उभयतीरावस्थितिः प्रसिद्धा। तथा च तादृशचक्रवाकमिथुनैः स्तनयुगलानां, तनुस्रोतोजलैर्हार-लतानां, प्रदोषश्रीभिश्च ललनानां साहश्यं बोध्यम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(य) काश्चिदिति। नूपुरमणिभ्यः समुत्थितानि, इन्द्रायुधानि इन्द्रधनुःसदृशनानावर्णप्रभामण्डलानि

ন্যায় ধীরে ধীরে উঠিতে লাগিল ; (ফ) বর্ষাকালের দিনলক্ষ্মী যেমন ইন্দ্রধনুর বিবিধবর্ণে মনোহর আকাশ ধারণ করে, সেইরূপ কতকগুলি যুবতী ইন্দ্রধনুর ন্যায় বিবিধবর্ণে মনোহর বসন ধারণ করিয়া আরোহণ করিতে লাগিল ; (ব) কেহ কেহ নখ হইতে উত্থিত শুভ্রবর্ণ-কিরণরাজিসমন্বিত চরণযুগল বহন করিয়া যাইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন নূপুরের রবে আকৃষ্ট গৃহপালিত কলহংসগণকে চরণে বহন করিয়া লইয়া যাইতেছে ; (ভ) কোন কোন রমণী বৃহৎ বৃহৎ মুক্তানির্ম্মিত হার হস্তে ধারণ করিয়া মদন-বিনাশ-শোকে স্ফটিকময় জপমালা-ধারিণী রতিকে যেন অনুকরণ করিতে করিতে যাইতেছিল ; (ম) কোন কোন যুবতীর মুক্তার হার স্তনযুগলের মধ্যে পতিত হইয়া সম্মিলিত হইতে লাগিল, সুতরাং যখন চক্রবাক ও চক্রবাকী নদীর উভয়তীরে অবস্থান করে এবং মধ্য দিয়া অল্প স্রোত চলিতে থাকে, সেই প্রদোষকালের ন্যায় তাহারা শোভা পাইতে লাগিল ; (য) কোন কোন যুবতী মণিময় নূপুর

(१)…स्थूलहार…।

तैन्द्रायुधतया परिचयानुगत-(१) गृहमयूरिका इव विराजन्त्यः, (य) काश्चि-द्दर्द्धपीतोज्झित-मणिचषकाः स्फुरितरागैर्मधुरसमिवाधरपल्लवैः चरन्त्यो हर्म्याग्र-तलानि ललनाः समारुरुहुः। (र) अन्याश्च मरकत-वातायन-विवर-विनिर्गत-मुखमण्डला विकच-कमल-कोषपुटामम्बरतल-(२) सञ्चारिणीं कमलिनीमिव दर्शयन्त्यो ददृशुः। (ल)

उदपादि च सहसा सरभस-सञ्चलन-जन्मा, मधुर-सारणास्फालित-(३)

यासां तासां भावस्तया हेतुना, परिचयेन चिरसाहचर्य्येण अनुगताः पश्चात् पश्चादुपस्थिताः गृहमयूरिका गृहपालितशिखण्डिन्यो यासां ता इव। मयूरीणामपि नानावर्णमयपक्षशालित्वादिति भावः। अत्र मयूराणा-मनुगमनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) काश्चिदिति। अर्द्धपीतानि अनन्तरमुज्झितानि चन्द्रापीड़दर्शनत्वरावशात् परित्यक्तानि मणि-चषकाणि मणिमयपानपात्राणि याभिस्ताः, अत्र मद्यानां पीतत्वेन तदाधाराणामपि पीतत्वमुपचारात्। "चषकोऽस्त्री पानपात्र"मित्यमरः। अतएव स्फुरित उद्दीप्तो रागो रक्तिमा येषां तैः अधरपल्लवैः पल्लवतुल्यौष्ठैः करणैः मधुरसं मद्यद्रवं चरन्त्यः स्रवन्त्य इव, अधराणामार्द्रत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। हर्म्याग्रतलानि सौधानामुपरिभागान् मध्यतलानि च।

(ल) अन्या इति। अन्याश्च ललनाः, मरकतवातायनविवरेभ्यः मरकतमणिमयगवाक्षरन्ध्रेभ्यः विनि-र्गतानि मुखमण्डलानि यासां ताः, अतएव विकचानि भेदं गतानि, कमलस्य पद्मस्य कोषपुटानि कोष-पुटकाकारपत्राणि यस्यास्तां, अम्बरतलसञ्चारिणीं आकाशवर्त्तिनीं कमलिनीं दर्शयन्त्य इव स्थिताः, केशावृत-प्रान्तानां मुखमण्डलानां प्रस्फुटितपद्मान्विततत्पत्रतुल्यत्वादिति भावः। ददृशुः कुमारमिति शेषः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) उदपादीति। अपि च सहसा भूषणनिनाद उदपादीत्यन्वयः। सरभसं सवेगं यत् सञ्चलनं तस्माज्जन्म यस्य सः। मधुरो यः सारणया अङ्गुलीताड़नेन आस्फालितानां सञ्चालितानां वीणानां वीणा-

---

হইতে উত্থিত নানা বর্ণের প্রভামণ্ডলে শোভা পাইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন গৃহ-পালিত ময়ূরীগণ তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতেছে, (র) কোন কোন রমণী, মণিময় পাত্র হইতে মদ্য অর্দ্ধমাত্র পান করিয়াই তাহা ফেলিয়া আসিতেছিল বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল যেন তাহারা স্ফুরিত-রক্তিমা-সম্পন্ন পল্লবতুল্য ওষ্ঠ দ্বারা সেই মদ্য ক্ষরণ করিতে করিতে উঠিতেছে। (ল) এবং অন্যান্য যুবতিগণ মরকতমণি-নির্ম্মিত গবাক্ষদ্বার হইতে মুখমণ্ডল বাহির করিয়া চন্দ্রাপীড়কে দর্শন করিতেছিল, সুতরাং বোধ হইতেছিল যেন প্রস্ফুটিত পদ্ম-সমন্বিত আকাশ-বর্ত্তিনী পদ্মিনী দর্শন করাইতেছে।

(ব) সবেগে গমন করায় সহসাই সকল অট্টালিকার মধ্যে অলঙ্কারের শব্দ হইতে লাগিল; তন্ত্রীতে অঙ্গুলী তাড়ন করায় বীণার রবে সেই অলঙ্কারের শব্দ বর্দ্ধিত

---

(१) परिचर्य्यानुगत...। (२)...पुटाम्बरतल...। (३)...साधारणास्फालित...।

वीणा-रव-कोलाहल-बहलः, रशना-रवाहूत-गृहसारस-(१) रसितसम्भिन्नः, स्खलित-चरणतल-ताड़ित-मणि-सोपान-(२) जात-गम्भीर-ध्वनि-प्रहृष्टानामवरोध-शिखण्डिनां केकारवैरनुगम्यमानः, नव-जलधर-रव-भय-चकित-कलहंस-कुल-कोलाहल-(३) कोमलः, मकरध्वज-विजय-घोषणानुकारी परस्पर-विघट्टना-रणित-तारतर-हार-मणीनां रमणीनां श्रोत्रहारी, हर्म्यकुक्षिषु प्रतिरव-निर्ह्रादी भूषण-निनादः। (व)

मुहूर्त्तादिव युवतिजन-निरन्तरतया नारीमया इव प्रासादाः, सालक्तक-पद-कमल-विन्यासैः पल्लवमयमिव क्षितितलम् अङ्गनानां (४) अङ्गप्रभा-प्रवाहेण

तन्त्रीणां रवः स एव कोलाहलः स बहलो बहुलो यस्मिन् सः। रशनारवैः काञ्चीशब्दैः आहूतानां तदाकर्णनेनागतानामित्यर्थः गृहसारसानां गृहपालितसारसपक्षिणां रसितैः शब्दैः सम्भिन्नः सम्मिलितः। स्खलितैः स्वरावशात् प्रभ्रष्टैः चरणतलैः ताड़ितेभ्यः मणिसोपानेभ्यः जातैः गम्भीरध्वनिभिः प्रहृष्टानां मेघरवभ्रमेणानन्दितानां अवरोधशिखण्डिनां अन्तःपुरमयूराणां केकारवैः अनुगम्यमानः सम्मिश्र इत्यर्थः। नवजलधरस्य अकालमेघस्येति तात्पर्य्यं रवाद्गर्जनात् भयेन चकितस्य भीतस्य कलहंसकुलस्य कोलाहलवत् कोमलो मृदुलः अकर्कशः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। मकरध्वजस्य मदनस्य विजयघोषणां जयप्रचारं अनुकरोतीति सः। अत्रार्थोपमालङ्कारः। परस्परविघट्टनया अन्योन्यसङ्घर्षेण रणिताः शब्दिताः तारतरा अतिस्थूलाः हारमणयो मुक्तामालास्थितरत्नानि यासां तासां रमणीनां स्त्रीणां श्रोत्रहारी श्रुतिमधुरः। अत्र हारमणीनां रमणीनामित्यत्र कक्रमेणावृत्तेर्यमकालङ्कारः। प्रतिरवेन प्रतिध्वनिना निर्ह्रादी बहुलीभूतः। हर्म्यकुक्षिषु प्रासादमध्येषु।

(श) मुहूर्त्तादिति। युवतिजनैर्निरन्तरतया निरवकाशतया व्याप्ततया हेतुना प्रासादा अट्टालिकाः, नारीमयाः स्त्रीभिर्निष्पन्ना इव बभूवुः। अत्र विकारार्थे मयट्प्रत्ययात् विकारस्य च अन्यथात्वरूपतया गुणत्वात्

হইতেছিল, কাঞ্চীর শব্দ শুনিয়া উপস্থিত গৃহপালিত সারসপক্ষিগণের শব্দ সেই শব্দের সহিত মিশিয়াছিল; প্রভ্রষ্ট চরণসমূহের তাড়নে মণিময় সোপান হইতে গম্ভীর শব্দ উঠিতেছিল, তাহা শুনিয়া আনন্দিত অন্তঃপুরস্থ ময়ূরগণের কেকারব সেই সঙ্গে মিশিতেছিল; সেই শব্দ, আকালিক মেঘগর্জ্জনের ভয়ে চকিত কলহংসগণের কোলাহলের ন্যায় মধুর শুনা যাইতেছিল এবং কন্দর্পের বিজয়ঘোষণার অনুকরণ করিতেছিল; আর পরস্পর সংঘর্ষবশতঃ শব্দায়মান বৃহৎ বৃহৎ মণিসংযুক্ত-হারধারিণী রমণীগণের কর্ণ আকর্ষণ করিতেছিল; এবং প্রতিধ্বনিতে বৃদ্ধি পাইতেছিল।

(শ) মুহূর্ত্তমধ্যেই যুবতিগণ-সমাচ্ছন্ন বলিয়া অট্টালিকাগুলি যেন স্ত্রীলোকময় হইল, অলক্তকরঞ্জিত-পদ বিন্যাসে ভূতল যেন পল্লবময় হইল, রমণীগণের শরীরকান্তিতে নগরটি যেন

---

(१)…रवाहूतसारस…। (२)…ताड़ितसोपान…।

(३)…कलहंसकोलाहल…। (४) क्वचित् 'अङ्गनाना'मिति पदं नास्ति।

लावण्यमयमिव नगरम्, आननमण्डलनिवहेन चन्द्रबिम्बमयमिव गगनतलम्, आतपनिवारणायोत्तानित-(१) करतल-जालकेन कमलवनमयमिव दिक्‌चक्रवालम्, आभरणांशु-कलापेन इन्द्रायुधमय इवातपः, लोचन-(२) मयूख-लेखा-सन्तानेन नीलोत्पलदलमय इव दिवसो बभूव। (घ) कौतुकप्रसारितनिश्चल-लोचनानाञ्च पश्यन्तीनां तासामादर्शमयानीव सलिलमयानीव स्फटिकमयानीव हृदयानि विविशु चन्द्रापीड़ाकृतिः। (ष)

गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। सालक्तकानि अलक्तकरसरञ्जितानि यानि पदकमलानि रमणीनां, चरणारविन्दानि तेषां विन्यासैः पातैः क्षितितलं पल्लवमयमिव बभूव, पदकमलानां पल्लवतुल्यत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। अङ्गनानां अङ्गप्रभायाः प्रवाहेण निर्झरेण नगरं सा राजधानी लावण्यमयमिव बभूव। "मुक्ताफलेषु च्छायायां तरलत्वमिवान्तरा। प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते।" इत्युज्ज्वलनीलमणिः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। आनन-मण्डलानां मुखमण्डलानां निवहेन समूहेन गगनतलं चन्द्रबिम्बमयमिव बभूव, तेषां चन्द्रबिम्बतुल्यत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। आतपस्य रविकिरणस्य निवारणाय उत्तानितानि मस्तकोपरि उत्तानीकृत्य स्थापितानि यानि करतलानि पाणितलानि तेषां जालकेन समूहेन, दिशां चक्रवालं मण्डलं, कमलवनमयमिव बभूव, तत्करतलानां कमलतुल्यत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। आभरणानामलङ्काराणां अंशुकलापेन किरण-समूहेन आतप इन्द्रायुधमय इव बभूव तत्किरणसमूहस्य नानावर्णत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। लोचनानां नेत्राणां या मयूखलेखाः किरणावलयः तासां सन्तानेन प्रवाहेण, दिवसः नीलोत्पलदलमय इव बभूव, नयन-किरणप्रवाहाणां नीलोत्पलदलसदृशत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा।

(ष) कौतुकेति। किञ्च, चन्द्रापीड़स्य आकृतिः रूपम्, कौतुकेन दर्शनकौतूहलेन प्रसारितानि विस्तारितानि अनन्तरं निश्चलानि लोचनानि यासां तासां। तासां नागरललनानां। आदर्शमयानीव दर्पण-निर्मितानीव। अन्यत्राप्येवम्। हृदयानि विविशु दर्पणादौ यथा प्रतिबिम्बं प्रविशति तथेति भावः। नितान्त-मनोरमतया सातिशयानुरागविषयीभूता बभूवेत्यर्थः। अत्र पूर्ववर्त्तिसूत्राणां क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

লাবণ্যময় হইয়া উঠিল, মুখমণ্ডলসমূহে আকাশ যেন চন্দ্রমণ্ডলময় হইল, রৌদ্র নিবারণ করিবার জন্য মস্তকের উপরে উত্তানীকৃত (চিৎ করা) করতলসমূহে দিঙ্‌মণ্ডল যেন পদ্মবনময় হইল, অলঙ্কারের নানাবর্ণের কিরণসমূহে যেন ইন্দ্রায়ুধময় হইল এবং নয়ন-কিরণসমূহের প্রবাহে সেই দিনটি যেন নীলোৎপল-দলময় হইল। (ষ) যে সময়ে নগরবাসিনী রমণীগণ, কৌতুক-বশতঃ বিস্তারিত ও নিষ্পন্দ নয়নে চন্দ্রাপীড়কে দর্শন করিতেছিল, তখন তাহাদের হৃদয়, যেন দর্পণময়, জলময় ও স্ফটিকময় ছিল বলিয়া তাহাতে চন্দ্রাপীড়ের আকৃতি প্রবেশ করিয়াছিল।

---

(१) उत्तानितेन। (२) साभ्रमूयालोचन...।

आविर्भूत-मदनरसानाञ्चान्योन्यतः (१) सपरिहासाः, सविश्रम्भाः, ससम्भ्रमाः, सेर्ष्याः, सोत्प्रासाः, साभ्यसूयाः, सविलासाः, समन्मथाः, सस्पृहाश्च तत्क्षणमति-रमणीयाः (२) प्रसस्रुरालापाः। (स)

तथा हि। "त्वरितगमने! मामपि प्रतिपालय। (ह) दर्शनोन्मत्ते! गृहाणोत्तरीयम्। (च) चपले! (३) उल्लासय अलकलतामाननावलम्बिनीं। (क) मूढ़े! चन्द्रलेखामुपाहर (४)। (ख) उपहार-कुसुम-स्खलित-चरणा (५)

(स) आविरिति। किञ्च, आविर्भूतो मदनरसः कामानुरागो यासां तासां ललनानां सविश्रम्भाः सविश्वासाः, अन्यथा तादृशालापैः क्रुद्धा अपि स्युरिति भावः। ससम्भ्रमाः सत्वराः, अन्यथा तादृशालापे-ष्विरमन्यमनस्कतया उत्कटदर्शनं न स्यादिति भावः। ईर्ष्यया अक्षमया असहिष्णुतया सहेति सेर्ष्याः, स्थान-सुयोगेनान्यस्या अधिकतरदर्शनसुयोगादिति भावः। सोत्प्रासाः सस्मिताः "उत्प्रासः स मनाक् स्मित"मित्यमरः। परगुणेषु दोषाविष्करणमभ्यसूया तया सहेति साभ्यसूयाः, अन्यस्याः सौन्दर्य्यदर्शनेन तत्कालेऽपि मात्सर्य्यो-दयादिति भावः। विलासेन करनयनादिभङ्गीविशेषेण सहेति सविलासाः। सस्पृहाः साभिलाषाः। प्रसस्रु-र्बाहुल्येन बभूवुः।

(ह) तानेवालापान् प्रदर्शयितुमाह तथाहीति। प्रतिपालय प्रतीक्षस्व। आत्मानमतिक्रम्य त्वरितं गच्छन्तीं सहचारिणीं प्रति कस्याश्चित् सेर्ष्यमुक्तिः।

(च) दर्शेति। दर्शनोन्मत्ते! चन्द्रापीड़दर्शनेन उन्मादयस्ते! स्खलतोऽपि स्वपरिच्छदस्याननुभवादिति भावः। उत्तरीयं वसनं। पतदुत्तरीयां प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(क) उल्लासयेति। हे चपले! चञ्चले! आननावलम्बिनीं चञ्चलतयैव मुखोपरिसञ्चारिणीं अलक-लतां लतावल्लम्बमानां स्खलितकेशावलीं उल्लासय अपसारय। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् सविश्रम्भेयमुक्तिः।

(ख) मूढ़ इति। हे मूढे! चन्द्रापीड़दर्शनेन नष्टचेतने! प्रतितायामपि चन्द्रलेखायां तदनवधाना-दिति भावः। चन्द्रलेखां चन्द्रलेखाकारं ललाटाभरणविशेषं उपाहर उत्तोल्य गृहाण। इयमपि पतितचन्द्र-लेखां काञ्चित् प्रति कस्याश्चित् सविश्रम्भोक्तिः।

(ग) उपेति। हे मदनान्धे! कामोद्दीपनया अन्यत्र दृष्टिशक्तिहीने! अदर्शनवशात् कुसुमेषु स्खलित-

---

(স) তদনন্তর তাহাদের মদনানুরাগ জন্মিল; তখন তাহাদের পরস্পর পরিহাস, বিশ্বাস, ত্বরা, ঈর্ষ্যা, ঈষৎ হাস্য, অসূয়া, ভাবভঙ্গী, কামোদ্রেক ও অনুরাগের সহিত অতি-মনোহর আলাপ হইতে লাগিল।

(হ) যথা, "হে দ্রুতগামিনি! আমাকেও একটু প্রতীক্ষা কর। (ক্ষ) হে চন্দ্রাপীড়-দর্শনোন্মত্তে! উত্তরীয় বসনখানা তুলিয়া লও। (ক) হে চঞ্চলে! মুখের উপরের চুলগুলি সরাইয়া ফেল। (খ) হে মূঢ়ে! চন্দ্রলেখাটা (কপালের অলঙ্কার) তুলিয়া লও। (গ) হে

---

(१) अन्योन्यं। (२) रमणीयाः। (३) चपले! इति पदं क्वचिन्नास्ति।
(४) मुहुरुपाहर। (५)...चरणे!।

पतसि मदनान्धे!। (ग) संयमय मदनिश्चेतने! केशपाशम्। (घ) उत्क्षिप चन्द्रापीड़दर्शनव्यसनिनि! काञ्चीदामकम्। (ङ) उत्सर्पय पापे! कपोलदोलायितं कर्णपल्लवम्। (च) अहृदये! गृहाण निपतितं दन्तपत्रम्। (छ) यौवनोन्मत्ते! विलोक्यसे जनेन, स्थगय पयोधरभारम् (१)। (ज) अपगतलज्जे! शिथिलीभूतमाकलय दुकूलम्। (झ) अलीकमुग्धे! द्रुत-

पदतया पतितप्रायत्वादिति भावः। उपहारकुसुमेषु शोभार्थं विकीर्णेषु पुष्पेषु, स्खलितौ प्रभ्रष्टौ चरणौ यस्यास्तादृशी सती पतसि। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(घ) संयमयेति। हे मदनिश्चेतने! मदनमत्ततया चैतन्यहीने! विकीर्णेष्वपि केशेषु तदननुभवादिति भावः। संयमय ग्रथितं कुरु। इतस्ततो विकीर्णकेशीं प्रति कस्याश्चिदियमपि सपरिहासोक्तिः।

(ङ) उत्क्षिपेति। चन्द्रापीड़दर्शने व्यसनिनि अत्यन्तासक्तिमति! विषयान्तरेष्वनवधानादिति भावः। तत्सम्बोधनम्। काञ्चीदामकं रशनागुणं उत्क्षिप उत्तोलय। कटिदेशाच्चरणयोः पतितेन काञ्चीदाम्ना प्रतिबद्धगमनां प्रति सोत्प्रासेयमुक्तिः।

(च) उत्सर्पयेति। हे पापे! पापवति! परपुरुषदर्शनोन्मत्तत्वादिति भावः। कपोलयोर्दोलायितं गतिवेगादान्दोलितं कर्णपल्लवं उत्सर्पय कर्णान्तिके उत्तोलय, अन्यथा नयनोपरि पतितेन दर्शनविघ्नः स्यादिति भावः। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् साभ्यसूयेयमुक्तिः।

(छ) अहृदय इति। हे अहृदये! चित्तरहिते! चन्द्रापीड़ं प्रति हृदयगमनेन दन्तपत्रपतनानवरोधादिति भावः। दन्तपत्रं हस्तिदन्तनिर्म्मितं पत्राकारकर्णालङ्कारविशेषं। पतितदन्तपत्रां प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(ज) यौवनोन्मत्त इति। हे यौवनोन्मत्ते! तारुण्यमदेनोन्मत्ते! स्तनयोरावरणाभावेऽपि तदनवगमादिति भावः। जनेन त्वं विलोक्यसे, सुतरां पयोधरभारं आवरणहीनं विशालस्तनयुगलं, स्थगय वसनेनावृणु। अनावृतस्तनीं प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(झ) अपेति। हे अपगतलज्जे! नितम्बदर्शनेऽपि वसनानुत्तोलनादिति भावः। शिथिलीभूतं कटीदेशात् स्खलितं दुकूलं वसनं आकलय स्वस्थाने स्थापय। तादृशीं प्रति सोत्प्रासेयमुक्तिः।

কামান্ধে! বিক্ষিপ্ত পুষ্পসমূহের উপরে চরণ স্খলিত হওয়ায় পড়িয়া যাইতেছ। (ঘ) হে মদ-চৈতন্যহীনে! কেশকলাপ বন্ধন কর। (ঙ) হে চন্দ্রাপীড়দর্শনাসক্তে! কাঞ্চীদাম উত্তোলন কর! (চ) হে পাপিনি! কর্ণের পল্লব গণ্ডের উপর দুলিতেছে, সুতরাং তাহা উত্তোলন কর। (ছ) হে হৃদয়শূন্যে! পতিত দন্তপত্রটা তুলিয়া লও। (জ) হে যৌবনোন্মত্তে! লোকে তোমাকে দেখিতেছে, সুতরাং বিশাল স্তনমণ্ডল আবৃত কর। (ঝ) হে নির্লজ্জে! পরিধেয় বসন খুলিয়া পড়িতেছে, তুলিয়া পরিধান কর। (ঞ) হে মিথ্যামুগ্ধে!

(१)···भागम्।

तरमागम्यताम्। (ञ) कुतूहलिनि! देहि दर्शनान्तरम् (१)। (ट) असन्तुष्टे! कियदालोकयसि। (ठ) तरलहृदये! परिजनमपेक्षस्व। (ड) पिशाचि! (२) गलितोत्तरीया विहस्यसे (३) जनेन। (ढ) रागाहतनयने! पश्यसि न सखीजनम्। (ण) अनेकभङ्गिविकारपूर्णे! दुःखमकारणायासित-हृदया (४) जीवसि। (त) मिथ्याविनीते! किं व्यपदेशवोच्चितैः, विश्रब्ध-

---

(ञ) अलीकेति। अलीकमुग्धे! मिथ्याप्रकटितमुग्धभावे! वस्तुतस्त्वं प्रगल्भैव चन्द्रापीड़दर्शनोत्कण्ठया साधारणदर्शनयोग्यस्थानागमनेन निर्लज्जत्वादिति भावः। द्रुततरमागम्यतां, अन्यथा दर्शनपथमतिक्रामेच्चन्द्रापीड़ इत्याशयः। कयेन प्रकटितमुग्धभावां प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ट) कुतूहेति। हे कुतूहलिनि! दर्शनायातीवकौतुकशालिनि! सहचारिण्या ममाप्यनपेक्षणादिति भावः। दर्शनान्तरं ममापि दर्शनायावकाशम्। अप्राप्तावकाशायाः कस्याश्चित् स्थानरोधिनीं प्रति सेर्ष्येयमुक्तिः।

(ठ) असन्तुष्ट इति। हे असन्तुष्टे! चिरदर्शनेनाप्यतृप्ते! अनपसरणादिति भावः। कियदालोकयसी, इदानीमपसरेत्यभिप्रायः। इयमपि चिरं पश्यन्तीं प्रति सेर्ष्योक्तिः।

(ड) तरलेति। तरलहृदये! चञ्चलचित्ते! दर्शनोत्कण्ठया द्रुतागमनादिति भावः। परिजनं सहचारिण्यादिकं अपेक्षस्व प्रतीक्षस्व। तदपेक्षया शनैः शनैर्गच्छेत्याशयः। सहचरीवर्गमपहाय धावन्तीं प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ढ) पिशाचीति। हे पिशाचि! तत्तुल्ये! निर्लज्जत्वादिति भावः। गलितोत्तरीया अतएव जनेन पश्यता लोकेन विहस्यसे। सुतरां यथास्थानमुत्तरीयं निवेशयेत्यभिप्रायः। तादृशीं प्रति सविश्रम्भेयमुक्तिः।

(ण) रागेति। रागेण चन्द्रापीड़ानुरागेण आहते आच्छादिते अन्यदर्शनानुपयोगिनी कृते इत्यर्थः नयने चक्षुषी यस्यास्तत्सम्बोधनम्। अतएव सखीजनमपि न पश्यसीति काकुः। सहसैव तवेदं नोचितमिति भावः। निष्पन्दनयनां प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(त) अनेकेति। अनेका भङ्गयः करनयनादिसङ्केता एव विकारास्तैः पूर्णा तत्सम्बोधनं। अकारणं चन्द्रापीड़लाभासम्भवात् निष्प्रयोजनं आयासितहृदया उत्कण्ठया खिन्नचित्ता दुःखं यथा स्यात्तथा जीवसि। तथा च सहस्रमपि भङ्गिविकारान् दर्शय किन्तु कदापि न ते चन्द्रापीड़लाभः सम्भवेत्, सुतरामिदानीमुत्कण्ठया चित्तपीड़ा परत्र चानुतापाद्दुःखेन जीवनधारणमिति भावः। इयमपि तादृशीं प्रति सपरिहासोक्तिः।

অতিক্রুত আগমন কর। (ট) হে কৌতুকবতি! আমাকেও একটু দেখিবার স্থান দেও। (ঠ) হে অতৃপ্তে! কত দেখিবে। (ড) হে চঞ্চলচিত্তে! পরিজনদিগের অপেক্ষা কর। (ঢ) হে পিশাচি! তোমার উত্তরীয় বস্ত্র পড়িয়া যাওয়ায় লোকে দেখিয়া হাসিতেছে। (ণ) হে অনুরাগাচ্ছন্ননেত্রে! সখীজনকেও দেখিতেছ না? (ত) হে নানাবিধভঙ্গিবিকার-পূর্ণে! তুমি অকারণ খিন্নচিত্ত হইয়া দুঃখে জীবন ধারণ করিতেছ। (থ) হে মিথ্যা-

---

(१) व्यपदर्शनान्तरम्। (२) पिशाचिके। (३) हस्यसे। (४) दुःखकारणायासितहृदया।

मालोकय (१)। (थ) यौवनशालिनि! किं पीड़यसि पयोधरभारेण। (द) अतिकोपने! पुरतो भव। (ध) मत्सरिणि! किमेकाकिनी रुणत्सि वातायनम्। (न) अनङ्गपरवशे! मदीयमुत्तरीयांशुकमुत्तरीयतां नयसि? (प) रागासवमत्ते! (२) निवारयात्मानम्। (फ) उज्झितधैर्य्ये! किं धावसि

(थ) मिथ्येति। मिथ्याविनीते! अलीकविनयप्रदर्शिनि! व्यपदेशवीक्षितैः कपटावलोकनैः किं, अस्माभिस्तद्दृश्यमानत्वेन विनयमिथ्यात्वावधारणान्न किमपि फलमिति भावः, अतएव विस्रब्धं निःशङ्कमालोकय। तथा सति तवापि दर्शनसुविधा भवेत् अस्माकमपि कपटतावधारणेन त्वयि विरक्तिर्न स्यादिति भावः। अन्यापदेशेन पश्यन्तीं प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(द) यौवनेति। हे यौवनशालिनि! उत्कृष्टयौवनान्विते! तदुत्कर्षप्रतिपादककठिनपीनस्तन-वत्त्वादिति भावः। पयोधरभारेण तादृशस्तनयोर्गुरुत्वेन भारवत्स्तनयुगलेनेत्यर्थः, पीड़यसि पृष्ठत आघातेन पीड़ां करोषि। अत्र पीड़नासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। अग्रगमनावेगात् कठिनकुच-युगलेन पृष्ठतः सङ्घर्षकारिणीं प्रति कस्याश्चित् सोत्प्रासपरिहासेयमुक्तिः।

(ध) अतीति। हे अतिकोपने! नितान्तक्रुद्धस्वभावे! अपसर्तुमुक्ताविव भ्रूकुटीकारित्वादिति भावः। पुरतः अग्रगामिनी भव। येन हि तव सङ्घर्षवशादग्रे स्थातुं न शक्नोमीत्याशयः। अतीवदर्शनोत्कण्ठया सङ्घर्षेणाग्रे यियासन्तीं प्रति कस्याश्चिदग्रवर्त्तिन्या ईर्ष्यावशादुक्तिरियम्।

(न) मत्सेति। हे मत्सरिणि! अन्यशुभद्वेषिणि! दर्शनविघ्नाचरणादिति भावः। गवाक्षद्वार-रोधिनीं प्रति साग्रहं दिदृक्षमाणायास्तदवकाशमलभमानायाः सेर्ष्येयमुक्तिः।

(प) अनङ्गेति। अनङ्गपरवशे! कामाधीने! कामावेशवशेन प्राप्तमोहे! इत्यर्थः, स्वकीयास्वकीय-विवेकाभावादिति भावः। अत एवाह मदीयमिति। स्वकीयभ्रमेण परकीयमुत्तरीयमाददानां प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(फ) रागेति। रागश्चन्द्रापीडं प्रत्यनुराग एव आसवो मद्यं तेन मत्ता तत्सम्बोधनम्, नानाविध-भङ्गिकरणादिति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। आत्मानं चन्द्रापीडं प्रति सानुरागं मनः निवारय, अन्यथा अमुष्य लाभाभावेन चिरमनुतापमनुभविष्यसीत्याशयः। विविधभङ्गिकारिणीं प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ब) उज्झितेति। उज्झितं दर्शनोत्कण्ठया त्यक्तं धैर्य्यं यया तत्सम्बोधनम् गुरुजनसमक्षधावनादिति भावः। गुरुजनानां श्वशुरादीनां समक्षं अक्ष्णोः समीपं। तादृशीं प्रति सासूयेयमुक्तिः।

বিনয়বতি! ছলপূর্ব্বক দর্শন করায় ফল কি, নিঃশঙ্কভাবে দর্শন কর। (দ) হে যৌবন-বতি! বিশালস্তনযুগলদ্বারা আঘাত করিতেছ কেন? (ধ) হে নিতান্তক্রুদ্ধস্বভাবে! তুমিই অগ্রবর্ত্তিনী হও। (ন) হে মাৎসর্য্যবতি! তুমি একাকী গবাক্ষদ্বার রোধ করিতেছ কেন? (প) হে মদনাধীনে! তুমি আমার উত্তরীয় বসন, নিজের উত্তরীয় করিয়া লইতেছ কেন? (ফ) হে অনুরাগ-মদ্য-মত্তে! নিজের মনকে বারণ কর। (ব) হে

---

(१) विलोकय। (२) रागमत्ते!।

गुरुजनसमक्षम्। (ब) उन्मसत्स्वभावे! किमेवमाकुलीभवसि? (भ) मुग्धे! निगूहस्व मदनज्वर-जनित-पुलकजालकम्। (म) असाध्वाचरणे! (१) किमेवमुत्ताम्यसि? (य) बहुविकारे! विविधाङ्ग (२) वलनायासित-मध्य-भागा वृथा खिद्यसे। (र) शून्यहृदये! स्वभवनान्निर्गतमपि नात्मानमवगच्छसि। (ल) कौतुकाविष्टे! विस्मृतासि निश्वसितुम् (३)। (व)

(भ) उन्मसदिति। हे उन्मसत्स्वभावे! आविर्भवन्मनोविकारे! व्यस्तत्वादिति भावः। एवमित्थं किमाकुलीभवसि। न खलु ते चन्द्रापीड़सम्मेलनं भवेत् सुतरामयमाकुलीभावो व्यर्थ एवेति भावः। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् सोत्प्रासपरिहासीयमुक्तिः।

(म) मुग्ध इति। हे मुग्धे! सरले! आविर्भवतीऽपि पुलकजालस्यानवगमादिति भावः। मदनज्वरेण कामोत्तापेन जनितं पुलकजालकं रोमाञ्चसमूहं निगूहस्व वसनावरणेन संवृण। अन्यथा लोकैरुपहासिष्यसे इत्याशयः। तादृशीं प्रति पूर्ववदुक्तिरियम्।

(य) असाध्विति। हे असाध्वाचरणे! असदृव्यवहारिणि! परपुरुषार्थमुत्तान्तत्वादिति भावः। एवमित्थं सातिशयमित्यर्थः उत्ताम्यसि आकुलीभवसि। पतिव्रताया नैतदुचितमित्यभिप्रायः। भङ्गिविशेषदर्शनेनानुमिताकुलीभावां प्रति सासूयेयमुक्तिः।

(र) बह्विति। बहवो विकाराः शृङ्गारभावा यस्यास्तत्सम्बोधनं कटीचालनकटाक्षपातादिमत्त्वादिति भावः। विविधेन अङ्गवलनेन गात्रविक्षेपेण आयासितः खेदितः मध्यभागः कटीदेशो यया सा तादृशी सती वृथा खिद्यसे अनर्थकं परिश्राम्यसि, चन्द्रापीड़लाभासम्भवादिति भावः। मध्यभागस्यैव नितान्तकृशत्वात्तन्मात्रोक्तिः सङ्गच्छते। तादृशीं प्रति सपरिहासीयमुक्तिः।

(ल) शून्येति। शून्यहृदये! विषयान्तरज्ञानरहितचित्ते! चन्द्रापीड़ं प्रत्येकाग्रत्वादिति भावः। आत्मानं स्वदेहम्। गृहाद्बहिर्धावन्तीं प्रति सोत्प्रासपरिहासीयमुक्तिः।

(व) कौतुकेति। हे कौतुकाविष्टे! चन्द्रापीड़रूपदर्शनकुतूहलाक्रान्तचित्ते! विषयान्तरविस्मरणादिति भावः। अत एवाह निश्वसितुमपि विस्मृतासीति। अत्र निश्वासविस्मरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। निर्निमेषतया अनुमितैकाग्रतां प्रति पूर्ववदुक्तिरियम्।

ধৈর্য্যহীনে! গুরুজনের সমক্ষে ধাবিত হইতেছ কেন? (ভ) হে আবির্ভূতমনোবিকারে! এরূপ আকুল হইতেছ কেন? (ম) হে সরলে! মদনসন্তাপজনিত রোমাঞ্চসমূহ সংবরণ কর। (য) হে অসাধুচরিতে! কেন এত উতলা হইতেছ? (র) হে অনেকবিকারপূর্ণে! তুমি নানাপ্রকার অঙ্গসঞ্চালনদ্বারা কটীদেশের কষ্ট জন্মাইয়া বৃথা পরিশ্রম করিতেছ। (ল) হে শূন্যহৃদয়ে! তুমি নিজ গৃহ হইতে বাহির হইয়া পড়িয়াছ, তাহাও বুঝিতেছ না। (ব) হে কৌতুকাকৃষ্টচিত্তে! তুমি নিশ্বাস ত্যাগ করিতেও

---

(१) असाध्वाचरणे। (२) विविधाङ्गभङ्गवलन—। (३) निःश्वसितुं।

अन्तःसङ्कल्प-रचित-सुरत-(१) समागम-सुख-रस-निमीलित-लोचने! समुन्मीलय लोचनयुगलम्, अतिक्रामत्ययम्। (श) अनङ्ग-शर-प्रहार-मूर्च्छिते! रवि-किरणनिवारणाय कुरु शिरस्युत्तरीयांशुकपल्लवम्। (ष) अयि सतीव्रत-ग्रह-गृहीते! द्रष्टव्यमपश्यन्ती वञ्चयसि लोचनयुगलम्। (स) अधन्ये! (२) हतासि परपुरुष-दर्शन-परीहार-व्रतेन (३)। (ह) प्रसीद उत्तिष्ठ सखि! पश्य रतिविरहितं साक्षादिव भगवन्तमगृहीत-मकरध्वजं मकरध्वजम्। (क्ष)

(श) अन्तरिति। अन्तःसङ्कल्पेन मनोभावनया रचितं कल्पितं यत् सुरतसमागमसुखं चन्द्रापीड़ेन सह रमणसम्मेलनानन्दः तस्य रसेन आस्वादेन अनुभवेन निमीलिते मुद्रिते लोचने यया तत्सम्बोधनम्। तादृशरसास्वादमन्तरेणेदानीं नयनमुद्रणासम्भवादिति भावः। लोचनयुगलं समुन्मीलय, यतः अयं चन्द्रापीड़ः अतिक्रामति नयनपथमतीत्य याति। तथा च सति अलौकिकदर्शनसुखं न स्यादिति भावः। मुद्रितनयनां प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ष) अनङ्गेति। अनङ्गशरप्रहारेण मूर्च्छिता मूर्च्छापन्ना तत्सम्बोधनम्, वर्त्तमानकष्टानुभवा-दिति भावः। उत्तरीयांशुकपल्लवं उत्तरीयवस्त्रविस्तारं। आतपक्लिष्टां प्रति सपरिहासोक्तिरियम्।

(स) अयीति। सत्याः पतिव्रतायाः यद्व्रतं परपुरुषादर्शनरूपो नियमः स एव ग्रहो भूतविशेषस्तेन गृहीता आविष्टा तत्सम्बोधनम्। भूतावेशं विना ईदृशरूपदर्शनवैमुख्यं न स्यादिति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। अतएव द्रष्टव्यं दर्शनीयमलौकिकसुन्दरं चन्द्रापीड़मित्यर्थः अपश्यन्ती लोचनयुगलं वञ्चयसि अन्यदेवंविधदर्शनासम्भवादिति भावः। अन्याभिः सहागत्य परपुरुषदर्शनात्, पातिव्रात्यभङ्गभयेनापश्यन्तीं प्रति सविश्रम्भेयमुक्तिः।

(ह) अधन्ये इति। हे अधन्ये! अपुण्यवति! सति पुण्ये दर्शनावश्यम्भावादिति भावः। परपुरुष-दर्शनस्य परिहारः परित्याग एव व्रतं तेन हता चिराय वञ्चितासि द्रष्टव्यादर्शनादिति भावः। इयमपि पूर्ववदुक्तिः।

अहो परमचमत्कारिणी खल्वियमालापरचनाचातुरी कविचूड़ामणेः।

(क्ष) प्रसीदेति। रत्या निजपत्न्या विरहितं, चन्द्रापीड़स्यापि स्त्रीरहितत्वादिदं विशेषणमिति बोध्यम्। न गृहीतः मकरध्वजो मकराख्यजलजन्तुचिह्नितो ध्वजो येन तम्। चन्द्रापीड़स्यापि तादृशध्वजाभावादिदं विशेषणम्। साक्षान्मकरध्वजं। कन्दर्पमिव अमुं पश्य। अत्र मकरध्वजशब्दयोः पौनरुक्त्यं तात्पर्य्यतो

বিস্মৃত হইয়াছ। (শ) হে…মুদ্রিতনয়নে! তুমি নয়নযুগল উন্মীলিত কর, ইনি যে দৃষ্টিপথ অতিক্রম করিয়া যাইতেছেন। (ষ) হে মদন-বাণ-প্রহার-মূর্চ্ছিতে! রৌদ্র নিবারণ করিবার নিমিত্ত মস্তকের উপরে উত্তরীয় বসন বিস্তৃত কর। (স) হে সতী-নিয়ম-পালন-রূপ-ভূতাবিষ্টে! দেখিবার বস্তু না দেখিয়া নয়নযুগলকে বঞ্চিত করিতেছ। (হ) হে অপুণ্য-বতি! পরপুরুষ-দর্শন-পরিত্যাগরূপ ব্রতদ্বারা তুমি বঞ্চিত হইতেছ। (ক্ষ) সখি! প্রসন্ন

---

(১)…রত…। (২) অধন্যে! (৩)…দর্শনব্রতেন।

अयमस्य सितातपत्रान्तरेण अलिकुलनीले शिरसि तिमिरशङ्कानिपतित इव शशिकरकलापो मालतीकुसुमशेखरोऽभिलक्ष्यते। (क) एतदस्य कर्णाभरण-मरकत-प्रभा-श्यामायितं उपरचित-विकच-शिरीष-कुसुम-कर्ण-पूरमिव कपोल-तलमाभाति। (ख) अयमस्य हारान्तर्निविष्टारुण-मणि-किरण-कलाप-च्छलेन हृदयं विविक्षुरभिनवयौवनराग इव बहिः परिस्फुरति। (ग) एतदनेन चामरकलापान्तरैरित इव वीच्चितम् (१)। (घ) एतत् किमपि वैशम्पायनेन

भेदात् लाटानुप्रासो द्वयोत्प्रेक्षा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। रूपमोहिनीपविष्टां प्रति कस्याश्चित् समन्मथेयमुक्तिः।

(क) अयमिति। अलिकुलवत् भ्रमरसमूहवत् नीले ताहशकेशाहतत्वान्नितान्तकृष्णवर्णे अस्य चन्द्रापीड़स्य शिरसि, तिमिरशङ्कया अन्धकारभ्रमेण अन्धकारभ्रमोत्पादिततन्निरासबुद्धेरित्यर्थः निपतितः शशिकरकलाप इव चन्द्रकिरणसमूह इव अयं मालतीकुसुमानां शेखरो मालारूपशिरोभूषणं सितातपत्रान्तरेण श्वेतच्छत्राभ्यन्तरेण अभिलक्ष्यते दृश्यते। अत्र लुप्तोपमा, भ्रान्तिमान्, जात्युत्प्रेक्षा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। सस्पृहेयमुक्तिः।

(ख) एतदिति। कर्णाभरणं यन्मरकतं हरिन्मणिस्तस्य प्रभया श्यामायितं श्यामावदाचरितं एतद्दृश्यमानं अस्य चन्द्रापीड़स्य कपोलतलं गण्डद्वयोपरिभागः, उपरचितो निर्म्मितः विकचस्य प्रस्फुटस्य शिरीषकुसुमस्य कर्णपूरः कर्णाभरणं यस्मिन् तत् ताहशमिव आभाति शोभते। शिरीषकुसुमस्य श्यामत्वात् कर्णलग्नस्य गण्डोपरिप्रभापतनसम्भावास्तीति भावः। अत्र कण्ठ्गतोपमा, शिरीषकुसुमेन कर्णपूररचनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। पूर्ववदुक्तिरियम्।

(ग) अयमिति। अयं दृश्यमानः, अभिनवयौवनस्य रागस्तत्कालसम्भवोऽनुराग एव रागो रक्तिमा, हारस्य अन्तर्निविष्टा मध्यगता ये अरुणमणयः पद्मरागास्तेषां किरणकलापच्छलेन विद्यमान इत्यर्थः, हृदयं विविक्षुः प्रवेष्टुमिच्छुरिव सन् बहिः परिस्फुरति इदानीमपि प्रवेशाभावात् हृदयोपरि प्रसरति। अस्य वक्षसि येयं रक्ताभा परिलक्ष्यते नासौ पद्मरागकान्तिः, अपि तु यौवनसम्भवानुरागो हृदयं विविक्षुरिदानीमपि बहिस्तिष्ठतीति सरलार्थः। अत्र रक्तिमानुरागयोः श्लेषाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः सापह्नवोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। पूर्ववदुक्तिरियम्।

হও, উঠ; রতিদেবী ও মকরধ্বজ-রহিত সাক্ষাৎ ভগবান্ কামদেবের ন্যায় ইহাঁকে দর্শন কর। (ক) ভ্রমরসমূহের ন্যায় অত্যন্ত কৃষ্ণবর্ণ মস্তকের উপরে অন্ধকারভ্রমে নিপতিত চন্দ্রকিরণসমূহের ন্যায় ইহাঁর এই মালতীকুসুমের মালা, শ্বেতবর্ণছত্রের ভিতর দিয়া দেখা যাইতেছে। (খ) ইহাঁর এই গণ্ডযুগল, কর্ণালঙ্কার মরকতমণির প্রভায় শ্যামবর্ণ হইয়া দীপ্তি পাইতেছে; সুতরাং বোধ হইতেছে যেন প্রস্ফুটিত শিরীষকুসুমের কর্ণাভরণ নির্ম্মাণ করিয়া কর্ণে দেওয়া হইয়াছে। (গ) ইহাঁর এই নবযৌবনসম্ভূত অনুরাগ যেন হৃদয়ে প্রবেশ

(१) एतदलकचामरकलापान्तरैरितविरलवीच्चितम्।

सह समामन्त्र (१) दशन-मयूख-लेखा-धवलीकृत-(२) दिक्चक्रवालं हसितम्। (ङ) एषोऽस्य शुक-पक्षति-हरित-रागिणोत्तरीयांशुकप्रान्तेन बलाहकस्तुरग-खुर-चलन-जन्मानं लग्नं (३) अग्रकेशेषु रेणुमपहरति। (च) अयमनेन लक्ष्मी-कर-कमल-कोमल-तल: समुत्क्षिप्य तिर्य्यक् तुरङ्गमस्कन्धे निक्षिप्तचरण-पल्लव:। (छ) सलीलमयमनेन च ताम्बूल-याचनार्थमुत्तानिततल: (४) कोमल-दीर्घाङ्गुलि: (५) आताम्र-पुष्कर-शोभी गजेनेव शैवाल-कवल-लालस: (६)

(घ) एतदिति। अनेन चन्द्रापीड़ेन चामरकलापान्तरै: आन्दोल्यमानचामरसमूहमध्यै:, इत इव मम दिशीव वीक्षितम्। कस्याश्चित् सविलासमन्मथेयमुक्ति:।

(ङ) एतदिति। वैशम्पायनेन सह किमपि समामन्त्र्य समालप्य, दशनमयूखलेखया दन्तरश्मिश्रेण्या धवलीकृतं दिक्चक्रवालं दिङ्मण्डलं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा एतत् हसितं अयमनेन हास: कृत:। अत्र दिङ्मण्डलस्य धवलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कार:। सकामेयमुक्ति:।

(च) एष इति। एष बलाहकस्तदाख्य: पूर्वोक्तसेनापति:, शुकपक्षते: कीरपक्षिपक्षमूलस्येव हरितो रागो वर्णो यस्य तेन उत्तरीयांशुकप्रान्तेन, तुरगाणां अश्वानां खुरचलनात् जन्म यस्य तं, अस्य चन्द्रापीड़स्य अग्रकेशेषु केशाग्रेषु लग्नं रेणुं धूलिं अपहरति दूरीकरोति। अत्र लुप्तोपमालङ्कार:। सस्पृहेयमुक्ति:।

(छ) अयमिति। अनेन चन्द्रापीड़ेन, लक्ष्मीकरकमलवत् कोमलं तलं यस्य स तादृश: अयं चरण-पल्लव:, तिर्य्यग्भावेन समुत्क्षिप्य उत्तोल्य तुरङ्गमस्कन्धे निक्षिप्तो न्यस्त:। अत्रापि लुप्तोपमालङ्कार:। पूर्ववदुक्तिरियम्।

(ज) सलीलमिति। क्रियेति चार्थ:। गजेन आताम्रेण पुष्करेण शुण्डाग्रेण शोभत इति स:, तथा शैवालकवले शैवलग्रासग्रहणे लालसो लोलुप: हस्तिनो लालसत्वात्तच्छुण्डाया अपि लालसत्वमुपचर्य्यत इति बोध्यम्, कर: शुण्डादण्ड इव, अनेन चन्द्रापीड़ेन, उत्तानितं ऊर्द्धीकृतं तलं यस्य स:, कोमला दीर्घाश्च

করিতে ইচ্ছা করিয়া, মুক্তামালার অন্তর্গত পদ্মরাগমণির কিরণসমূহচ্ছলে এখনও বাহিরেই প্রকাশ পাইতেছে। (ঘ) এই যে ইনি চামরগুলির ভিতর দিয়া এই দিকেই যেন দৃষ্টিপাত করিলেন। (ঙ) বৈশম্পায়নের সহিত কোন বিষয় আলাপ করিয়া, দন্তরশ্মিসমূহে দিঙ্মণ্ডল শুভ্রবর্ণ করিয়া এই ইনি হাস্য করিলেন। (চ) এই বলাহক (সেনাপতি), শুকপক্ষীর পক্ষমূলের ন্যায় হরিতবর্ণ স্বকীয় উত্তরীয়বসন-প্রান্তদ্বারা, অশ্বগণের খুর হইতে উত্থিত ইঁহার কেশাগ্রসংলগ্ন ধূলিসমূহ ঝাড়িয়া দিতেছেন। (ছ) এই ইনি, লক্ষ্মীদেবীর করকমলের ন্যায় কোমল-তল-সম্পন্ন স্বকীয় চরণপল্লব, তির্য্যগ্ ভাবে (তেরচা করিয়া) উত্তোলন করিয়া অশ্ব-স্কন্ধে বিন্যস্ত করিলেন। (জ) হস্তী যেমন শৈবাল-(শেওলা) কবল গ্রহণ করিবার লালসায় শুণ্ড প্রসারণ করে, সেইরূপ ইনি, তাম্বূল প্রার্থনা করিবার নিমিত্ত কোমল ও

---

(१) समामन्त्रयत:। (२)...धवलित...। (३) आलग्नं, आलम्बकेशेषु।
(४)...तलौ, करतल:। (५) दीर्घाङ्गुलि:। (६)...कमलग्रासलालस:।

प्रसारितः करः। (ज) धन्या सा, या लक्ष्मीरिव निर्जितकमलं करतलमस्य वसुन्धरासपत्नी ग्रहीष्यति। (झ) धन्या च देवी विलासवती, सकलमहीमण्डल-भारधारणक्षमः (१) ककुभा दिग्गज इव गर्भेण ययायमूढः (२)।" (ञ)

इत्येवंविधानि चान्यानि च वदन्तीनां तासां आपीयमान इव लोचन-पुटैः, आहूयमान इव भूषणरवैः, अनुगम्यमान इव हृदयैः, निबध्यमान इव (३)

अङ्गुलयो यस्य सः, तथा आताम्रं ईषत्ताम्रवर्णं यत् पुष्करं पद्मं तद्वत् शोभत इति सः, करो हस्तः, ताम्बूल-याचनार्थं सलीलं सविलासं प्रसारितः।" अत्र श्लेषसङ्कीर्णोपमालङ्कारः। पूर्णोपमेति केचित्। इयमपि पूर्ववदुक्तिः।

(झ) धन्येति। या अङ्गना वसुन्धरायाः पृथिव्याः सपत्नी सती, अस्य भाविवसुन्धराधिपतित्वादिति भावः, लक्ष्मीरिव राजलक्ष्मीरिव निर्जितकमलं पद्मादपि सुन्दरमित्यर्थः अस्य चन्द्रापीडस्य करतलं पाणिं ग्रहीष्यति परिणयविधाविति शेषः, सा धन्या सैव पुण्यवती, परमसौभाग्यादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। तथा विशेष्यीभूतस्य तच्छब्दनिर्दिष्टवाक्यस्य प्राङ्निर्देशात् "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिवद्वाक्यगत-विधेयाविमर्शदोषः, स तु 'धन्या सा' इत्यस्य ग्रहीष्यतीत्यनन्तरं पाठेन समाधेयः। समन्वयेयमुक्तिः।

(ञ) धन्येति। यया विलासवत्या, ककुभा दिशा दिग्गज इव, सकलमहीमण्डलस्य यद्भारधारणं शासनव्यापारपरिचालना गुरुत्ववहनञ्च तत्र क्षमो योग्यः, अयं चन्द्रापीडः, गर्भेण उदरेण अभ्यन्तरेण च ऊढो धृतः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। किन्त्वत्र पूर्ववाक्ये तच्छब्दाभावात् यच्छब्दस्य चोत्तरवाक्यगतत्वेन तच्छब्दानपेक्षणात् पूर्ववन्न विधेयाविमर्शदोषः, "आत्मा जानाति, यत् पापं" इत्यादिवत्। सम्पूर्णेयमुक्तिः।

(ट) इत्येवमिति। तासां पौरललनानां लोचनपुटैरित्येवं सर्वत्र सम्बन्धः। आपीयमान इवेत्यादौ सर्वत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। किञ्च आभरणरत्नानां रश्मयः किरणा एव रज्जवस्ताभिः 'निबध्यमान इवेति निरङ्ग-केवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा। तथा नवयौवनान्येव बलय उपहारद्रव्याणि तैः, उपक्रियमाण उपहारपात्री-

---

দীর্ঘ অঙ্গুলি-সমন্বিত এবং ঈষৎতাম্রবর্ণ পদ্মের ন্যায় শোভিত করকমল উত্তানিত (চিৎ) করিয়া লীলার সহিত প্রসারণ করিলেন। (ঝ) সেই রমণীই ধন্য; যে, পৃথিবীর সপত্নী হইয়া রাজলক্ষ্মীর ন্যায়, ইঁহার পদ্মবিজয়ী পাণি গ্রহণ করিবে। (ঞ) দিক্ যেমন দিগ্-হস্তীকে গর্ভে ধারণ করে, সেইরূপ যিনি, সমগ্র ভূমণ্ডলের ভার বহন করিতে সক্ষম এই চন্দ্রাপীড়কে গর্ভে ধারণ করিয়াছেন, সেই দেবী বিলাসবতীও ধন্য।"

(ট) পুরবাসিনী রমণীগণ এই রকম এবং অন্যান্য অনেক রকম বলিতেছিল, তখন তাহাদের নয়নযুগল যেন চন্দ্রাপীড়কে পান করিতেছিল; অলঙ্কারের শব্দ যেন আহ্বান করিতেছিল; মন যেন তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; অলঙ্কারস্থিত রত্নের কিরণরূপ

---

(१)...मण्डलधारणक्षमः। (२)...दिग्गज इव यया च व्यूढः, गर्भेण यया व्यूढः, गर्भेण ययायं व्यूढः

(३) अनुबध्यमान इव।

आभरण-रत्न-रश्मि-रज्जुभिः, उपक्रियमाण इव नवयौवनबलिभिः, शिथिल-(१) भुजलता-विगलित-धवल-वलय-निकरैः (२) पदे पदे विवाहानल इव कुसुम-मिश्रैर्लाजाञ्जलिभिरवकीर्य्यमाणश्चन्द्रापीड़ो राजकुलसमीपमाससाद। (ट)

क्रमेण च यामावस्थिताभिः अनवरत-करटस्थल-विगलित-(३) मद-मसीपङ्क-करीभिः (४) अञ्जनगिरिमालामलिनाभिः कुञ्जर-घटाभिरन्धकारितदिङ्मुखतया जलधरदिवसायमानम्, उद्दण्ड-धवलातपत्रसहस्रसङ्कटम्, अनेकद्वीपान्तरागत-दूत-शत-समाकुलं राजद्वारमासाद्य तुरङ्गमादवततार। (ठ)

क्रियमाण इव, आयहेण दानाभिलाषादिति भावः। अत्रापि निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा। तथा शिथिलाभ्यः कामोद्रेकात् स्रस्ताभ्यः भुजलताभ्यः विगलितः, धवलानां रजतमयत्वात् हीरकमयत्वाद्वा शुभ्राणां वलयानां कटकानां निकरः तत्किरणसमूह इत्यर्थः येषु तैः, कुसुममिश्रैः लाजाञ्जलिभिः अञ्जलिपूर्णधानाभिः, विवाहानलः पाणिग्रहणकालीनवह्निरिव, पदे पदे प्रतिपदक्षेपं अवकीर्य्यमाणस्ताभिर्ललनाभिरभिवृष्यमाणः, चन्द्रापीड़ः राजकुलस्य राजवाट्याः समीपं आससाद प्राप। अत्रोपमालङ्कारः। पाणिग्रहणसमये तदनले लाजनिक्षेपः शास्त्रात्, राजागमनादौ तु लाजनिक्षेपो देशाचारात्। तथा च रघुवंशेऽपि "अवाकिरन् बाललताः प्रसूनैराचारलाजैरिव पौरकन्याः।"

(ठ) क्रमेणेति। यामेषु अवस्थिताभिः प्रतिप्रहरं भिन्नभिन्नाभिः स्थिताभिः। अनवरतं करटस्थलीभ्यो गण्डदेशेभ्यः विगलिता मदा दानजलान्येव मसीपङ्का गाढ़मस्यः कृष्णतासाधर्म्म्यात्, अथवा तादृशमदा मसी-पङ्का इव तान् कुर्वन्तीति ताभिः अत्र साधकबाधकप्रमाणाभावादुपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः। अञ्जन-गिरिमालावत् कज्जलपर्वतश्रेणीवत् मलिनाभिः कृष्णवर्णाभिः कुञ्जरघटाभिर्हस्तिसमूहैः करणैः, अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि दिङ्मुखानि यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, जलधरदिवसायमानं मेघाच्छन्नदिनवदाचरत्। अत्र काङ्गतोपमालङ्कारः। उद्दण्डानां उत्तोलितदण्डानां धवलातपत्राणां श्वेतछत्राणां सहस्रेण समूहेन

রজ্জু যেন তাঁহাকে বন্ধন করিতেছিল; আর তাহারা নবযৌবনরূপ উপহারদ্রব্যদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে যেন উপঢৌকন দিতেছিল; এবং বিবাহের অগ্নিতে যেমন খই নিক্ষেপ করে, সেইরূপ অঞ্জলিপূর্ণ করিয়া পুষ্পমিশ্রিত খই, প্রত্যেক পদক্ষেপে চন্দ্রাপীড়ের গাত্রে নিক্ষেপ করিতেছিল; তখন তাঁহাদের শিথিল ভুজলতা হইতে নিপতিত ধবলবর্ণ বলয়ের কিরণসমূহ সেই খই'র সঙ্গে মিশিতেছিল; এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় রাজবাটীর নিকটে উপস্থিত হইলেন।

(ঠ) চন্দ্রাপীড়, ক্রমে রাজদ্বারে উপস্থিত হইয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন; সে স্থানে প্রত্যেক প্রহরে পরিবর্ত্তিত হইয়া বহুতর হস্তী অবস্থান করিতেছিল, তাহাদের গণ্ডস্থল হইতে অবিশ্রান্ত, গাঢ় কালীর ন্যায় মদজল বিগলিত হইতেছিল; এবং সেগুলি কজ্জলময় পর্ব্বতের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ ছিল, তাহাতে নিকটবর্ত্তী দিক্‌সমূহ অন্ধকার হইয়া যাওয়ায় সেই রাজদ্বার,

---

(१) शिथिलित...। (२)...निकरैः। (३)...गलित...। (४)...मषीकरीभिः।

अवतीर्य्यं च करतलेन करे वैशम्पायनमवलम्ब्य पुरः सविनयं प्रस्थितेन बलाहकेनोपदिश्यमान-मार्गः त्रिभुवनमिव पुञ्जीभूतम्, (ड) आगृहीत-कनक-वेत्रलतैः सित-वारवाणैः (१) सिताङ्गरागैः (२) सितकुसुमशेखरैः सितोष्णीषैः सितवेषपरिग्रहतया श्वेतद्वीपसम्भवैरिव कृतयुगपुरुषैरिव महाप्रमाणैर्दिवानिश-मालिखितैरिव उत्कीर्णैरिव तोरणस्तम्भनिषण्णैर्द्वारपालैरनुज्झितद्वारदेशम्, (ढ)

सङ्कटं व्याप्तम्, तथा अनेकद्वीपान्तरेभ्य आगतानां स्वस्वराजप्रयोजनसाधनाय उपस्थितानां दूतानां शतेन समूहेन समाकुलं व्याप्तं प्रवेशानुमत्यपेक्षया तेषां तत्रावस्थानादिति भावः।

(ड) अवेति। किञ्चेति चार्थः। चन्द्रापीडस्तुरङ्गमादवतीर्य्य, करतलेन करे वैशम्पायनमवलम्ब्य वैशम्पायनस्य करं धृत्वेत्यर्थः, सविनयं पुरः प्रस्थितेन बलाहकेन तदाख्येन सेनापतिना उपदिश्यमानमार्गः प्रदर्श्यमानप्रवेशपथः सन्, पुञ्जीभूतं त्रिभुवनमिव अतीवविशालत्वात् सर्वविधपदार्थाधारत्वाच्च एकत्र समवेतं त्रिजगदिव स्थितं राजकुलं विवेशेति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) आगृहीतेति। इतस्ततीयान्तपदानि वक्ष्यमाणस्य द्वारपालैरित्यस्य विशेषणानि। आगृहीता धृताः कनकवेत्रलताः स्वर्णखचितवेत्रयष्टयो यैस्तैः। सिताः शुभ्राः वारवाणाः कञ्चुका येषां तैः। सितान् वेषान् परिगृह्णन्तीति ते तेषां भावस्तया हेतुना श्वेतद्वीपे सम्भवैरिव उत्पन्नैरिव तेषां सर्वाङ्गे श्वेतत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा सितपदस्यासकृदुपादानादनवीकृतत्वदोषः, स च सित-वारवाणाङ्गराग-कुसुमशेखरोष्णीषधारिभिरिति पाठेन समाधेयः। कृतयुगपुरुषैः सत्ययुगीयमानवैरिव महाप्रमाणैरतिदीर्घाकृतिभिः। अत्रोपमालङ्कारः। आलिखितैश्चित्रितैरिव सततसावधानतया निश्चलत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। उत्कीर्णैरिव तोरणस्तम्भेषु खोदितैरिव गाढसंलग्नत्वादिति भावः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा। तोरणस्य बहिर्द्वारस्य स्तम्भेषु निषण्णैस्तदाश्रयेणावस्थितैः, द्वारपालैर्दौवारिकैः दिवानिशं अनुज्झितः अपरित्यक्तः द्वारदेशो यस्य तत्। राजकुलमित्यस्य विशेषणमेतत्।

মেঘাচ্ছন্ন দিনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল, এবং উত্তোলিতদণ্ড বহুতর শ্বেতচ্ছত্রে পরিপূর্ণ ও অন্যান্য অনেক দ্বীপ হইতে উপস্থিত রাজদূতগণে ব্যাপ্ত ছিল।

(ড) চন্দ্রাপীড় অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া স্বহস্তে বৈশম্পায়নের হস্তধারণপূর্ব্বক রাজবাটীতে প্রবেশ করিলেন; তখন বলাহক (সেনাপতি), বিনয়ের সহিত অগ্রে অগ্রে পথ দেখাইয়া যাইতেছিলেন। সেই রাজবাটী পুঞ্জীভূত ত্রিভুবনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ঢ) বহির্দ্বারের স্তম্ভের নিকটে দৌবারিকগণ সর্ব্বদা অবস্থান করিতেছিল, তাহাদের হস্তে সুবর্ণ-খচিত বেত্রযষ্টি, গাত্রে শ্বেতবর্ণ সাঁজোয়া ও শ্বেতবর্ণ অঙ্গরাগ এবং মস্তকে শ্বেতকুসুমের মালা ও শ্বেতবর্ণ উষ্ণীষ ছিল; সুতরাং শ্বেতবর্ণ সকল পরিচ্ছদ ধারণ করায় তাহারা যেন শ্বেতদ্বীপ-সম্ভূত-বলিয়া বোধ হইতেছিল; আর সত্যযুগের মনুষ্যের ন্যায় তাহাদের অত্যন্ত দীর্ঘ আকৃতি ছিল এবং নিশ্চলভাবে অবস্থান করায় তাহাদিগকে চিত্রিতের ন্যায় এবং ক্ষোদিতের

---

(१) सितवारवाणधारिभिः।

अनेक-सञ्जवन-(१) चन्द्रशाला-(२) विटङ्क-वेदिका-सङ्कट-शिखरैरभ्रङ्कषैरुपहसित-कैलास-शैल-शोभैः (३) अमलसुधावदातैः सप्रालेयशैलमिव (४) महाप्रासादैः, (ण) अनेक-वातायन-विवर-विनिर्गत-युवति-भूषण-किरण-(५) सहस्रतया कनकशृङ्खलाजालकेनेवोपरिविस्तीर्णेन (६) विराजमानम्, (त) अन्तर्गतायुधनिवहाभिराशीविष-कुल-सङ्कुलाभिः पातालगुहाभिरिवातिगम्भीराभिरायुधशालाभिरुपेतम्, (थ) अवलाचरणालक्तक-रस-रक्त-मणि-शकलैः शिखर-निलीन-

(ण) अनेकेति। अनेका बहुतराः, सञ्जवनानि चतुःशालानि, चन्द्रशाला उपरिस्थगृहाणि, विटङ्कानि कपोतपालिकाः, वेदिका उपवेशनार्थं बद्धभूमयश्च ताभिः सङ्कटानि व्याप्तानि शिखराणि उपरिभागा येषां तैः। "सञ्जवनन्त्विदं। चतुःशालं।" "कपोतपालिकायान्तु विटङ्कं पुंनपुंसक"मिति चामरः। "शिरोगृहान्ते वलभी-चन्द्रशाले सौधोर्द्ध वेश्मनि।" इति रभसः। अभ्रमाकाशं कषन्तीति तैः अत्युच्चैरित्यर्थः। "सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कष" इति खप्रत्ययः। उपहसिता आपेक्षिकविशेषशुभ्रत्वात्तिरस्कृता कैलासशैलस्य शोभा यैस्तैः। अमलाभिः सुधाभिश्चूर्णलेपैः अवदाताः श्वेतास्तैः। महाप्रासादैश्च हृदट्टालिकाभिः करणैः, प्रालेयशैलेर्हिमाचलैः सहेति सप्रालेयशैलं तदिव स्थितमिति राजकुलमित्यस्य विशेषणम्। तादृशप्रासादानां हिमाचलतुल्यत्वादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) अनेकेति। अनेकेभ्यो वातायनविवरेभ्यो गवाक्षरन्ध्रेभ्यो विनिर्गतं युवतिभूषणकिरणानां सहस्रं समूहो यस्मिन् तस्य भावस्तया हेतुना, उपरि विस्तीर्णेन प्रसारितेन कनकशृङ्खलानां जालकेन समूहेनेव विराजमानं तत्किरणानां कनकशृङ्खलावत् प्रतीयमानत्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) अन्तरिति। अन्तर्गता आयुधनिवहा अस्त्रसमूहा यासां ताभिः, अतएव आशीविषकुलेन सर्पसमूहेन सङ्कुलाभिर्व्याप्ताभिः, पातालगुहाभिः पातालविवरैरिव स्थिताभिः, अतिगम्भीराभिर्नितान्तभीषणाभिः आयुधशालाभिरस्त्रागारैरुपेतं युक्तम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(द) अवलेति। अवलानां उपरिविचरणकारिणीनां रमणीनां ये चरणालक्तकरसास्तै रक्तानि

ন্যায় বোধ হইতেছিল। (ণ) সেই রাজবাটীতে কৈলাস-শোভা-তিরস্কারী, গগনস্পর্শী এবং নির্ম্মল-চূর্ণ-লেপনে শুভ্রবর্ণ বৃহৎ বৃহৎ অট্টালিকাসমূহ ছিল, তাহার উপরিভাগ বহুতর চতুঃশালা, চিলে কোঠা, পারা'র খোপ এবং বসিবার নিমিত্ত উচ্চ ভূমিতে ব্যাপ্ত ছিল, সুতরাং প্রতীতি হইতেছিল যেন সেই রাজবাটী হিমালয়-সংযুক্ত হইয়া রহিয়াছে। (ত) বহুতর গবাক্ষরন্ধ্র হইতে যুবতিগণের অলঙ্কারের কিরণ নির্গত হওয়ায় বোধ হইতেছিল যেন উপরিভাগে স্বর্ণশৃঙ্খলের জাল বিস্তৃত করিয়া রাখা হইয়াছে, তাহাতে রাজবাটীটি শোভা পাইতেছিল। (থ) সর্পসমূহব্যাপ্ত পাতালগুহার ন্যায় অত্যন্ত ভয়ঙ্কর, এবং নানাবিধ অস্ত্রে পরিপূর্ণ বহুতর অস্ত্রাগার সেই রাজবাটীতে ছিল। (দ) বহুতর কৃত্রিম ক্রীড়াপর্ব্বত ছিল; তাহার রত্নখণ্ড-

(१)...संयमन, संयवन...। (२)...शालिका...। (३)...सितकैलासशोभैः।
(४)...शैलमिव। (५)...युवतिकिरण...। (६) वितानेन, विततेन।

शिखि-कुल-कृत-केकारव-कलकलैः क्रीड़ापर्वतकैरुपशोभितम्, (द) उज्ज्वल-वर्ण-कम्बलावगुण्ठित-कनक-पर्य्याणाभिः प्रलम्ब-(१) चामर-कलाप-चुम्बित-चल-कर्ण-पल्लवाभिः कुलयुवतिभिरिवोपरूढ़-(२) शिक्षाविनय-निभृताभिः (३) याम-करेणुकाभिरशून्यकक्षान्तरम्, (ध) आलान-स्तम्भनिषण्णेन च नवजलधर-घोष-(४) गम्भीरं अनुगत-(५) वीणा-वेणु-रव-रम्यं आस्फालित-घर्घरिका-घर्घरं अनवरत-मृदु-मृदङ्ग-ध्वनिं (६) आमीलित-लोचन-त्रिभागेन वाम-दशन-कोटि-

---

लोहितानि मणिशकलानि रत्नखण्डानि येषां तैः, तथा शिखरेषु तेषामेव शृङ्गेषु निलीनानां स्थितानां शिखिनां मयूराणां कुलेन समूहेन कृताः केकारवा एव कलकलाः कोलाहला येषु तैः, क्रीड़ापर्वतकैः विहारार्थनिर्म्मितक्षुद्रपर्वतैरुपशोभितं राजकुलम्।

(ध) उज्ज्वलेति। उज्ज्वलवर्णैः कम्बलैः अवगुण्ठितानि आच्छादितानि कनकपर्य्याणानि स्वर्णनिर्म्मित-पल्ययनानि यासां ताभिः, प्रलम्बैर्दीर्घैः चामरकलापैः चुम्बितौ स्पृष्टौ चलौ चपलौ कर्णपल्लवौ यासां ताभिः, शिक्षा सङ्केतज्ञानं गार्हस्थ्यनैपुण्यलाभश्च, विनयः अनौद्धत्यं नम्रता च, तथा च उपरूढ़ाभ्यामुत्पन्नाभ्यां शिक्षा-विनयाभ्यां निभृता अनुयाः अप्रगल्भाश्च ताभिः, कुलयुवतिभिरिव स्थिताभिः यामकरेणुकाभिः प्रतिप्रहरं पृथक् पृथग् बन्धनीयाभिर्हस्तिनीभिः अशून्यानि अविरहितानि पूर्णानीत्यर्थः कक्षान्तराणि प्रकोष्ठमध्यभागा यस्य तत्तथोक्तं राजकुलं। अत्रोपमालङ्कारः।

(न) आलानेति। अपि चेति चार्थः। इतस्तृतीयान्तपदानि वक्ष्यमाणस्य गन्धहस्तिनेत्यस्य विशेषणानि। आलानस्तम्भे गजबन्धनस्थूणायां निषण्णः स्थितस्तदाश्रयेण स्थित इत्यर्थस्तेन। नवस्य जलधरस्य मेघस्य घोषवत् गर्जनवत् गम्भीरमिति लुप्तोपमा, अनुगतैः स्वानुसृतैः वीणारेणुरवैः रम्यं मनोहरं, आस्फालितानां वादितानां घर्घरिकाणां क्षुद्रघण्टिकानां घर्घरः शब्दो यस्मिन् तं तच्छब्दमिश्रितमित्यर्थः, अनवरतः अविश्रान्तः मृदुः कोमलो यो मृदङ्गध्वनिर्मुरजशब्दस्तम्, आकर्णयतेत्यस्य कर्म्मपदमेतत्। आकर्णनप्रकारमाह आमीलितेत्यादि। आमीलित ईषन्मुद्रितो लोचनयोस्त्रिभागस्तृतीयः अंशो येन तेन। त्रिभागेत्यत्र त्रिशब्देनैव तृतीयरूपार्थो बोध्यः, वृत्तिविषये संख्याशब्दस्य पूरणार्थत्वनियमात् "त्रिभागशेषासु निशासु च क्षण"मिति कुमारसम्भवादावपि दर्शनात्। वामस्य

গুলি রমণীগণের চরণের আলতার রসে রঞ্জিত হইয়াছিল এবং ময়ূরগণ শৃঙ্গে বসিয়া কেকারবে কোলাহল করিতেছিল। (ধ) শিক্ষা ও বিনয়বশতঃ কুল-রমণীগণের ন্যায় শান্তস্বভাব এবং প্রতিপ্রহরে পরিবর্তনীয় কতকগুলি হস্তিনী প্রকোষ্ঠমধ্যে রহিয়াছিল, উজ্জ্বলরঙের কম্বল-দ্বারা তাহাদের সোনার জিনগুলি আচ্ছাদিত ছিল এবং লম্বমান চামরসমূহ, তাহাদের চঞ্চল ও বিস্তৃত কর্ণগুলি স্পর্শ করিতেছিল। (ন) আর একদিকে গন্ধমাদননামে একটা গন্ধহস্তী বন্ধনস্তম্ভে বদ্ধ ছিল ; তখন নবীন-মেঘ-গর্জ্জনের ন্যায় গম্ভীর, সঙ্গে সঙ্গে বীণা ও বংশীর রব হইতে থাকায় মনোহর এবং মন্দিরার শব্দ-মিশ্রিত অবিশ্রান্ত কোমল মৃদঙ্গধ্বনি হইতেছিল ;

---

(१) प्रचल, लम्ब...। (२)...उपारूढ़...। (३)...विनयेन निभृताभिः।
(४) जलधरगर्जितघोष...। (५) अतनु...। (६) अनवरतसङ्गीतकमृदङ्गध्वनिं। ...

निषस्-हस्तेन निश्चलकर्णतालेनाकर्णयता, (न) सलीलमुभयपार्श्वावलम्बि-(१) वर्णकम्बलतया विन्ध्यगिरिणेवाविष्कृतधातु-विचित्र-(२) पक्षसम्पुटेन, (प) आधोरण-गीतानन्द-कृत-मन्द्र-कण्ठ-गर्जितेन, (फ) मदजल-शवल-शङ्ख-शोभित-श्रवणपुटेन रजनिकर-विम्ब-चुम्बि-संवर्त्तकाम्बुद-वृन्द-(३) विडम्बकेन, (ब) कर्णान्तलम्बिना (४) काञ्चनमयेन कृतकर्णपूरमिवाङ्कुशेन मुखमुद्वहता, (भ)

दशनस्य दन्तस्य कोटौ अग्रे निषण्णः स्थितः हस्तः शुण्डा यस्य तेन। तथा कर्णौ ताले तालपत्रे इव इति कर्णताले तथा च निश्चले कर्णताले तालपत्रवद्विस्तृतकर्णौ यस्य तेन तादृशेन च सता, आकर्णयता तथाविधमृदङ्गध्वनिं शृण्वता। ईदृशा एव हस्तिनां गानादिश्रवणस्वभावाः अतएवात्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(प) सलीलमिति। सलीलं यथा तथा उभयपार्श्वे अवलम्बते पततीति तत्तादृशं वर्णकम्बलं विचित्र-पृष्ठास्तरणं यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, "प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयो"रित्यमरः। आविष्कृतं प्रकटितं धातुभिर्गैरिकादिभिः विचित्रं पक्षयोः सम्पुटं युगलं येन तेन तादृशेन विन्ध्यगिरिणेव स्थितेन। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) आधोरणेति। आधोरणस्य हस्तिपकस्य गीतेन गानश्रवणेन य आनन्दस्तेन कृतं मन्द्रं गम्भीरं कण्ठगर्जितं येन तेन।

(ब) मदेति। मदजलेन शवलो विचित्रो यः शङ्खो ललाटास्थि तेन शोभितं श्रवणपुटं कर्णयुगलं यस्य तेन। "शङ्खो निधौ ललाटास्थि कम्बौ न स्त्री" इत्यमरः। अतएव रजनिकरबिम्बं चन्द्रमण्डलं चुम्बति स्पृशतीति तत् तादृशं यत् संवर्त्तकाम्बुदवृन्दं प्रलयकालीनमेघसमूहस्तद्विडम्बयति अनुकरोतीति तेन। शश-लाञ्छितचन्द्रमण्डलेन सह तादृशशङ्खस्य तन्मेघसमूहेन च सह हस्तिनः सादृश्यं बोध्यं। अतएवात्र आर्थो-पमा पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(भ) कर्णेति। कर्णान्तलम्बिना काञ्चनमयेन अङ्कुशेन कृतकर्णपूरमिव विहितकर्णभूषणमिव मुखं वदनं उद्वहता धारयता। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

গন্ধমাদন নয়নের তৃতীয়ভাগ ঈষৎ মুদ্রিত করিয়া, বাম দন্তের উপরিভাগে শুণ্ড সংস্থাপিত করিয়া এবং বিস্তৃত কর্ণযুগল নিশ্চল রাখিয়া সেই মৃদঙ্গের শব্দ শুনিতেছিল। (প) গন্ধমাদনের পৃষ্ঠের উপরে একখানা বিচিত্র কম্বল আস্তৃত ছিল, তাহা দুই পার্শ্বে ঝুলিয়া পড়িয়াছিল; সুতরাং ধাতুরঞ্জিত পক্ষযুগল-প্রসারণকারী বিন্ধ্যপর্ব্বতের ন্যায় গন্ধমাদনকে দেখা যাইতেছিল। (ফ) গন্ধমাদন, মাহুতের গান শুনিয়া আনন্দবশতঃ গম্ভীর গর্জ্জন করিতেছিল। (ব) মদজলে গন্ধমাদনের ললাটের হাড়খানা বিচিত্র হইয়াছিল, তাহাতে কর্ণযুগল শোভা পাইতেছিল, সুতরাং গন্ধমাদন, চন্দ্রমণ্ডলসংস্পর্শী প্রলয়কালীয় মেঘসমূহের অনুকরণ করিতেছিল। (ভ) সুবর্ণময় একখানা অঙ্কুশ তাহার কর্ণে ঝুলান ছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন তাঁহার কর্ণে অলঙ্কার দেওয়া হইয়াছে, এই জাতীয় মুখভাগ সে বহন করিতেছিল। (ম) কতক-

---

(१) प्रलम्बित...। (२)...विचित्रित...। (३)...विम्बचुम्बितावर्त्तकाम्बुद...। (४) कर्णावलम्बिना।

मदजलमलिनेन द्वितीयेनेव कर्णचामरेण कपोलतलदोलायमानेन मधुकरकुलेनालङ्क्रियमाणेन, (म) अत्युदग्रतया पूर्वकायस्य अतिवामनतया च जघनभागस्य पातालादिव (१) उत्तिष्ठता, (य) निशासमयेनेव परिस्फुरत्सार्द्धचन्द्रनक्षत्रमालेन, (र) शरदारम्भेणेव प्रकटितारुण-चारु-पुष्करेण, (ल) वामनरूपेणेव कृतत्रिपदीविलासेन, (व) स्फटिकगिरितटेनेव लग्न-सिंहमुखप्रति-

(म) मदेति। मदजलेन तत्संसक्ततयेत्यर्थः मलिनं गाढ़कृष्णं तेन, तथा द्वितीयेन अपरेण कर्णचामरेणेव स्थितेन, कपोलतले गण्डयोरुपरि दोलायमानेन चञ्चलीभूतेन मधुकरकुलेन भ्रमरगणेन, अलङ्क्रियमाणो भूष्यमाणस्तेन। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अत्युदग्रेति। पूर्वकायस्य शरीरपूर्वार्द्धस्य अत्युदग्रतया नितान्तोन्नततया, तथा जघनभागस्य शरीरपश्चाद्भागस्य च अतिवामनतया नितान्तखर्वतया हेतुना, पातालादुत्तिष्ठतेव, अन्यस्यापि निम्नादुच्चदेशोत्थानवेलायामीदृशावस्थादर्शनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) निशेति। निशासमयेन रात्रिकालेनेव, परिस्फुरन्ती सर्वतो दीप्यमाना सार्द्धचन्द्रा अर्द्धचन्द्राकारललाटाभरणसहिता नक्षत्रमाला सप्तविंशतिसंख्यकमुक्ताग्रथितमाल्यं यस्य तेन। "सैव नक्षत्रमाला स्यात् सप्तविंशतिमौक्तिकै"रित्यमरः। पक्षे परिस्फुरन्ती सार्द्धचन्द्रा अष्टमीचन्द्रसहिता नक्षत्रमाला तारकाश्रेणिर्यस्मिन् तेन। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ल) शरदिति। शरदारम्भेणेव, प्रकटितं प्रकाशितं अरुणं रक्तवर्णं चारु सुन्दरञ्च पुष्करं शुण्डाग्रं यस्य तेन। पक्षे प्रकटितानि प्रस्फुटितानि अरुणानि चारूणि च पुष्कराणि पद्मानि यस्मिन् तेन। पूर्णोपमा। "पुष्करं पङ्कजे व्योम्नि पयःकरिकराग्रयोः।" इत्यादि विश्वः।

(व) वामनेति। वामनरूपेण हरेर्वामनावतारेणेव, कृतः त्रिपद्या पादबन्धनशृङ्खलया विलासः क्रीड़ा येन तेन। "त्रिपदी पादबन्धन"मिति यादवः। "त्रिपदीच्छेदिनामपि" इति कालिदासप्रयोगश्च। पक्षे त्रयाणां पदानां समाहार इति त्रिपदी, कृतस्त्रिपद्या स्वर्गमर्त्त्यपातालेषु पादत्रयविन्यासेन विलासो लीला येन तेन। पूर्णोपमा।

গুলি ভ্রমর, মদজলে আরও মলিন হইয়া গণ্ডের উপরে দ্বিতীয় কর্ণচামরের ন্যায় ভ্রমণ করিতে করিতে গন্ধমাদনকে শোভিত করিতেছিল। (য) তাহার দেহের সম্মুখভাগ অত্যন্ত উচ্চ এবং পশ্চাদ্ভাগ অত্যন্ত খর্ব্ব ছিল বলিয়া সে যেন পাতাল হইতে উঠিতেছিল বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল। (র) রাত্রিতে যেমন অর্দ্ধচন্দ্রের সহিত নক্ষত্রশ্রেণী দীপ্তি পাইতে থাকে, গন্ধমাদনেরও তেমন অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি ললাটাভরণের সহিত মুক্তার মালা দীপ্তি পাইতেছিল। (ল) শরৎকালের প্রারম্ভে যেমন রক্তবর্ণ ও সুন্দর পদ্ম প্রকাশিত হয়, গন্ধমাদনেরও তেমন রক্তবর্ণ ও সুন্দর শুণ্ডাগ্র প্রকাশ পাইতেছিল। (ব) বামনরূপী নারায়ণ যেমন বলির যজ্ঞে স্বর্গ, মর্ত্ত্য ও পাতালে স্বকীয় চরণত্রয়ের বিন্যাসদ্বারা লীলাখেলা করিয়াছিলেন, গন্ধমাদনও

(१) पातालतलादिव।

मेन, (श) प्रसाधितेनेव * आलोल-(१) कर्णपल्लवाहतमुखेन, (ष) गन्धमादन-नाम्ना गन्धहस्तिना सनाथीकृतैकदेशम्, (स) उज्ज्वल-पट्टकम्बल-पट-(२) प्रावारित-(३) पृष्ठैश्च रसित-मधुर-घण्टिका-रव-मुखर-कण्ठैः, मञ्जिष्ठा-लोहित-स्कन्ध-केसर-बालैः, (४) निहत-वन-गज-रुधिर-पाटल-सटैरिव केसरिभिः, पुरो-निहित-यवस-राशि-शिखरोपविष्ट-मन्दुरापालैः, आसन्न-मङ्गल-गीत-ध्वनि-दत्त-

---

(श) स्फटिकेति। स्फटिकगिरितटेनेव स्फटिकमयपर्वतभित्त्येव, लग्ना दन्तोपरि संसक्ता सिंहमुखा केशरिवदनाकारायदेशा प्रतिमा दन्तबन्धनशृङ्खला यस्य तेन। "गजानां दन्तबन्धेऽपि प्रतिमाऽनुक्तलावपि।" इति विकाण्डशेषः। पक्षे लग्ना आभिमुख्येन सिंहस्यावस्थानात् पतिता सिंहमुखस्य प्रतिमा प्रतिबिम्बं यस्मिन् तेन। पूर्णोपमा।

(ष) प्रसेति। प्रसाधितेनेव नानाविधालङ्कारैरलङ्कृतेन जनेनेव। आलोलाभ्यां अतीवचञ्चलाभ्यां कर्णपल्लवाभ्यां विस्तृतकर्णाभ्यां आहतं भ्रमरापसारणाय ताड़ितं मुखं येन तेन। पक्षे आलोलाभ्यां कर्णयोः पल्लवाभ्यां आहतं मुखं यस्य तेन। पूर्णोपमा।

(स) गन्धेति। गन्धमादननाम्ना गन्धहस्तिना पूर्वोक्तलक्षणेन गन्धगजेन सनाथीकृतः स्वसंयुक्तीकृतः अधिष्ठित इत्यर्थः, एकदेशो यस्य तत्, राजकुलमित्यस्य विशेषणमेतत्।

(ह) उज्ज्वलेति। इतस्तृतीयान्तपदानि तुरङ्गमैरिति, वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। उज्ज्वलैर्दीप्तिमद्भिः पट्टकम्बलैः क्रमिकोषोत्थसूत्रनिर्म्मितकम्बलैः पटु सम्यक् प्रावारितानि आच्छादितानि पृष्ठानि येषां तैः। रसितानां ग्रीवाचालनेन शब्दितानां मधुराणां मनोज्ञानां घण्टिकानां क्षुद्रघण्टानां रवैः शब्दैः मुखरा शब्दायमानाः कण्ठा गला येषां तैः। मञ्जिष्ठावत् रञ्जनद्रव्यविशेषवत् लोहिता रक्तवर्णाः स्कन्धेषु केसरबालाः केसराख्यलोमानि तेषां तैः, अतएव निहतानां स्वयं मारितानां वनगजानां रुधिरैः पाटलाः श्वेतरक्ताः सटा जटा येषां तैः केसरिभिः सिंहैरिव स्थितैः! अत्रोपमालङ्कारः। पुरोनिहितानां अग्रतः स्थापितानां यवस-राशीनां घासपुञ्जानां शिखरेषु उपरिभागेषु उपविष्टा मन्दुरापाला वाजिशालारक्षका येषां तैः। "वाजिशाला

তেমন পাদবন্ধন শৃঙ্খলদ্বারা খেলা করিতেছিল। (শ) স্ফটিকময় পর্ব্বতভিত্তিতে যেমন সিংহ-মুখের প্রতিবিম্ব পতিত হয়, গন্ধমাদনেরও তেমন দন্তের উপরে একছড়া সিংহ-মুখের ন্যায় অগ্রদেশসমন্বিত শৃঙ্খল লগ্ন ছিল। (ষ) নানা অলঙ্কারে অলঙ্কৃত ব্যক্তির মুখ যেমন চঞ্চল কর্ণপল্লবদ্বারা আহত হইতে থাকে, গন্ধমাদনের মুখও তেমন বিস্তৃত কর্ণযুগলদ্বারা আহত হইতেছিল। (স) এইরূপে গন্ধমাদন নামক গন্ধহস্তী কর্ত্তৃক রাজবাটীর একদেশ অধিষ্ঠিত হইয়াছিল। (হ) এবং সেই রাজবাটী অশ্বশালাস্থিত বহুতর অশ্বে শোভা পাইতেছিল; উজ্জ্বল রেসমী কম্বলে তাহাদের পৃষ্ঠদেশ সম্পূর্ণ আচ্ছাদিত ছিল; শব্দায়মান মনোহর ক্ষুদ্রঘণ্টার রবে তাহাদের কণ্ঠদেশ শব্দিত হইতেছিল; তাহাদের স্কন্ধের উপরে মঞ্জিষ্ঠার ন্যায় রক্তবর্ণ কেসর (লম্বা লোম) ছিল, সুতরাং নিহত বন্য হস্তীর রক্তে রক্তবর্ণ-জটা-সমন্বিত সিংহের ন্যায় সেই অশ্বগুলিকে দেখা যাইতেছিল; তাহাদের সম্মুখ-স্থাপিত ঘাসরাশির উপরে অশ্বশালার

---

* प्रसाधितेन। (१) लीन...। (२)...पट...। (३)...प्रावृत, प्रावरित...। (४)...बालपल्लवैः।

कर्णैः, अन्तःकपोल-धृत-मधुर-सरस-(१) लुलित-लाज-(२) कवलैः, भूपालवल्लभै-र्मन्दुरागतैस्तुरङ्गमैरुद्भासितम्, (ङ) अधिकरणमण्डपगतैश्चार्य्यवेशैरत्युच्चवेत्रा-सनोपविष्टैर्धर्म्ममयैरिव धर्म्माधिकारिभिर्महापुरुषैरधिष्ठितम्, (च) अधिगत-सकल-ग्राम-नगर-(३) नामभिरेकभवनमिव जगदखिलमालोकयद्भिरालिखित-सकल-भुवन-व्यापारतया धर्म्मराजनगर-व्यतिकरमिव दर्शयद्भिरधिकरण-(४) लेखकैरालिख्यमान-शासन-सहस्रम्, (छ) अभ्यन्तरावस्थित-नरपति-निर्गम-(५)

तु मन्दुरा" इत्यमरः। आसन्नेषु समीपवर्त्तिषु मङ्गलगीतध्वनिषु दत्तौ कर्णौ यैस्तैः, तेषामपि गानश्रवणोत्-सुकत्वादिति भावः। अन्तःकपोलेषु गण्डाभ्यन्तरेषु धृताः मधुराः सुस्वादाः सरसा गुडेनार्द्राः अतएव लुलिता उभयतो गलद्गुडाः लाजकवला धानाग्रासा यैस्तैः। भूपालवल्लभै राज्ञः प्रियैः, मन्दुरागतैर्वाजि-शालास्थितैः तुरङ्गमैर्घोटकैः उद्भासितं शोभितं। इदं राजकुलमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्।

(च) अधीति। अधिक्रियन्ते जना अस्मिन्नित्यधिकरणं व्यवहारदर्शनसभा, तन्मण्डपगतैः, आर्य्य-वेशैः सभ्यजनोचितवेशैः सुपरिष्कृतपरिच्छदैरित्यर्थः, अत्युच्चेषु वेत्रासनेषु उपविष्टैः, धर्म्ममयैर्धर्म्मनिष्पन्नैरिव, धर्म्माधिकारिभिः व्यवहारदर्शिभिः प्राड्विवाकैः महापुरुषैः शिक्षान्यायपरायणतादिसद्गुणयुक्तैर्जनैः अधिष्ठित-माश्रितं राजकुलम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) अधीति। अधिगतानि ज्ञातानि सकलानां ग्रामनगराणां नामानि यैस्तैः। ग्रामलक्षणमाह स्म रघुनाथः—"तथा शूद्रजनप्राया सुसमृद्धकृषीवला। क्षेत्रोपयोगि-भूमध्ये वसतिर्ग्रामसंज्ञिका।" नगर-लक्षणमाह मार्कण्डेयपुराणम्—"देवतायतनैश्चित्रैः प्रासादापणवेश्मभिः। नगरं दर्शयेद्विद्वान् राजमार्गैश्च शोभनैः।" एकभवनमिव एकगृहमिव अखिलं जगदालोकयद्भिः चिराय पर्य्यालोचनावशात् एकगृहस्येव समग्रजगतः स्थानजनवृत्तान्तं जानद्भिरित्यर्थः। अत्रोपमालङ्कारः। आलिखिताः शासनसौकर्य्याय पत्रेषु लिखिताः, सकलभुवनस्य व्यापारा राजकार्य्यप्रयोजनीयस्थानजनादिघटनावली यैस्तेषां भावस्तया हेतुना, धर्म्मराज-नगरस्य यमपुरस्य व्यतिकरं सम्बन्धं दर्शयद्भिरिव स्थितैः, यमपुरेऽपि चित्रगुप्तादिभिः सकलभुवनव्यापारलिखना-

---

রক্ষকগণ বসিয়াছিল ; সেই অশ্বগুলি নিকটবর্ত্তী মঙ্গল-গীতের শব্দের দিকে কর্ণ অর্পণ করিয়া-ছিল ; গালের ভিতরে গুড়মিশ্রিত সুস্বাদু খই'র গ্রাস লইয়াছিল, সুতরাং গালের দুই দিক্ দিয়া তাহার রস বাহিয়া পড়িতেছিল ; এবং সেই অশ্বগুলি রাজার প্রিয় ছিল। (ঙ) বিচারালয়ে সাক্ষাৎ ধর্ম্মময়ের ন্যায় মহাগুণবান্ বিচারকগণ সভ্যজনোচিত বেশভূষায় সজ্জিত হইয়া অত্যুচ্চ বেত্রাসনে উপবেশন করিয়া রহিয়াছিলেন। (চ) বিচারালয়ের লেখকগণ বিচারকদিগের আদেশসমূহ লিখিতেছিল, তাহারা সকল গ্রাম ও নগরের নাম জানিত, এবং সর্ব্বদা আলোচনা করায় একখানি ঘরের মত সমগ্র জগৎ দেখিতেছিল আর সমস্ত জগতের ঘটনা লেখায় সেই রাজবাটীর সহিত যম-পুরীর কোন সম্বন্ধ আছে এইরূপ যেন দেখাইতেছিল। (ছ) বাটীর ভিতরে

---

(१)...मधु-रस-लव-लुलित...। (२)...जम्बाल...।

३)...ग्रामकर्वटनगर सकलनगरखेटखर्वट...। (४) अधिकार...। (५)...निर्गमन...।

प्रतीक्षण-परेण च स्थान-स्थानेषु (१) बद्धमण्डलेन, कनकमयार्द्धचन्द्र-तारागण-शबलैः (२) चर्म्मफलकैर्निशासमयमिव दर्शयता, स्फुरित-निशित-करवाल-कर-प्ररोह-करालितातपेन, एक-श्रवणपुट-घटित-धवलदन्तपत्त्रेण (३) ऊर्द्ध-बद्ध-मौलि-कलापेन, धवल-चन्दन-स्थासक-खचित-भुजोरुदण्डेन, बद्धासिधेनुकेन अन्ध्र-द्रविड़-सिंहलप्रायेण सेवकजनेन, (ख) आस्थानमण्डपगतेन च यथोचितासनोप-

दिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अधिकरणस्य विचारालयस्य लेखकैर्जनैः, आलिख्यमानं पत्रेषु लिप्यमानं शासनसहस्रं राज्ञः प्राड़्विवाकानाञ्च आदेशसमूहो यस्मिन् तत्, राजकुलम्।

(ख) अभ्यन्तरेति। इतस्तृतीयान्तपदानि सेवकजनेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अभ्यन्तरे वाटीमध्ये अवस्थिता महाराजतारापीड़समीपे स्वस्वप्रयोजनसाधनाय विद्यमानाः, ये नरपतयः स्वे स्वे राजानस्तेषां प्रतीक्षणपरेण वहिरागमनप्रतीक्षापरायणेन, आगतेषु तेषु तैः सह गमनाभिप्रायादिति भावः। बद्धं कृतं मण्डलं वर्त्तुलाकारेणावस्थानं येन तेन। कनकमयाः स्वर्णनिर्म्मिता ये अर्द्धचन्द्रा अर्द्धचन्द्राकारचिह्नानि तारागणा नक्षत्राकारचिह्नसमूहाश्च तैः शबलानि विचित्राणि तैः, चर्म्मफलकैः करणैः निशासमयं रात्रिकालं दर्शयतेव सता, रात्रावप्यर्द्धचन्द्रतारागणोदयादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। स्फुरितानां देदीप्यमानानां निशितानां तीक्ष्णानां करवालानां तरवारीणां करप्ररोहैः किरणाङ्कुरैः करालितो भीषणीकृत आतपः सूर्य्यालोको येन तेन। एकस्मिन् श्रवणपुटे कर्णपुटे घटितं योजितं दन्तपत्रं हस्तिदन्तनिर्म्मितपत्राकाराभरणं येन तेन। देशाचारात्तेषामेककर्णे दन्तपत्रधारणमिति बोध्यम्। ऊर्द्ध्वं बद्धो मौलिकलापः संसृष्टकेशपाशो येन तेन। धवलैश्चन्दनस्थासकैश्चन्दनचर्च्चाभिः खचितौ चिह्नितौ भुजौ ऊरुदण्डौ च यस्य तेन। ऊरौ चन्दनचर्च्चापि देशाचारात्। बद्धा कटीदेशेषु संयता असिधेनुकाः छुरिका येन तेन। "छुरिकाचासिधेनुका" इत्यमरः। अन्ध्रद्रविड़सिंहलास्तत्तद्देशीयाः प्रायाः बहुला यस्मिन् तेन। सेवकजनेन भिन्नभिन्नदेशीयराजगणशरीररक्षिलोकेन। अधिष्ठितमिति वक्ष्यमाणक्रियापदस्य कर्त्तृपदमेकमेतत्।

(ग) आस्थानेति। इतस्तृतीयान्तपदानि सामन्तलोकेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। आस्थानमण्डप-

মহারাজ তারাপীড়ের নিকটে অবস্থিত আপন আপন রাজার নির্গমনের প্রতীক্ষায় ভিন্ন ভিন্ন দেশীয় রাজগণের শরীররক্ষী সৈন্যগণ স্থানে স্থানে মণ্ডলাকারে অবস্থান করিতেছিল; তাহারা, অর্দ্ধচন্দ্রাকার ও নক্ষত্রাকার সুবর্ণময় চিহ্নসমূহে বিচিত্র ঢাল ধারণ করিয়া সেই সময়কে যেন রাত্রি বলিয়া দেখাইতেছিল, দেদীপ্যমান তীক্ষ্ণ তরবারির কিরণে রৌদ্রকে ভয়ঙ্কর করিয়াছিল, এক কর্ণে হস্তিদন্তনির্ম্মিত পত্রাকৃতি অলঙ্কার ধারণ করিয়াছিল, চুলগুলি মাথার উপরে বাঁধিয়াছিল, শ্বেতচন্দনের লেপে বাহুযুগল ও উরুযুগল চিহ্নিত করিয়াছিল এবং কটিদেশে এক একখানা ছুরী বাঁধিয়াছিল আর তাহাদের মধ্যে অধিকসংখ্যকই অন্ধ্রদেশীয়, দ্রবিড়দেশীয় ও সিংহলদেশীয় লোক ছিল। (গ) এবং সভামণ্ডপে বহুসহস্রসংখ্যক অভিষিক্ত সামন্তরাজগণ

(१) स्थाने स्थाने। (२)...शतशबलैः। (३) घटितानेकदन्तपत्त्रेण।

विष्टेन प्रसारयता दुरोदरक्रीड़ाम्, अभ्यस्यताऽष्टापदव्यापारम्, आस्फालयता परिवादिनीम्, आलिखता चित्रफलके भूमिपालप्रतिविम्बम्, आवध्नता काव्य-गोष्ठीम्, आतन्वता परिहासकथाम्, विन्दता विन्दुमतीम्, चिन्तयता प्रहेलिकाम्, भावयता नरपतिकृतकाव्य-सुभाषितानि, पठता द्विपदीम्, (१) गृह्णता कवि-गुणान्, उत्किरता (२) पत्रभङ्गीन्, आलपता वारविलासिनीजनम्, आकर्णयता वैतालिकगीतम्, (३) अनेकसहस्रसंख्येन, धवलोष्णीषपटाश्लिष्टविकट-किरीट-सङ्कट-शिरसा, सनिर्झर-शिखर-लग्न-(४) बालातपमण्डलेनेव कुलपर्वतचक्र-

गतेन सभागृहस्थितेन। दुरोदरक्रीड़ां द्यूतखेलाकौतं प्रसारयता विस्तारयता। अष्टापदव्यापारं शारिफलनिक्षेप-कार्य्यं अभ्यस्यता पौनःपुन्येन कुर्वता। "अष्टापदं शारिफल"मित्यमरः। परिवादिनीं सप्ततन्त्रीविशिष्टां वीणां आस्फालयता वादनेन स्पन्दयता। भूमिपालस्य राज्ञस्तारापीड़स्य प्रतिविम्बं, आलिखता भक्तिद्योतनार्थं चित्रयता। काव्यगोष्ठीं काव्यालापं आवध्नता कुर्वता। "गोष्ठी सभायां संलापे" इति विश्वः। आतन्वता बाहुल्येन कुर्वता। विन्दुमतीं प्रागुक्तलक्षणां (२४ पृष्ठास्थटीकायां) विन्दता लभमानेन अपरेण पृच्छ्यमानां शृण्वतेत्यर्थः। प्रहेलिकामप्युक्तलक्षणाम्। (२४ पृष्ठास्थटीकायां)। नरपतिना तारापीड़ेन कृतानि यानि काव्यरूपाणि सुभाषितानि सुन्दरवाक्यानि तानि भावयता मनोहरतया चिन्तयता। द्विपदीं पदद्वयात्मिकां गाथाम्। कविगुणान् तत्काव्यगतप्रसादमाधुर्य्यभावालङ्कारादिधर्म्मान् गृह्णता श्रुत्वैव बुध्यमानेन। पत्रभङ्गान् वाराङ्गनानां स्तनकपोलादौ तिलकविशेषान् उत्किरता ददता। वैतालिकानां वन्दिनां गीतं स्तुतिपाठं। अनेकानि सहस्राणि संख्या यस्य तेन। धवलैरुष्णीषपटैः आश्लिष्टानि सम्बद्धानि विकटानि महान्ति यानि किरीटानि तैः सङ्कटानि व्याप्तानि शिरांसि यस्य तेन, अतएव निर्झरैः प्रस्रवणैः सहेति सनिर्झराणि यानि शिखराणि शृङ्गानि तेषु लग्नं बालातपमण्डलं नवीनरविकिरणसमूहो यस्य तेन तादृशेन, कुलपर्वतानां महेन्द्र-मलयादीनां चक्रवालेन मण्डलेनेव स्थितेन। अत्र निर्झरैः सह धवलोष्णीषपटानां, बालातपैः किरीटानां

যথোপযুক্ত আসনে উপবেশন করিয়াছিলেন; তাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ পাশার কোঠ পাতিতেছিলেন, কেহ কেহ বারংবার পাশার ছক্ নিক্ষেপ করিতেছিলেন, কেহ বীণা বাজাইতে-ছিলেন, কেহ চিত্রফলকে মহারাজ তারাপীড়ের প্রতিমূর্ত্তি চিত্রিত করিতেছিলেন, কেহ কেহ কাব্যালাপ করিতেছিলেন, কেহ কেহ পরিহাস করিতেছিলেন, কেহ বিন্দুমতী (কাব্যবিশেষ) শুনিতেছিলেন, কেহ প্রহেলিকার চিন্তা করিতেছিলেন, কেহ মহারাজ তারাপীড়-কৃত কাব্যময় মনোহর বাক্যের ভাবনা করিতেছিলেন, কেহ দ্বিপদিকা পাঠ করিতেছিলেন, কেহ কবির গুণ গ্রহণ করিতেছিলেন, কেহ বারবনিতাদিগের কণ্ঠ-কপোলে তিলক দিয়া দিতেছিলেন, কেহ বারাঙ্গনাগণের সহিত আলাপ করিতেছিলেন এবং কেহ কেহ স্তুতিপাঠকদিগের গান শুনিতেছিলেন; তাঁহাদের মস্তক, শ্বেতবর্ণ উষ্ণীষ সংশ্লিষ্ট বৃহৎ বৃহৎ কিরীটে আবৃত ছিল; সুতরাং নির্ঝরজল-সংযুক্ত শৃঙ্গের উপরে নবীন সূর্য্যালোক পতিত হইলে কুলপর্ব্বতগণের ন্যায়

(१) द्विपदीः। (२) उत्कीर्य्यता। (३)...गीतिम्। (४)...आलग्न...

वालेन, मूर्द्धाभिषिक्तेन, सामन्तलोकेनाधिष्ठितम्, (ग) आस्थानोत्थित-भूमिपाल-संवर्त्तितानाञ्च कुथानां रत्नासनानाञ्च राशिभिरनेकवर्णैरिन्द्रायुधपुञ्जैरिव विराजितसभा-पर्य्यन्तम्, (घ) अमल-मणि-भूमि-(१) संक्रान्त-मुख-निवह-प्रतिबिम्बतया विकच-कमलपुष्प-प्रकरमिव सम्पादयता, गति-वश-रणित-नूपुर-पारिहार्य्य-(२) रशना-स्वन-(३) मुखरेण, स्कन्धावसक्त-(४) कनकदण्डचामरेण, निर्गच्छता प्रविशता चानवरतं वारविलासिनीजनेनाकुलितम्, (ङ) एकदेश-निषस-चामीकर-शृङ्खला-संयत-श्वगणम्, (५) (च) इतस्ततः प्रचलित-परिचिता-

---

कुलपर्वतैश्च सामन्तानां सादृश्यमित्युपमालङ्कारः। मूर्द्धनि अभिषिक्तेन राज्याभिषिक्तेनेत्यर्थः, सामन्तलोकेन अधीनदेशस्थराजगणेन अधिष्ठितमाश्रितं। राजकुलमित्यस्य विशेषणमिदम्।

(घ) आस्थानेति। आस्थानात् सभातः उत्थितेषु उत्थाय चलितेषु भूमिपालेषु सदस्यनृपतिषु संवर्त्तितानां भृत्यैरुत्तोल्यैकत्र सङ्कोचितानां कुथानां विचित्रकम्बलानां रत्नासनानाञ्च अनेकवर्णैः राशिभिः, इन्द्रायुधपुञ्जैः इन्द्रधनुःपुञ्जैरिव स्थितैः, विराजितः शोभितः सभायाः पर्य्यन्तः प्रान्तभागो यस्मिन् तत्, राजकुलम्। अत्रेन्द्रायुधानां पुञ्जीभूतत्वासम्भावाज्जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) अमलेति। अमलासु मणिभूमिषु संक्रान्तानि सञ्चरितानि मुखनिवहस्य प्रतिबिम्बानि यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, विकचानां प्रस्फुटानां कमलपुष्पाणां पद्मानां प्रकरं समूहं सम्पादयता प्रवर्त्तयतेव, तन्मुखानां पद्मतुल्यत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। गतिवशेन गमनेन हेतुना रणितानां शब्दितानां नूपुराणां, पारिहार्य्याणां कङ्कणानां, रशनानां काञ्चीदाम्नाञ्च, स्वनैः शब्दैर्मुखरः शब्दायमानस्तेन। स्कन्धेषु अवसक्तानि लग्नानि कनकदण्डानि चामराणि यस्य तेन। तथा अनवरतं निर्गच्छता प्रविशता च वारविलासिनीजनेन वेश्यागणेन आकुलितं व्याप्तम्।

(च) एकेति। एकदेशे निषसः स्थितः चामीकरशृङ्खलाभिः स्वर्णशृङ्खलाभिः संयतानां बद्धानां शुनां कुक्कुराणां गणो यस्मिन् तत्, राजकुलम्।

তাঁহারা বিরাজ করিতেছিলেন। (ঘ) রাজগণ সভা হইতে উঠিয়া গেলে ভৃত্যগণ সভার বিচিত্র কম্বল ও রত্নময় আসনগুলি একদিকে একত্র করিয়া রাখিল, তাহাতে পুঞ্জীভূত ইন্দ্রধনু-সমূহের ন্যায় নানাবর্ণের সেই কম্বল ও রত্নাসনে সভার প্রান্তভাগ সুশোভিত হইয়াছিল। (ঙ) বারবনিতাগণ স্কন্ধে সুবর্ণদণ্ডের চামর লইয়া অনবরত প্রবেশ করিতেছিল এবং নির্গত হইতেছিল, তখন নির্ম্মল মণিময়ভূমিতে তাহাদের মুখের প্রতিবিম্ব পতিত হওয়ায় তাহারা যেন প্রস্ফুটিত পদ্মসমূহ জন্মাইতেছিল আর গমনবশতঃ তাহাদের নূপুর, কঙ্কণ ও চন্দ্রহারের শব্দে শরীরও শব্দিত হইতেছিল। (চ) একদিকে স্বর্ণশৃঙ্খলে বদ্ধ বহুতর কুকুর বসিয়াছিল।

---

(१) अमलभूमि...। (२)...परिहार्य्यै...। (३)...रव...। (४) स्कन्धसक्त...।
(५)...श्वगणम्।

मितकस्तूरिकाकुरङ्ग-परिमल-वासित-दिङ्मुखम्, (छ) अनेक-कुब्ज-किरात-वर्षवर-(१) वधिर-वामन-मूक-सङ्कुलम्, (ज) उपाहृत-किन्नरमिथुनम्, आनीत-वनमानुषम्, आबद्ध-मेष-कुक्कुट-कुरर-कपिञ्जल-लावक-वर्त्तिका-युद्धम्, उत्कूजित-चकोर-कादम्ब-हारीत-कोकिलम्, लालप्यमान-(२) शुकसारिकम्, (झ) इभ-पतिमद-परिमलामर्ष-(३) जृम्भितैश्च निष्कूजद्भिः शिखरिणां जीवितैरिव गिरि-गुहानिवासिभिर्गृहीतैः पञ्जरकेशरिभिरुद्भास्यमानम्, (ञ) उत्त्रास्यमानैः

(छ) इत इति। इतस्ततः प्रचलितानां, परिचितानां विश्वस्तचित्तानां, अमितानां असंख्यानां कस्तूरिकाकुरङ्गाणां कस्तूरीविशिष्टहरिणानां परिमलेन गात्रसौरभेण वासितानि आमोदितानि दिङ्मुखानि यस्य तत्, राजकुलनम्।

(ज) अनेकेति। अनेके ये कुब्जाः, किराताः कृशदेहाः "किरातो म्लेच्छभेदे स्यात्कुनिम्बेऽल्पतना-वपि।" इत्यादि मेदिनी। वर्षमन्तःपुरं इन्वन्तीति वर्षवराः क्लीबाः, "शण्ढो वर्षवरस्तुल्या" इत्यमरः। वधिराः, वामनाः खर्वदेहाः, मूका वाक्शक्तिहीनाश्च तैः सङ्कुलम् व्याप्तम्।

(झ) उपेति। उपाहृतानि संगृह्य आनीतानि किन्नरमिथुनानि तुरङ्गवदनदम्पत्यो यत्र तत्। आनीता वनमानुषा यत्र तत्। आबद्धानि आरब्धानि मेषैः कुक्कुटादिभिश्च पक्षिविशेषैर्युद्धानि यत्र तत्। उत्कूजिता उच्चैःस्वरेण शब्दायमानाः, चकोराः, कादम्बाः कलहंसाः, हारीताः पक्षिविशेषाः, कोकिलाश्च यत्र तत्। लालप्यमानाः पुनः पुनर्लपन्तः शुकसारिका यत्र तत्। राजकुलमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणान्येतानि।

(ञ) इभेति। इभपतीनां करीन्द्राणां मदपरिमलैर्दानजलसौरभैर्ये अमर्षाः क्रोधास्तैर्जृम्भिताः पञ्जरमध्येष्वेव घूर्णितास्तैः, निष्कूजद्भिर्गर्जद्भिः, कूजधातोः कोकिलादीनां कोमलशब्द एव ख्यातत्वेनात्र कर्कशशब्दे प्रयोगात् ख्यातविरुद्धतादोषः, स च गर्जद्भिरिति पाठेनैव समाधेयः। शिखरिणां पर्वतानां जीवितैरिव प्राणैरिव गुहावासकाले तदभ्यन्तरसञ्चरणादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। शिखरिणा-मित्यभिधाय पुनर्गिरिगुहानिवासिभिरिति गिरिपदाभिधानादत्र "उदन्वच्छिन्ना भूः स च पतिरपां योजनशतम्"

(ছ) বিশ্বস্তচিত্ত অসংখ্য কস্তূরী-মৃগ ইতস্ততঃ বিচরণ করিতেছিল, তাহাদের দেহের গন্ধে সকল দিক্ আমোদিত করিয়াছিল। (জ) বহুতর কুব্জ, কৃশদেহ, নপুংসক, বধির, বামন ও বোবা মানুষে সেই রাজবাটী ব্যাপ্ত ছিল। (ঝ) সেই বাটীতে বহুতর কিন্নরদম্পতী ও বনমানুষ আনা হইয়াছিল; স্থানে স্থানে মেড়া, বনকুকুড়া, বাজকুক্কুল, চাতক, লাওয়া (লাড়ুয়া) ও বাটভার পাখী লড়াই করিতেছিল; আবার কোন কোন স্থানে চকোর, বালিহাঁস, হরিতালিয়া ও কোকিল উচ্চৈঃস্বরে রব করিতেছিল এবং কোথাও শুক ও সারিকা-গণ অবিরত কথা বলিতেছিল। (ঞ) যে সকল সিংহ পূর্ব্বে গুহামধ্যে বাস করায় পর্ব্বতের জীবনের ন্যায় ছিল, সেই সিংহগুলিকে আনিয়া পিঞ্জরমধ্যে আবদ্ধ করা হইয়াছিল, তাহারা

(१)...वर्षधर, वर्वरवर्षवर...। (२) लालप्यमान...। (३) इभपतिपरिमलामर्ष...।

काञ्चन-भवन-प्रभा-जनित-दावानल-शङ्कै र्लोलतारकैर्भ्रमद्भिर्वन-(१) हरिण-कदम्बकैर्लोचनप्रभया शवलीकृतदिगन्तरम्, (ट) उद्दाम-केकारवानुमीयमान-मरकत-कुट्टिम-स्थित-शिखण्डि-मण्डलम्, (ठ) अतिशिशिर-चन्दन-विटपि-च्छाया-निषण्ण-निद्रायमाण-गृह-सारसम्, (ड) अन्तःपुरेण च बालिकाजन-प्रस्तुत-कन्दुक-पञ्चालिका-क्रीडेन, (ढ) अविरत-वाह्यमान-(२) दोला-(३) शिखर-क्वणित-

---

इति दर्पणोदाहृतवत् भग्नप्रक्रमतादोषः, तत्समाधानाय पुनः शिखरिपदोपादाने तु कथितपदतादोषः प्रसज्येत, सुतरां तद्गुहानिवासिभिरिति पाठेनासौ समाधेयः। गृहीतैर्गिरिगुहातो गृहीत्वा आनीतैः पञ्जरकेशरिभिः पञ्जरस्थसिंहैः, उद्भास्यमानं उत्कर्षेण शोभमानम्, राजकुलम्।

(ट) उद्भास्येति। काञ्चनभवनानां स्वर्णनिर्म्मितगृहाणां प्रभाभिर्जनिता दावानलशङ्का येषां तैः, अतएव उद्भास्यमानैस्तयैव शङ्कया विशेषेण वलीक्रियमाणैः, अतएव च लोलतारकैः भ्रद्भिर्भ्रमद्भिः, वन-हरिणानां कदम्बकैः समूहैः, लोचनप्रभया नयनदीप्त्या शवलीकृतानि विचित्रीकृतानि दिशामन्तराणि यस्य तत्, राजकुलं। तेषां नयनानामपि, विचित्रत्वादिति भावः। अत्र काञ्चनभवनप्रभासु हरिणानां दावानल-भ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारः, तथा लोचनप्रभया दिगन्तराणां शवलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्ति-श्चानयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ठ) उद्दामेति। उद्दामैर्विशालैः केकारवैः अनुमीयमानं मरकतकुट्टिमेषु स्थितं शिखण्डिमण्डलं मयूरसमूहो यस्मिन् तत्। मरकतबद्धभूमीनां मयूराणाञ्च तुल्यवर्णतया तत्रस्थितानां मयूराणां प्रत्यक्षेणानु-पलम्भात् केवलकेकारवैरेवानुमानमिति भावः। अतएव सामान्यालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः।

(ड) अतीति। अतिशिशिरासु नितान्तशीतलासु चन्दनविटपिनां चन्दनवृक्षाणां छायासु निषण्णा अवस्थिताः सन्तो निद्रायमाणाः गृहसारसा गृहपालितसारसपक्षिणो यत्र तत्।

(ढ) अन्तरिति। अपि चेति चार्थः। अन्तःपुरेणेति समुपेताभ्यन्तरमिति वक्ष्यमाणपदान्तर्गतायाः समुपेतेतिक्रियायाः कर्त्तृपदं, तथात्र तृतीयैकवचनान्तपदानि अन्तःपुरेणेत्यस्य विशेषणानि। बालिकाजनैः प्रस्तुता आरब्धा कन्दुकैर्गेण्डुकैः पञ्चालिकाभिर्वस्त्रनिर्म्मितपुत्तलिकाभिश्च क्रीडा खेला यस्मिन् तेन। "पञ्चालिका स्त्रियां वस्त्रपुत्रिकागीतिभेदयोः।" इति मेदिनी।

हस्तिगণের মদজলের গন্ধ পাইয়া পিঞ্জরমধ্যে ঘুরিতেছিল এবং গর্জ্জন করিতেছিল। (ট) বন্য হরিণগণ, স্বর্ণময় গৃহের প্রভাকে দাবানল মনে করিয়া ভীত হইয়া চঞ্চলনয়নে ইতস্ততঃ বিচরণ করতঃ নয়নের দীপ্তিতে বহু স্থান বিচিত্র করিয়াছিল। (ঠ) মরকতমণিময়-ভূমি-স্থিত ময়ূরগণকে কেবল বৃহৎ কেকারবে অনুমান করা হইতেছিল। (ড) অত্যন্ত শীতল চন্দনতরুর ছায়াতে থাকিয়া গৃহপালিত সারসপক্ষিগণ নিদ্রা যাইতেছিল। (ঢ) সেই বাটীর ভিতরে অন্তঃপুর সংলগ্ন ছিল; সেখানে বালিকারা গেড়ুয়া ও কাপড়ের পুতুল দিয়া খেলা

---

(१) भवन...। (२)—संवाह्यमान...। (३)...तोली...।

घण्टा-टङ्कार-पूरिताशामुखेन, (ण) भुजग-निर्म्मोक-शङ्कित-मयूर-क्रियमाण-हारेण, (त) सौध-शिखरावतीर्ण-प्रचलित-पारावत-कुलतया स्थलोत्पलिनीवन-शोभितेनेव, (१) (थ) अन्तः-पुरिकाजन-प्रस्तुत-नरपति-चरित-विडम्बन-क्रीड़ेन, (द) अश्व-मन्दुरा-परिभ्रष्टागतैरवलुप्त-भवन-दाड़िमीफलैराखण्डिताङ्गन-सहकार-पल्लवैरभिभूत-कुब्ज-वामन-किरात-करतलाच्छिन्नानि भूषणानि विकिरद्भिः कपिभिराकुलीकृतेन, (२) (ध) शुक-सारिका-प्रकाशित-सुरत-विस्रम्भालाप-

(ण) अविरतेति। अविरतं वाह्यमानानां दोलनसुखानुभवाय युवतिभिरारुह्य चाल्यमानानां दोलानां दोलनयन्त्राणां शिखरेषु उपरिभागेषु कषितानां दोलनवेगेन शब्दितानां घण्टानां टङ्कारैः 'टं' 'टं' इति शब्दैः पूरितानि आशामुखानि दिङ्मुखानि यत्र तेन।

(त) भुजगेति। भुजगनिर्म्मोकस्य सर्पकञ्चुकस्य शङ्कितेन सञ्जातशङ्केन हारमवलोक्य सर्पकञ्चुकोऽयमिति भ्रान्तिमतेत्यर्थः मयूरेण क्रियमाणो हारी मुक्तामाला यत्र तेन। अत्र हारे मयूरस्य सर्पकञ्चुकभ्रमाद् भ्रान्तिमानलङ्कारः।

(थ) सौधेति। सौधशिखरादट्टालिकोपरिभागादवतीर्णं सत् प्रचलितं पारावतकुलं कपोतसमूहो यस्मिन् तस्य भावस्तया हेतुना, स्थलोत्पलिनीनां जलहीनस्थानगतसपत्रपद्मलतानां वनेन समूहेन शोभितं तेनेव, तेषां कपोतानां पद्मपत्रवत् प्रतीयमानत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(द) अन्तरिति। अन्तःपुरिकाजनैः अन्तःपुरस्थस्त्रीलोकैः प्रस्तुता आरब्धा नरपते राज्ञस्तारापीडस्य यच्चरितं वेशविन्यासव्यवहारदर्शनादिव्यापारस्तस्य विडम्बनमनुकरणमेव क्रीड़ा यत्र तेन।

(ध) अश्वेति। अश्वमन्दुराया वाजिशालातः परिभ्रष्टाः सन्त आगतास्तैः। "अश्वानां दृष्टिदोषबाधनार्थमश्वशालायां कपयः स्थाप्यन्त इति राज्ञामाचार" इति भानुचन्द्रः। अत्र मन्दुरापदेनैव वाजिशालाबोधनेऽपि पुनरश्वपदोपादानेनाधिकपदत्वदोषः, स तु अश्वपदपरिहारेणैव समाधेयः। अवलुप्तानि छिन्नानि भवनदाड़िमीफलानि गृहाङ्गनगतदाड़िम्बफलानि यैस्तैः। आखण्डितानि छिन्नानि अङ्गनसहकाराणां चत्वरस्थितास्रवृक्षाणां पल्लवानि यैस्तैः। अभिभूतानां तैरेव कपिभिराक्रम्य विजितानां कुब्जवामनकिरातानां कर-

आরম্ভ করিয়াছিল ; (ণ) যুবতিগণ দোলায় উঠিয়া অবিশ্রান্ত দুলিতেছিল তাহাতে দোলার উপরের ঘণ্টাগুলির 'টং টং' শব্দে সকল দিক্ পরিপূর্ণ হইতেছিল। (ত) কোন ময়ূর সাপের খোলস মনে করিয়া এক ছড়া হার লইয়া যাইতেছিল। (থ) কপোতগণ অট্টালিকার উপর হইতে ভূতলে পতিত হইয়া বিচরণ করিতে থাকায় বোধ হইতেছিল যেন সেই স্থানটি স্থলস্থিত পদ্মপত্রসমূহে শোভিত হইয়াছে। (দ) অন্তঃপুরের রমণীগণ মহারাজ তারাপীড়ের চরিত্রের অনুকরণরূপ খেলা করিতেছিল। (ধ) কতকগুলি বানর অশ্বশালা হইতে বাহির হইয়া আসিয়া, উঠানের দাড়িমফল পাড়িয়া, আমের পল্লব ছিঁড়িয়া, কুব্জ, বামনবীর ও কৃশদেহ লোকগুলিকে পরাস্ত করিয়া তাহাদের হাত হইতে বলপূর্ব্বক অলঙ্কার

(१) स्थलोत्पलिनीवनेनेव। (२)...आकुलीभूतेन।

लज्जितावरोधजनेन, (न) प्रसाद-सोपान-समारोहण-चलितैरबलानां चरणावसक्तैर्मणिमयैः पदे पदे (१) रणद्भिस्तुलाकोटि-वलयैर्द्विगुणीकृत-कूजित-रुताभिः (२) भवनकलहंसमालाभिर्धवलिताङ्गनेन, (३) (प) धृत-(४) धौत-धवल-दुकूलोत्तरीयैः कलधौत-दण्डावलम्बिभिः पलित-पाण्डुर-(५) मौलिभिराचारमयैरिव (६) विनय-मयैरिव (७) मर्य्यादामयैरिव मङ्गलमयैरिव गम्भीराकृतिभिः स्वभावधीरैः कञ्चुकिभिर्वयःपरिणामेऽपि जरत्सिंहैरिवापरित्यक्तसत्त्वावष्टम्भैः कञ्चुकिभिरधिष्ठितेन समुपेताभ्यन्तरम्, (फ) जलधर-(८) सनाथमिव कृष्णागुरुधूम-

---

तलेभ्य आच्छिन्नानि बलादाकृष्य नीतानि भूषणानि वलयादीनि विकिरद्भिरितस्ततो विक्षिपद्भिः कपिभिर्वानरैः आकुलीकृतेन उपद्रुतेन। अमी वानरस्वभावाः, अतएवात्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(न) शुकेति। शुकसारिकाभिः शयनगृहगताभिरिति तात्पर्य्यं, प्रकाशिता जनान्तरसकाशे स्पष्टमुच्चारिताः ये सुरतविश्रम्भालापा रमणकालीनस्वैरवाक्यानुकरणवाक्यानि तैर्लज्जिता अवरोधजना अन्तःपुररमण्यो यत्र तेन।

(प) प्रासादेति। प्रासादानां सोपानेषु समारोहणेन चलितैः स्पन्दितैः, अबलानां चरणेषु अवसक्तैः स्थितैः, मणिमयैः, पदे पदे प्रतिपदक्षेपं रणद्भिः शब्दायमानैः तुलाकोटिवलयैर्नूपुरमण्डलैः "पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियां" इत्यमरः, द्विगुणीकृतं स्वकीयरवैर्वर्द्धितं कूजितरुतं अव्यक्तशब्दो यासां ताभिः, भवनकलहंसमालाभिर्गृहपालितकादम्बश्रेणिभिः धवलितं स्वस्वावस्थानेन शुभ्रीकृतं अङ्गनं चत्वरं यस्य तेन।।

(फ) धृतेति। धृतानि धौतानि रजकपरिष्कृतानि अतएव धवलानि दुकूलोत्तरीयाणि पट्टोत्तरीयवसनानि यैस्तैः। कलधौतदण्डान् स्वर्णयष्टीरवलम्बन्ते धारयन्तीति तैः। पलितेन वार्द्धक्यजनितशुक्लतया पाण्डुराः शुभ्राः मौलयः केशा येषां तैः। आचारमयैरिव शिष्टव्यवहारविकारैरिव सर्वदा तदनुसरणात्तदुप-

---

আনিয়া তাহা ইতস্ততঃ নিক্ষেপ করতঃ অন্তঃপুরটাকে আকুল করিয়া তুলিয়াছিল। (ন) শুক ও সারিকাগণ সম্ভোগসময়ের বিশ্রম্ভালাপ প্রকাশ করিয়া অন্তঃপুরের রমণীদিগকে লজ্জিত করিতেছিল। (প) কতকগুলি বালিহাঁস আসিয়া উঠানখানা সাদা করিয়া ফেলিয়াছিল; এ দিকে রমণীগণ দালানের সিঁড়ী দিয়া উপরে উঠিতেছিল, তখন তাহাদের চরণস্থিত মণিময় নূপুরগুলি চলিতে থাকিয়া প্রত্যেক পদক্ষেপে শব্দ করিতেছিল, সেই শব্দে বালিহাঁসগুলির অব্যক্ত রব দ্বিগুণ করিয়া তুলিয়াছিল। (ফ) কঞ্চুকিগণ (বৃদ্ধব্রাহ্মণগণ) পরিষ্কৃত শ্বেতবর্ণ পট্টবস্ত্রের উত্তরীয় ধারণ করিয়া এবং স্বর্ণযষ্টি গ্রহণ করিয়া সেই অন্তঃপুরে অধিষ্ঠান করিতেছিলেন; তাঁহারা যেন সদাচারময়, বিনয়ময়, মর্য্যাদাময় ও মঙ্গলময় ছিলেন আর তাঁহাদের

---

(१) मणिमयैर्विभूषणैः पदे पदे। (२)···रुताभिः। (३) धवलीकृताजिरेण। (४) क्वचित् धृतपदं नास्ति। (५)...पाकपाण्डुर...। (६) आधारमयैरिव। (७) क्वचिदयं पाठो नास्ति।

(८) सजलजलधर...।